मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी चेतना

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
के
हिन्दी साहित्य विषय
में
पी-एच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

2003

निर्देशक :
डॉ. उषा अग्रवाल
प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
आर्य कन्या महाविद्यालय
झाँसी (उ.प्र.)
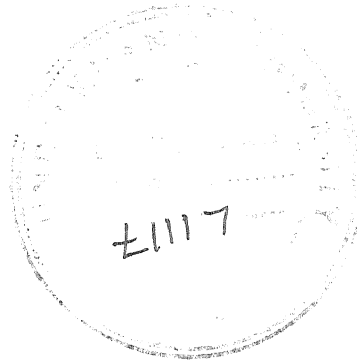
अनुसंधित्सु :
कु. अपर्णा गुप्ता

मार्गदर्शक का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि *कु. अपर्णा गुप्ता* ने पी-एच.डी. (हिन्दी साहित्य) उपाधि हेतु बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के तत्वावधान में *"मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी चेतना"* शीर्षक पर मेरे मार्गदर्शन में आपके पत्रांक बु0वि0/शोध/

दिनांक 4.4.2002 द्वारा पंजीकृत हुये थे । इन्होंने मेरे निर्देशन में ऑर्डीनेन्स-7 द्वारा वांछित अवधि तक कार्य किया है तथा इस अवधि तक विभाग में उपस्थित रहे हैं । मैं इन्हें शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय में प्रस्तुत करने एवं परीक्षण हेतु प्रेषित करने की स्वीकृति/संस्तुति करता हूँ ।

मैं इनकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ ।

(डॉ. उषा अग्रवाल)
प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
आर्य कन्या महाविद्यालय,
झांसी (उ0 प्र0)

घोषणा-पत्र

मैं कु. *अपर्णा गुप्ता* यह घोषित करती हूँ कि पी-एच.डी. (हिन्दी साहित्य) उपाधि हेतु बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के विचारार्थ प्रस्तुत *''मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी चेतना''* शीर्षक पर यह शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक कृति है । शोध प्रबन्ध में दिये गये तथ्य एवं तत्संबंधी सामग्री मेरा अपना स्वयं का मौलिक कार्य है । कृति में उपलब्ध मार्गदर्शन एवं तत्संबंधी सुझावों का उपयोग किया गया है, जिसका यथा स्थान उल्लेख किया गया है । मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, अन्य व्यक्ति द्वारा इस विश्वविद्यालय अथवा अन्य किसी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का अंश नहीं है ।

अनुसंधित्सु

अपर्णा गुप्ता

दिनांक : 17.4.2004 (कु. अपर्णा गुप्ता)

मृदुला गर्ग के कथा-साहित्य में नारी चेतना

अध्याय-प्रथम

मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं शैक्षिणिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ :-

अध्याय-द्वितीय

मृदुला गर्ग का कृतित्व एवं उनका कथा साहित्य संसार :-

अध्याय-तृतीय

अध्याय-चतुर्थ

अध्याय-पंचम

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी के विविध रूप :-

अध्याय-षष्टम्

अध्याय-सप्तम्

(डॉ. ऊषा अग्रवाल)
निर्देशक

(अपर्णा गुप्ता)
शोधार्थिनी

आभाराभिव्यक्ति

सर्वप्रथम मैं "माँ सरस्वती" के प्रति नतमस्तक हूँ जिनके आशीर्वाद से में शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक रूप से इस योग्य हो सकी कि वर्तमान शोधग्रंथ को साकार रूप दे सकूं । शोधग्रंथ को लिखने की प्रेरणा मुझे मेरी माता तुल्य गुरूवर डॉ. उषा अग्रवाल जी से मिली जिनके सहज स्नेह व मार्गदर्शन के कारण मेरा यह कार्य निरंतर अग्रसरित हुआ । उनके पति आदरणीय डॉ. दिनेश चन्द्र अग्रवाल (अध्यक्ष- वाणिज्य संकाय) का भी अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ ।

डॉ. उषा अग्रवाल जी से मुझे शोध संबंधी सामग्री के चयन, विषयवस्तु व लेखन संबंधी जानकारी का आदि से अन्त तक निरन्तर सहयोग एवं प्रोत्साहन मिला एवं मैं उनके सशक्त तथा योग्य मार्गदर्शन के लिये चिरकृतज्ञ रहूंगी । मेरा यह शोधग्रंथ मेरे पिता डॉ. शिवप्रसाद गुप्ता, प्राचार्य शा. पी.जी. कॉलेज, महोबा (उ0 प्र0) एवं माता श्रीमती कृष्णा गुप्ता जी को श्रद्धावनत् समर्पित है।

वर्तमान शोध कार्य को प्रारंभ करने की प्रेरणा मुझे मेरे भाई प्रशांत गुप्ता, इंजीनियर (आई.ई.एस.), गाजियावाद तथा डॉ. रामहर्षण, पत्राचार अधिकारी इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से प्राप्त हुई जिसे मैं निरन्तर प्रयासों से शोधग्रंथ के रूप में प्रस्तुत कर सकी हूँ ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पुस्तकाकार देने में कुलपति डॉ. रमेशचन्द्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, कुलसचिव श्री व्ही. के. सिन्हा तथा निरन्तर नवीन तथ्यों से अवगत कराने हेतु पुस्तकालयाध्यक्ष श्री एम. टी. एम. खान की भी कृतज्ञ हूँ । मैं इस हेतु उनकी निश्चयी प्रवृत्ति से कभी भी उऋणी नहीं हो पाऊंगी । शोध कार्य को चरमसीमा तक लाने में मेरी स्नेहमयी बहिन

कु. दीपाली गुप्ता एवं प्रतिमा गुप्ता की भूमिका भी सराहनीय है । जिसके परिणाम स्वरूप यह शोध कार्य पूर्ण हो सका ।

डॉ. रामगोपाल गुप्ता, अध्यक्ष बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी की क्षण-क्षण में सफल भागीदारी मेरे इस कठिन व दुरूह राह को सहज करती रही, जिससे मैं अपना कार्य आसानी से पूरा कर सकी । मैं इस हेतु उनकी अनन्त कृतज्ञ हूँ ।

अन्त में मैं उन सभी व्यक्तियों के प्रति भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कार्य के प्रति प्रेरणा प्रदान कर सहयोग प्रदान किया जिसके फलस्वरूप मैं इस महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने में समर्थ हो सकी ।

दिनांक : 17.4.2004

अनुसंधित्सु

अपर्णा गुप्ता

(कु. अपर्णा गुप्ता)

अध्याय प्रथम

मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ

अध्याय प्रथम

मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं शैक्षणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

(अ) मृदुला गर्ग का जीवन परिचय-पारिवारिक, शैक्षणिक दीक्षा का परिवेश-

मृदुला गर्ग का जीवन यथार्थ परख है । वे परिवार एवं समाज से जुड़ी एक क्रियाशील महिला हैं जो सहयोगी भावना से ओतप्रोत हैं । महिलाओं के अंतरंग और सामाजिक पहलूओं से समाज को एक नयी दिशा देने वाली इस महिला कथाकार मृदुला गर्ग का जन्म कलकत्ता में वर्ष 1938 में हुआ। कथाकारिता के शिल्पज्ञ से ऐसा ज्ञात होता है कि मृदुला जी की गहरी व अध्ययनशील प्रवृत्ति के कारण ही उनके कथा साहित्य के पात्रों की परख काफी श्रेष्ठ है जो हमारे समाज को गहराइयों से छूते हैं । व्यक्ति दर व्यक्ति की सोच पृथक होती है । उसका चिंतन परिवर्तनशील होता है। यह परिवर्तन विचारों का ताना बाना है इस ताने बाने में कहीं न कहीं कोई कथा अवश्य रही, जिसके कारण मृदुला जी को उनका कथा साहित्य नारी जीवन का सहज स्वाभाविक दर्पण है, जो यथार्थ परख है । महिला कथा साहित्य में स्थान दिया गया है ।

मृदुला जी का प्रारम्भिक शिक्षण तो कलकत्ता में ही हुआ जबकि स्नातक व स्नातकोत्तर परीक्षा एम.ए. (अर्थशास्त्र) में 1960 दिल्ली विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की । किशोरावस्था से ही उन पर रविन्द्र साहित्य का प्रभाव होने से उनके कथासाहित्य में बंगाली साहित्य समाज का प्रभाव भी देखने को मिलता है । बचपन से ही वह पढ़ने व लिखने का शौक रखती थीं, उनकी रूचि के अनुरूप ही उन्होंने लेखन को अपना माध्यम चुना । प्रथम कहानी 1970-71 में प्रकाशित हुयी जबकि प्रथम उपन्यास 1975 में प्रकाशित हुआ ।

मृदुला जी का लेखन नियमित रूप से वर्ष 1975 में ही प्रारंभ हुआ। देखा जाये तो उनकी कथाओं में, पूर्वांचल, बंगला नाम और ग्रामीण अंचलों की कम पढ़ी-लिखी महिलाओं और पुरूषों के पात्र नाम देखने को मिलते हैं । इसी प्रकार कई उपन्यासों में उन्होंने समाज के ठेकेदारों के रूप में धनाढ़य परिवारों के जीवन दर्शन को बखूबी पाठकों तक पहुँचाया है । इसी कारण उनके मौलिक कथ्य एवं निर्भीक अभिव्यक्ति के कारण उनका लेखन कभी-कभी चर्चा और कभी विवाद का केन्द्र बिन्दु बना रहा । समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाओं में

अग्रणी मृदुला गर्ग अपने विचारोत्तेजक निबंधों के लिये भी विख्यात रही है । निबन्ध का आलोच्य पक्ष सशक्त निर्भीक भाषा से गढ़ा गया है । कई कहानी संग्रहों के अतिरिक्त पर्यावरण सामाजिक संदर्भों व स्त्री विमर्श पर भी लेखस्तंभ आदि का नियमित लेखन अनवरत् चल रहा है ।

मृदुला जी ने अपने लेखन के दौरान शैक्षणिक संस्थाओं भारत, अमेरिका व यूरोप के कई विश्वविद्यालयों में भी इन्हीं विषयों पर अपने व्याख्यान भी दिये हैं । इन व्याख्यान में भारतीय संस्कृति परम्परा के साथ हो रहे परिवर्तन को भी नयी खोज के साथ प्रस्तुत किया । जीवन जीना महत्वपूर्ण है, यह बात सहज इन व्याख्यानों में कह डाली है ।

मृदुला जी का लेखन हिन्दी के अतिरिक्त बंगला व अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुआ है । मृदुला जी की कृतियों का अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है।

मृदुला जी के कथा लेखन में उनकी माता जी के अनुभवों और विचारों का प्रभाव देखने को मिलता है । उनके विचार सदैव मृदुला जी को शाश्वत विकास की ओर ले जाने में सक्षम रहे हें मृदुला जी के कथाओं में ऐसे मौलिक विचार हमें अपनी ओर बरबस ही खींच लेते हैं ।

मृदुला जी का कथा साहित्य समकालीन होते हुये भी हमें विगत संघटनाओं और परिस्थितियों के प्रति बरबस ही ध्यान आकर्षित करता है । मृदुला जी ने इन्हीं परिस्थितियों को समाज की अनुकूलतानुसार बनाकर हमें पढ़ने को मजबूर बना दिया है। कथा साहित्य के प्रारंभिक लेखन में मृदुला जी को इतनी प्रसिद्धि नहीं मिल पायी थी। परन्तु "उसके हिस्से की धूप" से समकालीन कथासाहित्य का एक नया और सशक्त स्वर बन गयी क्योंकि 'कितनी कैदे' व 'रूकावट' उनके वर्ष 1970 में प्रारंभिक लेखन के उदाहरण रूप थे । जीवन का जागरूक सत्य पहिचाने की प्रक्रिया ही उनका उद्देश्य रहा । उनके कहानी संग्रह वर्तमान व्यवस्थाओं के प्रति हमारी जिम्मेदारियों की गहराई है तथा हमारे आस-पास होने वाली समस्याओं के प्रति ये सजग रहने को भी हमें बतलाती है । समाज नारी पुरूषों के एक समूह का ही नाम है जहाँ उनके संबंध व्यवहारिक पक्ष की दावेदारी भी है । जिसमें प्रत्येक चिंतन वाले लोग हमें मिलते हैं उनके चिंतन को समझकर हमारे अनुरूप सोच तैयार करना एक कठिन तथ्य होता है लेकिन फिर भी संघर्ष के जरिये हम इसे सोचने को मजबूर तो कर ही देते हैं । मृदुला जी के कथासाहित्य पर उनके परिवार के सहयोग

व सहकारिता की अमिट छाप भी मिलती है क्योंकि कई उपन्यासों में उन्होंने पारिवारिक सदस्यों के संबंधों को भी नयी दिशाएं प्रदान की है । जो परम्परा से हटकर है भी और नहीं भी यही कारण है कि कथा साहित्य में एक बड़ी गहराई इन्हीं कारणों से भर गयी है । तथा उसमें परिवर्तन का स्वरूप भी नया है । जो कि विगत वर्षो के साहित्य में देखने को नहीं मिल रही थी । जीवन एक जीने का व्यवहारिक पक्ष है, जो परम्परागत भी है ।

(ब) सामाजिक परिवेश :-

समाज के चारो ओर का पर्यावरण ही हमारे जीवन का परिवेश होता है । सामाजिक परिवेश हमारे जीवन का दर्पण है और इसी परिवेश में हमारा लालन-पालन होता है । जितना भी हम जीवन जीते हैं वह सामाजिक परिवेश की ही देन होता है । मृदुला जी ने अपनी कहानियों में इसका बखूबी वर्णन भी किया है । ऐसा प्रतीत होता है कि मृदुला जी के व्यक्तिगत सामाजिक परिवेश का कथानकों के सामाजिक परिवेश से कुछ न कुछ या कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य है । क्योंकि परिवेश का प्रस्तुतिकरण बहुत ही सहज और मानवीय संवेदनाओं को लिये हुये है जो कि जीवंत सा प्रतीत होता है ।

मृदुला जी उपन्यासों में स्वतंत्रता के विचारों के साथ-साथ धार्मिक स्वतंत्रता और राजनैतिक स्वतंत्रता पर भी बल दिया है । हमारे जीवन के इन तीनों की स्वतंत्रताओं का बड़ा विशेष महत्व है । परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों का व्यक्ति के जीवन परिवेश पर भी इसका प्रभाव पड़ता है । समाज के आवरण के अन्दर ही हम रहते हैं, भला इसके प्रभावों से हम कैसे बच सकते हैं । परिवेश कैसा भी क्यों न हो, चाहे बुरा हो या भला हो, यह कहीं न कहीं हमें प्रभावित अवश्य करता है । चाहे वह परोक्ष रूप से करें अथवा प्रत्यक्ष रूप से । जीवन जीने की लालसा में विश्वास है यही उनकी मूल कथा का उद्देश्य भी है ।

सामयिक मूल्यों और परिवेश का प्रभाव हमारे जीवन पर अवश्य पड़ता ही है। यह हमारी सभ्यता को भी प्रभावित करते हैं। मृदुला जी ने अपने सामाजिक परिवेश को अपनी उपन्यासों में यत्रतत्र बखूबी वर्णित किया है जो हमारी मानवीय कथाओं के लिये अनिवार्य भी है । हमारे जीवन मूल्य अक्षरश: समाज के लिये मार्गदर्शन का कार्य भी करते हैं और यदि हम समाज के लिये थोड़ा बहुत भी कुछ करते हैं तो वह हमारी नयी पीड़ी के लिये शिक्षक के रूप में उद्घृत होता है।

सृजन प्रक्रिया मानवीयता की आधारभूत प्रक्रिया है इसके माध्यम से हम अपनी पीड़ी की परिकल्पना भी कर सकते हैं, तथा पुरानी पीढ़ी की सोच को भी समझ सकते हैं । जिस प्रकार हम अपने परिवार के सदस्यों के लिये उनके विकास या वृद्धि के लिये चिंतित रहते हैं उसी प्रकार से हमारा समाज या समाजशास्त्री भी अपने परिवार रूपी समाज व उसकी व्यवस्था के लिये दृढ़ संकल्पित होते हैं । इसी कारण से हम अपने बच्चों में अच्छे संस्कारों के हिमायती रहते हैं । यही सृजन प्रक्रिया हमारे ऊपर काफी प्रभाव डालती है और समाज की प्रक्रिया में भी अंत:करण तक प्रभाव डालती है । मृदुला जी के कथा साहित्य की विशेषता भी यही है कि उन्होंने कथानकों या पात्रों के माध्यम से हमें उन स्थितियों या परिस्थितियों का बोध कराया है जो हमारे विकास के लिये और समाज के लिये आवश्यक भी है । मनुष्य समाज में रहकर समाज की सोचे ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है, आज का युग केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि तक ही सिमट कर रह गया है । इस विषय पर उनके विचारों में एकांकी परिवर्तन को स्वीकार किया गया । सृजन प्रक्रिया में अन्त:प्रेरणा के किसी दिव्य मानवोपरिआधार का निषेध कर हम नि:संदेह साहित्य या

मानव चिन्तन को एक मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित करने का औचित्य सिद्ध करते हैं । यदाकदा कहीं-कहीं हमें केवल हमारी मीमांसा ही काम में लानी पड़ती है और जब-जब हम कोई तथ्य सत्य के साथ सोचने की बात हो तो हमारी कठिनाईयाँ भी हमारे समक्ष स्वत: आ जाती है ।

मृदुला जी का साहित्य समाज की धूरी है और वह इसी धूरी पर बराबर गति में घूमता रहता है चाहे वह कोई भी परिस्थिति क्यों न हो । मनुष्य पर पड़ने वाले प्रत्येक प्रभावों को वह अपने जीवन रूपी मन की पुस्तक में मुद्रित कर लेता है जहाँ आवश्यकतानुसार उन्हें समाज के समक्ष रख देता है । मृदुला जी के कथा पात्रों को देखकर ऐसा ही लगता है कि रचनाकार ने इन सभी को काफी नज़दीकी से देखा समझा होगा अथवा रचनाकार उन परिस्थितियों से गुजरा अवश्य होगा क्योंकि रचनाकार के ऊपर घटित घटनाओं और उसके जीवन मूल्यों की छाप भी हमें उसके प्रतिपादन पर देखने को मिलती है । आज हम अपने चारो ओर जो कुछ भी देखते हैं वह सभी हमारी परिकल्पनाओं के सटीक बैठता है और उसमें काफी नज़दीक रहता है । मृदुला जी ने अपनी मानवीय छवि से मानवीय चेतना और मानवीय पक्ष को

अत्यन्त प्रबल कर दिया है जिसमें उपन्यासों से एक नयी प्रेरणा देखने को मिलती है । पात्रों से सजीयता व आत्मबोध का ज्ञान हमें होता है । यही कारण है कि ''चित्तकोबरा'', ''शहर के नाम'', ''अनित्य'' और ''उर्फ सैम'' जैसे कई उपन्यास हमारे गहन में आज भी जीवन्त रह जाते हैं और जीवन्त भी है ।

मनोविश्लेषण प्रधान उपन्यासों में कई स्थलों पर मानवीय व सामाजिक दृष्टि एक-दम उभर कर सामने आती है और ऐसे स्थलों पर मानवीय पक्ष सजीव हो उठता है और उसकी एकरूपता टूट जाती है ।[1] जीवन चक्र के इसी खेल में हम हमारी मानवीय वेदनाओं को भी भूल जाते हैं और समाज कार्यकलापों में मग्न हो जाते है ।

मृदुला जी ने नारी के जीवन चित्रण को मानवीय पक्ष रखकर ही प्रस्तुत किया है । देवस्वरूप उन्हें रास नहीं आया, क्योंकि देवगुण मात्र अच्छाई के ही होते हैं । यही कारण है कि उनके उपन्यासों में यथार्थ की परिधि में सजीवता व सटीकता देखने को मिलती है । हमारे समाज के सिद्धांत मानव विपत्ति या

---

(1) डॉ. धर्मवीर भारती, ''मानव मूल्य और साहित्य'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1990, पृष्ठ संख्या : 115, 116

अपेक्षाओं को पूर्ण निर्धारित ही मानते हैं । वे मनुष्य से विकल्प की स्वतंत्रता और संकल्प की गरिमा तक छीन लेते हैं जिससे वे आगे बढ़ने या कुछ अभिनव सोचने की अपनी क्षमता ही खो देते हैं । मृदुला जी के उपन्यासों में नारियों के सोचविचार अथवा जीवन के छंदवृंद को बहुत ही सटिकता से कल्पित किया है । शोधार्थिनी का मत है कि इस समाज को थोड़ा बहुत दूर रहकर सोचा जा सकता है परन्तु यदि हम यह कहे कि समाज में रहकर हम उसे मान लेते हैं तो यह शायद कठिन ही होगा क्योंकि क्षण भर में समाज के रीति-रिवाज सांस्कृतिक परम्परा और भावनायें परिवर्तित होती जाती है । अत: ऐसा मानना अथवा कहना कि सामाजिक व्यवस्था हमारे सदैव ही अनुकूल होगी कठिनता से ही कहा जा सकता है ।

पुन: प्रश्न है कि जीवन मूल्य की नैतिकता का जो कि मृदुला जी के उपन्यासों में अवश्य ही दिखायी देते हैं यह ग्रामीण अंचल की महिलाओं में उन्होंने काफी रीतिपूर्वक प्रस्तुतीकरण दिया है । ऐसा प्रतीत होता है मानों यह वहीं रहकर, ठहरकर मृदुला जी ने लिखा है । नैतिकता सदैव मौलिकता का परिचय

देती है ।[1] लेकिन सदैव मौलिकता सही हो यह नहीं माना जा सकता है क्योंकि हमारी महत्वाकांक्षायें भी पूरी करने की आवश्यकता रहती है इसीलिये मनुष्य को इस पर भी विचार करना ही होता है । महत्वाकांक्षाओं के बिना हमारा जीवन आगे बढ़ने की स्थिति में नहीं रह सकता है । शायद यही सत्य है ।

(स) धार्मिक परिवेश :-

मृदुला जी ने धार्मिक बौद्ध दर्शन को अपने उपन्यासों में परिलक्षित किया है, वे यह जानती है कि हमारी सामाजिक अर्थव्यवस्था धार्मिक दर्शन पर ही निर्भर करती है और अधिकांश सीमा तक हम धर्म को ही अपना सर्वस्व मानते हैं । भौतिकवादी इस युग में भी एक नारी धर्म को भी अपना निदेशक मानती है । भारतीय संस्कृति की परिधि की सीमा रेखा अधिक विस्तृत होने के कारण हम उस पर विजय हांसिल नहीं कर सकते हैं क्योंकि कई ऐसे पहलू हैं जो हमें ज्ञात ही नहीं है और हम उससे अनभिज्ञ है । मृदुला जी ने उपन्यासों में धार्मिक पहलूओं को भी समाविष्ट किया है और धार्मिक पहलू किसी न किसी रूप में

---

(1) डॉ. धर्मवीर भारती, ''मानव मूल्य और साहित्य'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 1990, पृष्ठ संख्या : 7

भारतीय नारी को प्रभावित करते रहे हैं । हिन्दू धर्म आस्था विश्वास की परत की तरह जमा हुआ है । जहाँ देखा अनदेखा बराबर सा है । हमारा समाज भी उन्हीं धर्मान्धता को आडे रखकर समाज का खूब शोषण व अत्याचार करता रहा है ।

समाज में धार्मिक जीवन दर्शन और उसके जीवन सन्दर्भो का प्रभाव हमारे जीवन पर किंचित मात्र तो पड़ता ही है। इसे भले ही हम एक संयोग माने लेकिन ऐसा होना स्वाभाविक भी है। क्योंकि प्रत्येक परिकल्पना हमारा संयोग भी हो सकता है ।[1]

धार्मिक चिन्तन हमारी पृष्ठभूमि ही कहीं जा सकती है क्योंकि धर्म के साथ-साथ आर्थिक पहलू भी हमें प्रभावित करता है । यदि मानव का अर्थतंत्र ही गड़बड़ हो तो धर्म के बारे में हम कोई विचार या चिन्तन ही नहीं कर सकते हैं । भूखा पेट रहकर भगवान का भी भजन नहीं हो सकता है । मृदुला जी ने यही बात अपनी कहानियों में भी बतायी है । शायद धर्म का यही परिकल्प हमें खोखला भी नजर आता है क्योंकि धर्म की परिधि उस समय सीमट कर छोटी हो जाती है जिससे हम पूरी तरह से वाकिफ

---

(1) डॉ. गुप्ता : रामकृष्ण - "नारी जीवनदर्शन और जीवन मूल्य" शोधयात्रा वर्ष 2000, पृष्ठ 21

नहीं हो पाते । जब भी हम देखते है कि हमें धर्म से कुछ सीखना चाहिये तो यह सदैव संकुचित ही लगता है ।

मृदुला जी की कहानियों में विशेषकर ग्रामीण अंचल से सम्बन्धित कहानियों में यह सुनने और देखने को मिलता है । हमें निरीक्षण और परीक्षण से भी कुछ सीखने को मिलता है, और भी सूक्ष्म-निरीक्षण से यह आभास भी मिलता है कि समाजवाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषण, नवकैथोलिक चिंतन, अरबिन्द दर्शन और सर्वोदय जैसे घोर विरोधी धाराओं से प्रभावित जो उच्च कोटि का साहित्य लिखा गया उसमें साम्प्रदायिक संकीर्णताओं का सचेष्ट व अज्ञात रूपेण बहिष्कार मिलता है ।[1] कभी-कभी कुछ साम्यवादी भी धर्म की बातें किया करते हैं और धर्मावलम्बी होना एक पृथक बात है और धर्म के कार्य करके समाजवादी होना एक अलग बात है । हमारी भावनायें भी सदैव हमारे पक्ष में तभी रहती हैं जब हम किसी तटस्थ और सटीक आधार पर विराजमान रहे, अन्यथा उसका आधार कुछ नहीं रहता । हमारा जीवन हमारे ही अद्यतन पाठों पर निर्भर करता है जिसका प्रभाव निरन्तर हमारे जीवन पर पड़ता है ।

---

(1) डॉ. धर्मवीर भारती, ''मानव मूल्य और साहित्य''-''नयी मर्यादा का उदय'' अध्याय से उद्धृत पृष्ठ : 64 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वर्ष : 1990

उद्देश्यपरक समाजवाद सदैव धर्मवाद पर ही स्थित रहता है और इसका पहलू हमारे पक्ष पर ही निर्भर करता है । आन्तरिक मूल्यगत चेतना हमारे मूल्यपरक चेतनाओं की पूरक भी होती है । अर्न्तविरोध कितना ही क्यों न हो हमें सदैव तटस्थ रहना चाहिये । यही वास्तव में जीवन का कटुसत्य भी है ।

आन्तरिक विकास हेतु आन्तरिक प्रेरणा होनी चाहिए । प्रगति की मर्यादा मानव के अन्तर में ही आरोपित रहती है ।(1) मनुष्य तभी प्रगति करता है जब उसके अन्तर में प्रगति की नैतिक प्रेरणा हो । हमारी उन्नति की मूल प्रेरणा मानववादी आग्रह ही हो सकता है । कोई भी असमाजवादी परिकल्पना हमारे विकास में बाधक ही हो सकती है, साधक नहीं । हमारी विकास यात्रा की जड़े मानवतावादी रही हैं जो सत्य को अजेय समझती रही ।

धार्मिक सहिष्णुता के साथ-साथ धर्म में आस्था होना एक पृथक बात है । यदि हम यह कहें कि हमें धर्म के प्रति अगाध प्रेम है और हम सभी एक धर्म में विश्वास रखते हैं तो यह अपनी-अपनी सोच है क्योंकि हमारे जीवन का सारा का सारा वृतांत ही निराला है और आपस में एक-दूसरे पर भी निर्भर है ।

---

(1) डॉ. धर्मवीर भारती, ''मानव मूल्य और साहित्य''-''नयी मर्यादा का उदय'' अध्याय से उद्घृत पृष्ठ : 69 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वर्ष : 1990

मनुष्य चाहकर भी ऐसा नहीं कह सकता है कि हमारी एक पृथक सोच है क्योंकि सारा का सारा जीवन हमारे सामाजिक धरातल पर ही टिका होता है । इसी प्रकार से हम एक धार्मिक कार्यक्रम के जरिये सामाजिक कथनों में भी बंधे रहते हैं । धर्मावलम्बी होना एक पृथक तथ्य है तथा धर्म के अनुसार कार्य करना और अपनी कर्तव्यता को पूरा करना एक दूसरी बात है । धर्म के अनुसार सामाजिक परम्परा के अनुसार भी हम अपने साधू व संतों का आदर करते हैं तथा उनको सम्मान देते हैं जिस तरह से हमारे पूजनीयों व बुर्जुगों को हम सम्मान प्रदान करते हैं उसी प्रकार से हम अपने धर्मो के पालकों व गुरूओं की भी आज्ञा मानते हैं, उनका सम्मान करते हैं ।

''जानकी अम्मा ने उग्र स्वर में बाधा दी,'' नहीं, हमें जाना ही होगा । संत महाराज जी ने स्वयं बुलाया है । जानते हो कितना बड़ा सम्मान दिया है तुम्हें ।[1] संतो की वाणी या उनके आदेश के विपरित जाने की हमारी परम्परा ही नहीं है । हम सदैव उनका कहा मानते हैं उनको आदर देते हैं ।

---

(1) गर्ग, मृदुला, 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या : 34, वर्ष : 1995

"अब वे स्वयं तुम्हारे द्वार पर आकर तुम्हें पुकार रहे हैं, फिर भी तुम नहीं जाओगे? इतना अपमान ! किन्तु भगवान का अपमान मैं तुम्हें नहीं करने दूंगा । उनके रूष्ट होने पर कौन जाने क्या हो ।" बाद में वे बोले कि तुम्हारी ईच्छा हो तो चलेंगे।[1]

धर्म में आस्था रखते हुये भी हमारे संस्कारी पुरूष भी कभी-कभी गलती कर बैठते हैं । सामाजिक प्राणी रहते हुये भी समाज की रीति-रिवाजों और धर्म की बातों को वे कभी-कभी हँसी में भी उड़ा देते हैं । हिन्दू देवी देवताओं की पूजा करना और अन्य किसी धर्म के मनुजों की पूजना करना अथवा उनकी आराधना करना भी हमारे बुर्जुगों ने हमें सिखाया है और हम उनकी इसी धारणा पर चल रहे हैं । क्योंकि यही मनुज को देवतुल्य है जिसमें देवत्व है ।

हम चाहते हैं कि हमारी सामाजिक व्यवस्था के तहत उनकी बातें स्वीकार करें और उन्हें माने, उनका आदर करें । हम धर्मान्ध रहकर भी अपनी राजनैतिक व आर्थिक बातों को अंगीकार कर सकते हैं । आर्थिक तथ्य बहुधा राजनैतिक

---

(1) गर्ग, मृदुला, 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या : 45, वर्ष : 1995

पहलूओं पर भी निर्भर करते हैं । धर्मावलंबी होकर हम अपनी आर्थिक बातों को पूरा करते ही हैं, चाहे उसके लिए हमें कोई भी राजनैतिक कदम उठाना ही क्यों न पड़े क्योंकि यह हमारी सामाजिक व वैयक्तिक जिम्मेदारी भी है ।

''मुआ सूखा शीत क्या गज़ब का पड़ रहा है'', रामदीन ने रपटे पर दीया जलाकर रखते हुए कहा । ''तुम्हें तो सूखा हो चाहे बरखा तीज हो चाहे त्यौहार कोसने ही देन है, ''बलिया ने फौरन टोका'' ।[1]

(द) आर्थिक एवं राजनैतिक परिवेश :-

मृदुला जी के उपन्यासों में आर्थिक एवं राजनैतिक चिन्तन काफी वृहत् है और उनकी पीड़ा काफी गहरी प्रतीत होती है । हमारा मन काफी चंचल है, वह कभी सामाजिक बुराई पर चलता है तो कभी आर्थिक चिन्तन की प्रक्रिया पर अपनी विवशता जाहिर करता है । मृदुला जी ने अपनी छोटी-छोटी कहानियों में मिलो व कारखानों की मजदूरी और खेतिहर किसानों की मजबूरी को काफी अधिक पास से परखा है और उसी के

(1) गर्ग, मृदुला, 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', नेशनल पब्लिसिंग प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या : 14-15, वर्ष : 1995

चलते उन्होंने कभी उपन्यासों की पृष्ठभूमि भी उसी अनुरूप लिखी है ।

"नौकरी मिल रही होती तो कोई ताकत गांव वालों को कारखाने के खिलाफ न जाने देती पर अभी जो हालत हैं उनमें कारखाना बंद करवाने की हवा बनायी जा सकती थी । इससे पहले कि बाहर से झोले वाला आकर गांव वालों को उकसाये कि वे कारखाने में नौकरी पाने के लिए मोर्चा लगाये, मीटिंग बुलाए मामला फिट कर लेना चाहिये ।"(1)

आज के दौर में मिलों में हड़ताल और धरनों की बात सुनना तो आम बात जैसा नहीं रहा है क्योंकि दलाल या कोई मिल मालिकों का दरोगा बीच में पड़कर कोई सौदा तैयार करवा देता है जिसमें मिल मजदूर भी खुश हो जाते हैं और मालिकों को भी नुकसान नहीं उठाना पड़ता है । घंटो मीटिंग या निर्णय देने की बजाय एक-एक कदम पीछे हटने और आगे बढ़ने की प्रक्रिया के लिए भी हम तैयार रहते हैं । उस क्षेत्र में मिल मालिकों के दलाल भी कार्यरत् रहते हैं ।

---

(1) गर्ग मृदुला, "मेरे देश की मिट्टी अहा", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 2000, पृष्ठ संख्या : 16

सरकार व सरकार की और से ओहदे वाले लोग राजनीतिक चाले चलकर हमें और कर्मचारियों को गुमराह करने की कोशिश करते हैं । "घंटों मीटिंग चलने के बाद गांव के मर्द इस नतीजे पर पहुंचे कि एम.एल.ए. के मार्फत सरकार को अर्जी की जाये कि वह मुसलमानों पर जुल्म न करे और कारखाना खेड़ी गांव से दूर ले जाये ।"(1)

कारखानों व मिलों में जातिगत राजनीति और साथ-साथ धर्म पर वार करने वाली बातों से भी हम इंकार नहीं कर सकते क्योंकि आज कई कारखानों में इस प्रकार के गुट सक्रिय है जो यह कार्य करते चले आ रहे है । सरकारी तंत्रों में भी यह कार्यवाही सक्रियता से चल रही है । धर्म के नाम पर विवाद का ख्याल आते ही व्यक्ति डर सा जाता है ।

"यह प्रस्ताव सुनकर कि मुसलमानों पर हो रहे जुल्मों को हम कम करें । इस वास्ते कारखाना खेड़ी गांव से दूर ले जाये........ अजनबी इतनी जोर से हंसा कि लोगों को महाभारत का बब्रूवाहन याद आ गया ।"(2)

---

(1) गर्ग मृदुला, "मेरे देश की मिट्टी अहा", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 2000, पृष्ठ संख्या : 11-12

(2) गर्ग मृदुला, "मेरे देश की मिट्टी अहा", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 2000, पृष्ठ संख्या : 12

किसी भी तरह के राजनैतिक व आर्थिक प्रस्ताव पास हो जाते है, जो कि आनन-फानन से निर्णीत होने से बाद की परिस्थितियों से बेखबर रहकर हमें कठिनाई उत्पन्न कर देते हैं । "इस पर कुछ लोगों का कहना भी रहता है कि खुशकिस्मती है कि हमें और इंसान को थोड़ी बहुत अकल हमें खुदा ने बख्शी है ।"[1] यही कारण है कि हम आज कुछ भी सोच सकते हैं और उसी के अनुरूप कार्य करते हैं ।

दैनिक जीवन की सक्रियता के बावजूद भी कई ऐसे पहलू होते हैं जो हमारे जीवन पर प्रभाव अवश्य डालते हैं । यही कारण है कि आज के आर्थिक दौर में हम सामाजिक रहते हुए भी कई कारणों से राजनैतिक महत्व को भी बढ़ावा दे डालते हैं । इस खेल में हम अपने और परायों में कोई फर्क ही नहीं करते क्योंकि हमें अपने स्वार्थ को पूरा करना होता है । परिवार का कोई सदस्य यदि राजनैतिक जीवन व्यतीत कर रहा है तो उसका ध्येय परिवार के प्रति कुछ भी नही होता है । हम यदि चाहे भी तो वह उसके कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायी नहीं होता क्योंकि उसने अपने जीवन का उद्देश्य कुछ और ही कारण कर

(1) गर्ग मृदुला, "मेरे देश की मिट्टी अहा", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 2000, पृष्ठ संख्या : 12

लिया है । पंछी की भांति ऐसे लोगों का जीवन यायावर की तरह ही होता है । "प्रवासी पंछी सैर करते जाने कहां से कहां निकल जाया करते हैं । महीनों गुजर जाते पर वे लौट कर आते जरूर । भ्रमण चाहे जितना करें, लौटकर जरूर आता है । यायावर की यही सिफत होती है, वे कहते, वह सन्यासी नहीं होता ।"[1]

हम अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कई आवाम के धैर्य को भी तोड़ने से नहीं चूकते हैं चाहे इसके लिए हमें कुछ भी क्यों न करना पड़े । राजनीति में सब कुछ जायज होता है ऐसा कहा जाता है । कोई परिवार मां-बाप भाई-बहिन कोई रिश्ता इसे हमें जोड़ने नहीं देता ।

मृदुला जी ने सदैव उपन्यासों के कथ्य के माध्यम से हमें ऐसा ही संदेश देने का प्रयत्न किया है, कारखानों-मिलों में होने वाली राजनीति को उन्होंने इन प्रकरणों के जरिये हमारी सोच तक पहुंचाने की कोशिश की है । शायद ही ऐसा मुद्दा हो जो उनको लेखनी ही गिरफ्त से बचा रहा है क्योंकि सामाजिक और

(1) गर्ग मृदुला, "मेरे देश की मिट्टी अहा", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 2000, पृष्ठ संख्या : 90

आर्थिक समस्या को एक-एक सच्चाई को उन्होंने बखूबी अंजाम दिया है । अपने उपन्यासों 'अनित्य', 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी' आदि में भी उन्होंने हमें यही संदेश दिया है कि कर्तव्यों के सामने हमारे पास कोई कितना ही बड़ा तथ्य क्यों न हो व सदैव छोटा ही रहता है परन्तु कहीं न कहीं ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जिससे हम अपने सामने रख नहीं पाते, इसके लिए हमें कोई भी समझौता या सौदा करना पड़े ।

सामाजिक अर्थव्यवस्था इतनी विकसित हो चुकी है कि इससे कई श्रृंखलाएं अपने आप ही निकल पड़े हैं यही कारण है कि आज कई ऐसे कारण उत्पन्न हो गये हैं जिसे हमें परंपरा या व्यवस्था का रूप देकर सोचना ही पड़ता है । हमारे कहने से या करने से कुछ नहीं होता समाज का कोई प्रमुख या जनता की आवाज जो हो वही असली या सच माना जाता है । समाज की व्यवस्था भी राजनैतिक ही होती है जिस वर्ग का पलड़ा भारी रहता है वह अपनी बात राजनैतिक रंग में चढ़ाकर हमारे सामने प्रस्तुत करता है, उस बात को मनवाने की प्रक्रिया अपनाता है । जिसे हमें मानना ही पड़ता है । हमारी सोच कुंद होकर रह जाती है इसे हम सही जानकर ही चलते हैं ।

विडंबना यह है कि सही हालत में कार्य करने के बावजूद भी हम इस पुरूष प्रधान समाज को ही सही मानते हैं जब कि इसकी वास्तविक रूप से आधारशिला नारी प्रधानता वाले बिन्दुओं पर ही टिकी हुई है । नारी से पुरूष कभी अलग रह ही नहीं सकता । आज की आधुनिकता में समाज या समाज का एक वर्ग यह अवश्य कहता है कि स्त्री का सम्मान होना चाहिये अथवा नारी की सोच आज हमारे लिए मद्दगार साबित हो रही है, व-व तो यह इस बात का द्योतक है कि नारी के प्रयत्नों से यह सोचने पर मजबूर हो गये हैं कि उनके विचार क्या हैं, हम उनके लिए क्या कर सकते हैं । नारी ने हर पल हर बदलाव को स्वीकार किया है स्वीकृति दी है, भले ही उसे वह सब कुछ अच्छा नहीं लग रहा है ।

हमारे जीवन का बड़ा उद्देश्य ही नहीं रहता वह छोटे-छोटे उद्देश्यों पर भी निर्भर करता है । बड़ा उद्देश्य हाथ से छूट जाये तो व्यक्ति छोटे उद्देश्य को ही अपना जीवन सौंप देता है । वह अपनी सार्थकता के चलते रह-रहकर समझौते करता है और उसका व्यक्तित्व गिनता चला जाता है ।

परिवर्तनशील समाज में रहकर भी इतिहास को झुठला नहीं सकते और न ही उसको न कर सकते हैं । मृदुला जी के 'अनित्य' नामक उपन्यास में अन्याय की प्रतिक्रिया में उठते क्रोध को, वापस निगलना सफल होने का लक्षण माना गया है। अंग्रेजी हुकूमत के चलते हम अपने सामाजिक तर्क के आधार पर ही उसे उखाड़ फैंकने को कृत-संकल्पित है । निरंतरता से उठते प्रश्नों का हमने जबाव देना भी सीख लिया है ।[1]

मृदुला गर्ग जी ने गांधी विचार को गांधीवादी दर्शन में देखा और उस चिंतन को बड़ी कारगर दृष्टि से प्रतिपादित किया है । मृदुला जी ने यह कहा है कि समझौतावादी नीतियों का जनसाधारण के मानस. पर दीर्घकालीन रूप से यह प्रभाव भी हमारे ऊपर पड़ता रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे यहां अवसरवादी राजनीति के भी समान अवसर दिखाई दिये । चूंकि गांधीवादी दर्शन में गरीब, सर्वहारा वर्गो के लिए गहरी व्यथा और संवेदना प्रतीत होती है । उसी प्रकार की मनोवृत्ति हमें अब की राजनीति में नहीं दिखायी देती। कहीं वर्ग भेद है तो कहीं गरीबों की दुहाई तो कभी आंदोलन या धरनों के प्रकार, वर्तमान में इस प्रकार के दर्शन तो काफी चित्रित होते रहे हैं ।

---

(1) गर्ग मृदुला, "अनित्य", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998, पृष्ठ संख्या : प्रस्तावना से उद्घृत

मृदुला जी ने अपने उपन्यासों के जरिये 'अपराध बोध' और 'अनित्य' दोनों का ही मोहभंग इसका मूल आधार रहे हैं । 'अनित्य' उपन्यास की अवधारणा है और उसके अनुरूप ही पात्रों की संस्कृति-सभ्यता है । उपन्यास में स्वतंत्रता आंदोलन के जरिये उपन्यास के पात्रों की सामाजिकता व दार्शनिकता के जरिये पारिवारिक द्वन्द को भी अभिमंडित किया गया है । इसके पात्रों में 'अविजित' शुक्ला जी, रंजना आदि है जो कि अपने पात्र संवेदना को बखूबी समझते हैं । क्रांतिकारी की परिभाषा और आतंकवाद की परिभाषा के अर्थ को मृदुला जी ने बहुत ही सफलता के साथ प्रदर्शित किया है क्योंकि स्वतंत्रता और परेशानी या अत्याचार के अर्थ वर्तमान में काफी पृथक-पृथक हैं ।

आज की राजनीति केवल स्वार्थपरक और स्वजन के लिए ही है । "............ मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते । केवल बम फैकना न केवल कर्म है परंतु बहुत बार हानिकारक भी है । इसकी आवश्यकता कुछ खास अवस्थाओं में ही पड़ा करती है ।"[1]

---

(1) गर्ग मृदुला, "अनित्य", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998, पृ. सं. : 82

इस प्रकार से 'अनित्य' नामक उपन्यास में छुपी विशिष्ट पहचान के जरिये कुछ संदेश भी देश की जनता को देने का प्रयास किया है । इसी प्रकार हमारी सामाजिक प्रवृत्ति और जन समाज की सेवा को भी महत्व दिया गया है । आज हमारा मुख्य लक्ष्य मजदूरों-किसानों को संगठित करके उनका उचित मार्गदर्शन करना है और यही सेवाभाव यदि आज के सभी आर्थिक व राजनैतिक कार्यकर्ताओं का हो जावे तो हमारी सारी समस्या ही दूर हो जायेगी । इस दृष्टि में भी समाज पर हमारी कृषि अर्थव्यवस्था का प्रभाव पड़ता है ।

"फिर क्या चाहती हो ? विमल के पीछे जाने से तो कुछ भी नहीं मिलेगा। पूरे देश में क्रांति लाने के लिए बहुत बड़ी संगठन शक्ति चाहिये । वह हमारे पास नहीं है । देश के किसी एक कोने में चिनगारी भर सुलगा सकते हैं हम इस उम्मीद में कि महक कर वह फैलती चली जायेगी ।"[1]

प्रेरणादायी शक्ति से पूरे देश में हम विस्फोट कर सकते हैं अर्थात जनता को एक कर क्रांति ला सकते हैं । इसके लिए हमें एक संगठित प्रयास करना होगा ।

---

(1) गर्ग मृदुला, "अनित्य", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998, पृ. सं. : 192

"दुनिया में मैं क्या अकेली नारी हूँ ! मुझसे पहले क्या किसी को माफ नहीं किया गया । मैं कुछ चाहता भी तो नहीं । किसी और की मुझे परवाह कहां है । तुमसे कुछ छिपाऊंगा नहीं सब स्वीकार कर लूंगा । अपने विगत पर मुझे कम ग्लानि तो नहीं।[1]

समाज के किसी कार्य को करने से यदि हम पापी या दोषी हो जाते है तो हम अपनी करनी से दूसरों को यदि दुःख पहुंचाते हैं तो इसकी विशेषतः माफी करके अपने को दोषी समझ सकते हैं और सभी को इसका अधिकार दे देते हैं कि वह हमें समझे और हमें माफ कर दें ।

"प्रभु-प्रभु" शुक्ल जी ने हाथ जोड़कर भक्ति भाव से कहा, सब प्रभु की माया है । वही देता है वही लेता है । हम तो सेवा कर सकते हैं स्वप्रार्थना । हे प्रभु, जिस वृक्ष की छांव में इतने लोग आश्रय पाये हुये हैं, उसकी रक्षा करना ।"[1]

वास्तविकता को हम अंगीकार करे और सामाजिक तौर पर माने कि वह हमारा सुधारक या रक्षक है तो उसकी रक्षा के

---

(1) गर्ग मृदुला, "अनित्य", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998, पृ. सं. : 244

(2) गर्ग मृदुला, "अनित्य", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998, पृ. सं. : 249

लिए हम कृतः संकल्पित रहते हैं और रहना भी चाहिये । हम चाहे तो निःस्वार्थ को रखकर अपना ही कार्य करवाते रहे और जनता को कुछ भी न देते हुये इसे नकार दे तो यह राजनीति का पहला पाठ हो सकता है । वह भी वर्तमान राजनीति का लेकिन ऐसी व्यवस्था काफी देर तक अथवा स्थायी रूप से नहीं रह सकती है । 'अनित्य' उपन्यास में मृदुला जी ने आवाम को इसी प्रकार का संदेश प्रेषित किया है । जो वर्तमान में काफी अधिक सटीक व तीक्ष्ण है ।

(ई) साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिवेश :-

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में हमें एक विशेषता देखने को मिलती है । वह विशेषता है कि सामाजिक साहित्यिक विचारोक्ति तथा सांस्कृतिक परिवेश । समाज में रहकर हमें सामाजिक तौर तरीके सीखने की बात कहना सदैव दीपक के सामने अंधेरा न होने के समान ही लगता है । साहित्यिक होना एक पृथक बात है और सामान्य रहकर कार्य करना एक अलग बात । मृदुला जी के उपन्यासों में साहित्य का पक्ष हमें सामान्य तौर पर दिखलायी देता है प्रत्येक बिन्दु और प्रत्येक लाइन के मध्य आपसी एक संघर्ष तो है परंतु उनमें भी व्यवहारिकता झलकती है।

साहित्यिक परिधि के अन्दर ही रहकर हम समाज के तौर-तरीके सीखते हैं तथा हमारी विवेचना का एक पक्ष भी साहित्य व संस्कृति से जुड़ा रहता है । हमारा समाज साहित्य की मीमांसा करता है और उसके अर्थ को समझने की सदैव कोशिश करता है, यह बात अलग है कि इसे समाज के शिक्षित धर्म के व्यक्ति ही अपने अन्दर उतारने की कोशिश करते हैं शोधार्थिनी का यह प्रयास रहा है कि वह मृदुला जी के समस्त उपन्यासों का साहित्यिक और सांस्कृतिक विवेचना को उद्घृत करें ।

मृदुला जी की कहानियों, उपन्यासों, नाटकों एवं पत्राचार में समाज को एक प्रश्न के रूप में देखा गया है उत्तर खोजने की तहरीब मृदुला जी ने व्यावहारिक प्रश्नों के जरिये निकाली है । सदाचारिता का गुण हो, आपसी परामर्श या विचार-विमर्श का गुण हो एक दूसरे के प्रति वे प्रेम का अंश जरूर पाते हैं । नारी स्वतंत्रता से लेकर बंदिनी जैसी नारी पात्रों की रूपरेखा मृदुला जी ने अपने पाठ्यक्रमों में अवश्य ही इंगित की है। पुरातन धरोहर को रखकर आधुनिक परिवेश में नारी की भूमिका अपने आप से एक महत्वपूर्ण सोच का तथ्य है । वर्तमान में नारी पात्रों को हम स्वीकार नहीं करते उनके विचारों को भलीभांति नहीं समझते है

फिर ऐसी दशा में हमें एक साथ आधुनिकता का ही सहारा लेना पड़ता है । इस प्रकार से पुरूष वर्ग ने पुरातन की धरोहर का नाम तो बना रखा है लेकिन आधुनिकता का मन ऊपरी सतह पर अंकित किया है नारी पात्रों को परेशान कर केवल अपने स्वार्थ की बेदी पर उतारने का एक खिलौना मात्र समझने की कोशिश की है । संबंधों का आधार मानवीय मूल्य ही है । मानवीय जीवन मूल्यों का अपना एक अलग स्थान है । इन्हीं मूल्यों के आधार पर समाज रूपी दर्पण वास्तविक चित्र प्रदर्शित करता है । स्त्री-पुरूष संबंधों के मध्य विचारों की नवीन संरचना स्थापित हुयी है लेकिन मन ही मन पुरूष अभी भी स्त्री को अपने विचारों के अनुकूल नहीं बना पाया है, वह अभी भी स्त्री को अपनी दासी के रूप में ही पाता है । नारी की विविध विवेचना मृदुला जी के उपन्यासों में देखने को मिलती है ।

कामकाजी महिलाओं से लेकर ग्रामीण-कृषक महिलाओं तक तथा गांवों के घरों में कार्य करने वाली स्त्री की दशाओं का वर्णन भी मृदुला जी ने अपने कहानियों में निर्भीक रूप से किया है । साफ और स्पष्ट तथा ओजस्वी शैली में लेखक होने से उनकी सुस्पष्ट वाणी हमें सदैव नारियों की तरफदारी की ओर

उन्मुख करती है । वे नारी की प्रगति की सहभागिता की पक्षधर रही है ।

सामाजिक जीवन से ओतप्रोत रचनाओं में हमें मृदुला जी की अमिट छाप देखने को मिलती है । नारी चेतना और जनचेतना एक-दूसरे की पर्याय ही है, जब तक नारी चेतना के स्वर जनता में नहीं सुनायी देंगे तब तक कोई भी अधिकार की बात हमारे समाज को स्पष्ट रूप से सुनाई नहीं देगी और यही कारण है कि नारी की आवाज को जिस समाज में भी दबाने की कोशिश की गयी है वह समाज कभी भी प्रस्फुटित होकर अवप्रेरित नहीं हुआ है और उसके विकास की कोई संभावना भी हमें दिखायी नहीं देती है ।

सामान्यत: पर कहा जाये तो समाज व्यवहारिक पहलूओं पर ही अधिक चलायमान है, यदि हम काम सिद्धांतों की बात करेंगे तो कभी भी सहजता से प्रगतिशील नहीं हो सकते, ''नारी-चेतना'' आज हमारे व्यवहारिक पक्षता के प्रश्नों को हल करने में काफी अधिक सहायक है । और यही कारण है कि जहां यह पक्ष मजबूत है वह समाज जीवन का सबसे अमूल्यवान समाज होगा । 'नारी चेतना' का स्वर आपकी देन नहीं, यह तो

अनादि काल की देन है, जो नारी संघर्षरत है वह परिवर्तन चहाती है । यह परिवर्तन में पुरूष की सहभागिता प्रमुख है । इसलिये व्यावहारिक बात का जिक्र किया जाना भी जरूरी हो गया है ।

व्यावहारिक होना और व्यावहारिकता की बात कहना दोनों पृथक-पृथक तथ्य हैं । आज के इस युग में हमें व्यावहारिक व्यक्ति बहुत कम देखने को मिलते है जबकि व्यावहारिक होना एक बहुत कठिन बात है । मनुष्य अपनी जिन्दगी में ही इतना उलझा रहता है कि उसे व्यावहारिकता की परिभाषा ही ज्ञात नहीं है वह यह भूल चुका है कि समाज में रहना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि समाज से आपसी मेलजोल बनाना बहुत बड़ा कार्य होता है ।

सामाजिक प्राणी होने के बावजूद भी व्यक्ति समाज से भिन्न प्रतीत होता है। वह अपनी किसी मजबूरी के कारण से अथवा अपनी जरूरतों के कारण भी वह समाज से पृथक रहता है पर समाज से अलग नहीं रह पाता, नारी पुरूष दोनों ही जीवन जीना चहाते हैं । मृदुला जी ने अपने कथा साहित्य में मनुष्य की वेदना को काफी करीब से जानने का प्रयास किया है और उसी के अनुरूप भी उन्होंने पात्रों का परिचय भी दिया है ।

आज हमारी जो भी आवश्यकतायें होती हैं, वह हमारे

अपने जीवनयापन के स्वार्थ पर आधारित है, अथवा अपने परिवार के लिये भी होने से होती हैं परिवार एक चिरनिरन्तर सत्य है, जो आवश्यकताओं के लिये बना है । समाज हमारी आधारशिला है और इस आधारशिला में स्तम्भ के रूप में हम अपने परिवार की नींव रखते हैं । यदि यह मजबूत नहीं हुई तो हमारे परिवार कभी ईमारत को नुकसान पहुंच सकता है । व्यवहारिकता को बोध मनुष्य को कोई ठेस पहुंचने के कारण से भी होता है । ठेस मनुष्य को संवारने का मौका भी देती है और उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है ।

मनुष्य सदैव मानवीयता के धरातल पर रखी विवेचनाओं पर ही जीता है । मानवीय संवेदनाओं का मानवीय ईच्छाओं पर भी प्रभाव पड़ता है । हम कितना ही चाहे कि हमारी ईच्छायें बलवती न हो परंतु वह कहीं न कहीं हमारे ऊपर हावी हो ही जाती हैं । मन का आवेग इच्छाओं को आगे बढ़ाने का कार्य करता है । सामाजिक व्यवस्थायें भी हमारी एक बहुत बड़ी बाधा होती है जो कि हमारे समक्ष किसी न किसी रूप में आ ही जाती है । कोई भी सामाजिक कार्य ऐसा नहीं हो सकता, जिसमें हमारी व्यवस्थायें लागू न हो ।

मृदुला जी ने सामाजिक व्यवस्थाओं को समाज का एक बड़ा दोष निर्धारित किया है और कहा है कि यह जीवन के उद्देश्यों में भी बाधक है जबकि समाज एक संगठनात्मक प्रक्रिया है । जहां तक हमारे जीवन के ध्येय का प्रश्न है वह हम किसी न किसी रूप में पूरा करने का प्रयत्न करते ही हैं । हमारी पारिवारिक भावनायें हमारा सबक होती हैं । यदि यह हमारे साथ नहीं है तो हम अकेले रह जायेगे और हमारे साथ कोई भावनायें भी जुड़ी नहीं रहेंगी । यह जीवन का एक निरथक पक्ष भी होगा।

साहित्य व संस्कृति हमारे जीवन का एक आदर्श भी है, इसका हमारे जीवन और परिवार के अन्य सदस्यों पर भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है । समाज में रहकर व्यक्ति का व्यवहार और भी निखर सकता है बशर्ते कि आपमें उसको सही दिशा प्रदाय की हो, क्योंकि यदि व्यवहार किसी गलत तरीके को अख्तियार किये हुये हो तो समाज की व्यवस्थाओं को भी प्रदूषित कर देगा । समाज में आने वाली कठिनाईयां और बाधायें इसी प्रकार की हुआ करती हैं जिससे सामाजिक व धार्मिक दिशा कुंठित हो जाते हैं और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं और मनुष्यों पर भी पड़ता है ।

मृदुला जी के उपन्यासों में उनके निर्विवाद सकारात्मक निवेशों का यह तथ्य हमें स्पष्ट रूप से पढ़ने को मिलता है कि एक बच्चे के रूप में यह जानना कि लड़कियों से लड़कों की अपेक्षा भिन्न व्यवहार किया जाता है और उनसे यह उम्मीद की जाती है कि उनकी शिक्षा, महत्वाकांक्षा और मानसिक ज्ञान भिन्न प्रकार का है लेकिन उनके पिताजी के सहयोग से उनकी यह सोच परिवर्तित हुई । उनके जीवन पर बाल्यकाल से ही टॉलस्टाय, बोस्की आदि लेखकों के विचारों का प्रभाव था । परिवार के वृहत् होने के बाद तथा बीमारी के बावजूद भी मृदुला जी के जीवन पर इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है । बचपन से बड़े होने तक उनकी माता जी के विचार और लालन-पालन का बड़ा हिस्सा उनके जीवन संचय का ढांचा है क्योंकि जीवन ही मॉ से अभिप्रेरित है ।

माता का जीवन में अपना महत्व है, वह जननी ही नहीं प्रेरणा की श्रोत भी है । परिवार की श्रेष्ठकर्ता के रूप में माता का प्यार अदिनीय है ।

----::+::----

अध्याय द्वितीय

मृदुला गर्ग का कृतित्व
एवं
उनका कथा साहित्य संसार

अध्याय द्वितीय

मृदुला गर्ग का कृतित्व और उनका साहित्य संसार

(अ) मृदुला गर्ग का प्रारंभिक लेखन एवं साहित्यिक गतिविधियाँ: -

मृदुला जी का कथा साहित्य जीवन जगत के क्रियाकलापों के मध्य जीवन रेखा की परिधि को छूता है और अनायास है । समग्र-जीवन जीने की मनोवृत्तियों का अध्याय भी हमें कराता है । जिसमें हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम स्वयंसेवी रहते हुये भी अपनी संविदाओं के प्रति वास्तविक रूप से जिम्मेदार भी है । हिन्दी महिला कथाकारों में अनुगण्य मृदुला जी की कहानियों में भी हमें पात्रों का स्वरूप विभिन्न रूप से दिखाई देता है, जो जीवन जीने की कला के साक्षी है । यह जीवन जीना भी है । सामाजिक तौर पर हमें अपने कर्त्तव्यों के प्रति आगाह करता रहा है ।

समाज और देश की धरोहर हमें जो भी परम्परा, सभ्यता से सीखने को मिली है अर्थात हमें विरासत में मिली है, वह जीवन ही हमारी प्रेरणा है और यह जीवन प्रेरणा ही सदैव आगे बढ़ने को प्रेरित करती है । समाज में व्याप्त विषमतायें और विसंगतियां जब चाहे अनचाहे किसी महिला के संवेदनशील कलाकार मन तक पहुंचकर उसे आंदोलित करती है, तो वह

उन्हें वाणी देने को बाध्य हो जाती है । "निश्चय ही संवदेना हमें आत्मीयता के प्रगाढ़ कथन में बांधती है । हमें कोमल अनुभूतियों में उस भाव लोक में ले जाती है । जहां कृतज्ञता की सदैव प्रतिमूर्ति होती है ।"(1)

चंचल स्वभाव के बावजूद भी विचारों में टकराव तथा एक नवनीत सोच हमारे सामने सदैव परिलक्षित होती रहती है । यह नवीन विचार भी हमारे मन में नित्य आता ही रहता है तथा हमारे उत्कंठाओं को भी जागृत करता है । मृदुला जी को प्रारंभिक साहित्यिक यात्रा से हमें ग्रामीण जीवन और मानवीय वेदना की ही दार्शनिकता देखने को मिलती है । मृदुला जी ने अपने प्रारंभिक विचारों को "मैं और मैं" तथा "शहर के नाम" में भी कुछ दृश्य इसी प्रकार के दर्शक है । यह उपन्यास समाज के किस तबके का चित्र सींचती है, जो दूसरे आदमी को बेवकूफ बनाकर अपनी स्वार्थसिद्धि में लगा करता है । कौशल उस वर्ग का प्रतीक है, जो किसी सदस्य इंसान का मानवीय भावनाओं का गलत करने से भी नहीं चूकता । वह उसी का खाकर उसी को कोसने की कला में निष्णात् है ।

---

(1) डॉ. यादव उषा, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की माननीय संवदेना (आलोचना) रामकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृष्ठ सं. : 11

मृदुला जी ने अपने उपन्यास ''शहर के नाम'' और ''अनित्य'' की कोण रेखायें भी कुछ इसी तरह की स्त्री की है ।[1] जिसमें हमें मानवीय जीवन मूल्य तथा सार्थकता पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता हुयी है । ''अनित्य'' में उन्होंने राजनीतिक विसंगतियों और उसका समाज पर प्रभाव को सशक्त रूप से चित्रित किया है । हमारे मानव मन को विशेषत: उन्होंने देशभक्ति व राष्ट्र प्रेम जैसे वृहत् दिखने की और मोड़ने का प्रयास किया है ।

जिन स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग बलिदान ने देश को स्वतंत्रता दिलाई वे स्वयं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वितृष्णा और कुंठा से भर गये । एक काली छाया ने उन्हें निगल लिया और वे मरणोन्मुख राजनीति को ढोते और भीतर से सर्वदा दूर जाने को विवश हो गये ।[2] ''अनित्य'' उपन्यास इसी प्रकार की संवेदना का अंकुश है। डॉ. विवेकीराय जी ने इस उपन्यास की विवेचना करते हुये कहा है कि- मृदुला गर्ग ने ''अनित्य'' में गांधी के अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन और भगतसिंह के अंतर किसी

---

(1) डॉ. यादव, उषा, ''हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवदेना रामकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृष्ठ सं. : 90-91

(2) डॉ. यादव, उषा, ''हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवदेना (विवेश्च महिला उपन्यासकार) रामकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृष्ठ सं. : 91

क्रांतिकारी आंदोलन को आमने-सामने रखकर विगत 50 वर्षो में दासोन्मुखी समाज की कहानी अत्यंत सघन सटीक प्रतीकात्मक उपन्यास शिल्प में प्रस्तुत की है ।[1]

हमारा संघ स्वतंत्रता संग्राम के इस महासंग्राम में राष्ट्रभक्ति के महान विषय की कटियामंडित प्रथाओं में पड़कर भारतीय स्वराज्य में भटक जाये तथा प्राप्ति के साथ रूग्ण हो जाने की खबर को सर्वथा अनजाने व जानकर भी अवज्ञा कर देते हैं । ''अत: राष्ट्रीय स्थिति के ठीक-ठीक उस बिन्दु का अन्वेषण करना अतिआवश्यक है । इस उपन्यास में हमें दुविधा प्रतिरोध के साथ-साथ एक अन्तर्वाद भी झलकता है, सुनायी देता है।''[2] हमारा ध्येय जीवन में आने वाली मुसीबतों के चलते अन्वेषण युग में भी कुछ ध्येय हासिल करना होता है ।

वास्तव में अविजित के भीतर एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व की टूटन काया है जो उसके भटकने से लेकर टूटने तक जो लगी रहती है । ''अनित्य'' क्रांति की शाश्वत चेतना का प्रतीक है । मृदुला जी के कई उपन्यास भीतर संकेतित होने वाले है ।

---

(1) डॉ. यादव, उषा, ''हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवदेना (विवेश्च महिला उपन्यासकार) रामकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृष्ठ सं. : 91

(2) डॉ. यादव, उषा, ''हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवदेना (विवेश्च महिला उपन्यासकार) रामकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृष्ठ सं. : 91

यह सुश्री पाठकों के बीच हमें उनकी कठिनाईयों और संविदित रहने की परिभाषा भी सिखाते है । इस प्रकार से मृदुला जी ने कई प्रारंभिक कृतियों के साथ-साथ वर्तमान तक के अपने कहानी व औपन्यासिक स्वर में सौद्देश्य चिंतन करने के साथ-साथ मन मस्तिष्क को सकझोरने वाली कई बातें भी बतायी है । उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों से उठकर, सुदूर राजनीतिक जीवन मग्न दांपत्य से लेकर नवीन परवेशिक साहित्य पर भी प्रकाश डाला है।

मृदुला जी ने पारिवारिक रिश्तों के प्राधान यतन की कहानी को रूप की कमल से इतनी तन्मयता से उकेरा है कि उसकी विश्वसनीयता और सच्चाई प्रकट हुए बिना नहीं रही है ।

साहित्य की भाषा विधा :-

मृदुला जी के कथा साहित्य में भाषा विधा पर विशेष गौर किया गया है यही कारण है कि उनके उपन्यासों के कथानक काफी प्रभावशाली रहे है । उनकी कहानियों में भी पात्र अपनी अमिट छाप छोड़ते है । कोई भी सच्चाई हो चाहे वह घरेलू प्रकरणों से संबंधित हो अथवा महिलाओं के कामकाज से संबंधित वह कहीं न कहीं भाषा से प्रभावित ही रही है । मृदुला जी ने

अपने उपन्यासों में भाषान्तर को भी विशेष महत्व दिया है । विविध भाषा आदि पर उनके जीवन का प्रमाण स्पष्ट परिलक्षित होता है ।

"सुवर्णा आखिर अनाड़ी निकली । बाई कितनी भी आलसिन हो, उसे सोफे पर बैठने नहीं दे सकती, उसने अपने पांच साल के कामकाज में इतना सीख जाना चाहिये था ।"[1]

मृदुला जी ने बहुत ही सटीक उदाहरण अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किये हैं जिससे हमें उनके भाषाई विद्या का बोध होता है।

"अपनी आदत के खिलाफ वे तत्परता से स्वयं बर्तन समेटने लगी । साथ में कहती गयी, "छोड़ो-छोड़ो लो हो गया, ले जाओ रामू, बस ले जाओ । आओ, हम लोग उधर बैठे बैठक में ।"[2]

उपन्यासों में उन्होंने सहजता और सरलता को कभी भी नजर अन्दाज नहीं किया, जिसके कारण कठिन भाषा और शब्दों के जाल का ताना बाना सहज प्रतीत होता है ।

---

(1) गर्ग, मृदुला, "शहर के नाम", कहानी अनाड़ी से उद्घृत भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वर्ष : 2000, पृष्ठ सं. : 49

(2) गर्ग, मृदुला, "शहर के नाम", कहानी-'बाहरीजन' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृष्ठ सं. : 85

<u>मानवीय संवेदनात्मक दृष्टिकोण</u> :-

मनुष्य के जीवन में आने वाले संवेदात्मक पहलू उसके जीवन का प्रभाव है । मृदुला जी के उपन्यासों में मानवीय संवेदनाओं का वर्णन हमें सर्वथा देखने को मिलता है । हमारे द्वारा पूर्व अध्यायों में भी इस सम्बन्ध में चर्चा और विचार विमर्श किया गया है । महिला कथाकारों द्वारा अपने उपन्यासों में मानवीय संवेदनाओं को स्थान देना एक विशेष महत्व की बात है । "महिलाओं की परिस्थितियों के घात, प्रतिघात इसलिये भी झेलने पड़ते है कि वे अभिशप्त की तरह जिन्दगी बसर कर रही होती है, जीवन में कई उतार चढ़ाव आते रहते हैं जिससे वे सुखी नहीं रह पाती । कहीं उसे अपमानजनक स्थिति का भी सामना करना पड़ता है लेकिन हो सकता है यह उसकी विवशता हो ।"[1]

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में हमें मानवीय संवेदनाओं की विवरणिका यहां तक दिखलाई पड़ती है और यही कारण है कि उसे अनभिज्ञता मानकर नजरों में ओझल भी नहीं कर सकते है।

---

(1) डॉ. यादव, उषा, "हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवदेना" राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृष्ठ सं. : 94

<u>अहं की भावना</u> :-

उपन्यासों के कुछ पात्रों में यह भावना भी है । "मैं और मै" नामक उपन्यास में सर्वथा अहं को ही स्थान दिया गया है । यह गुण वैसे जन्मजात स्वभाविक प्रस्तुत होती है । जो किसी में अधिक होती है, किसी में कम ।

"सच है, सफल लोग अगर यह मान लें कि भाग्यवाद नाम की चीज है तो उनका व्यक्तित्व ही टूट-फूट जायेगा । वे यदि अहं कैसे संतुष्ट करें कि हमारे पास जो धन या पथ है, उसे हम जैसे बुद्धिमान ही अर्जित कर सकते हैं ।"(1)

अहं भावना से पर्याय हमें प्रत्येक ही कथानकों में दर्शित होता है हो सकता यह किसी में कम हो और किसी में अधिक देखने को मिले, मनुष्य अपने अहं भावना से आसपास के वातावरण को कर देना चाहता है जिससे उसके उद्‌देश्य भी पूर्ण हो जायें और उसका अहं भी टूटे नहीं ।

---

(1) डॉ. यादव, उषा, "हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवदेना" राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृष्ठ सं. : 114

<u>संयोगात्मक संवेदना</u> :-

संवेदना हमारे जीवन की कटुस्मृति रहती है परन्तु इसके संयोग की भावना का पुट भी स्थित रहता है । मृदुला जी के उपन्यास सदैव संयोगात्मक संवेदना पर परिलक्षित होते है । लेकिन ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि संयोग के वह क्षण यथार्थ के रूप में हमें नहीं दिखलाई देते हैं । हम सदैव संयोग के अपनेपन में ही जीते है, जीवन के हर पहलू इसी संयोग पर निर्भर करते हैं जिससे हमें अज्ञात की भांति यह दिखलायी नहीं देता । "सच्चे संयोग के क्षण जीवन को इतना भरा पूरा बना देते हैं कि छोटे-मोटे अभाव, कष्ट और गत्यारोध तो हम देख ही पाते हैं ।" इन संयोगात्मक क्षणों का सानिध्य जीवन के अधूरेपन को पूर्णता में बदलने में समर्थ हो जाता है तो दूसरी ओर कभी-कभी जीवन भर संग साथ भी एक छत और प्यार बिना रोके भीतर अजनबियों का सा बेगानापन झेलने की यातना पहुंचाता है ।

इसी संयोग और वियोग को मृदुला जी के उपन्यासों में हमें सदैव देखने को मिलता है कि सभी अपने संवेदनशील तथ्यों को छूपा कर और यातना पीड़ा झेलकर भी परिवार को बांधने की

कोशिश करती रहती है, चाहे वह उसमें सफल हो अथवा नहीं हो। विचारों के मतभेद अहं का टकराव तथा संघर्ष हमें मृदुला जी की कहानियों और उपन्यासों में दृष्टिगत होते हैं । परिवार और परिवारों के बीच संबंधों की मूल प्रवृति परक संवेदना ही होती है ।

आज का उपन्यासकार यथार्थ की कटुता को वहन करने में सक्षम है । वह पलायन या मुक्ति नहीं, अपनी पूरी जिजीविषा के साथ संघर्ष चाहता है । वह संघर्ष के माध्यम से जीवन को विभक्त करने की बजाय ऐसे नये आयाम देने की कोशिश करता है जिससे नए जीवन मूल्य उद्‌घाटित होते हैं । जीवन का हर पहलू हमारे ऊपर प्रत्यक्षतः प्रभाव डालता है और इसी कारण से व्यक्ति और समाज के मध्य एक अटूट रिश्ता कायम हो जाता है । संघर्षशील रहते हुये भी हम समाज के अभिन्न अंग होते हैं।

(ब) मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का पूर्वार्द्ध :-

मृदुला गर्ग जी के साहित्य का पूर्वार्द्ध पक्ष संघर्ष का प्रारंभिक चढ़ाव था । प्रारंभिक अर्थो में हम यदि इसे विशिष्ट पहलूओं, जो कि स्त्रीयों की पीड़ा की आवाज से ही उन्होंने अपनी

लेखनी को सराबोर किया है । इस काल को हम विद्रोही काल भी कह सकते हैं । "एक और अजनबी", "कितनी कैंदे", "टुकड़ा-टुकड़ा आदमी" में उन्होंने अपनी प्रारंभिक ज्ञान की प्रवाहता को स्वीकार भी किया है । वर्ष 1927 से लेकर 1990 तक प्रकाशित उनका साहित्य पूर्वाद्ध परिकल्पना का ही आधार है ।

नारी की विषमता और उसकी चेष्टाओं का हनन भी उनकी विव्हलता प्रदर्शित करती है । कई ऐसी महिला कथाकार हैं जिन्होंने नारी को एक ही रूप से नहीं देखा है बल्कि उनकी कई अनेक विविध स्वरूपों का भी दर्शन हमारे सुधी पाठको को कराया है । जिनमें श्रीमती मालती जोशी, मृदुला गर्ग, मन्नू भण्डारी, कृष्णा अग्निहौत्री, शिवानी, अमृता प्रीतम इत्यादि हैं कई ऐसी महिला कथाकार भी हैं जिन्होंने अपनी स्वयं अनुकूल पीड़ा को जनता को भी स्वीकार कराया है ।

स्त्री की पीड़ा का ज्ञापन किसी तरह से मृदुला जी ने दिया है जैसे करूण-क्रन्दन परन्तु अपराजिता की भांति हमारी संस्कृति के मूल्यों के अनुभव को भी दर्शाया है । नारी एक दुर्गा एवं

विद्यादायिनी के रूपों में भी विद्यमान है इसी कारण ज्ञान पिपासु या संगीत योद्धा की अपनी हार कहीं-कहीं मान ही लेते हैं । यथार्थत: एक चर्तुकोणिय दृष्टिकोण हमारी संस्कृति को नारी के रूप में प्राप्त हो चुका है । आज यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन सा आदि है और कौन सा अन्त है । स्वयं विवादों के रूप में रहे नारी का रूप भी देखने को मिलता है ।

परिवार के सदस्यों की समझाईश से लेकर उनकी जिज्ञासाओं को शांत करने तक हमारी संस्कृति स्त्रीयों की शिक्षाओं को मान्यता देती है । परंतु यदि किसी का प्रयास इसके अधिक जाने की कोशिश करता है तो यह असाध्य माना जाकर दबाने की कोशिश भी समाज द्वारा की जाती है । सामाजिक विडम्बनायें भी स्त्री जाति को दबाने की कोशिश करती है ।

समाज किसी भी नारी को स्वयं मिटा नहीं सकता वह उसे अतीत के गर्त में ढ़केलना ही चाहता है । चाहे वह कामकाजी महिलाओं अथवा अपनी ग्रामीण बहन या भाभी, उसके विचारों को कुंठित बनाने की साजिश समझ कर हर वर्ग करने की कोशिश करता है ।

समाज विकसित किंतु अविकसित विचारों वाला एक संघ है जिसमें विचारों से पुष्ट समाज भी वास करता है और कुंठाग्रस्त विचारों वाले लोग भी निवास करते हैं; यही धारणा ही मृदुला जी के उपन्यासों के पात्रों में दिखाई देती है । एक विशेष बिन्दु बित्तल छटपटाहट नारी पात्रों से दिखलायी देती तो नारी की विवशता आंसुओं से अथवा उनके लिखने से हमें दिखलायी देती है कोई भी स्वरोगी हो वह यह तो रहता है कि मैं बीमार हूँ या मुझे इस बात का दुःख है लेकिन वह अन्दर ही अन्दर मरता चला जाता है । उसकी विवशता को समझ कर कोई उसे उस दशा में निकालने का प्रयत्न नहीं करता है ।

मानव मूल्य नारियों की शक्ति का एक रिश्ता होते है । वह चाहकर भी उनका प्रयोजन नहीं जान सकती है । मानव मूल्य हमारे समाज का भी अभिन्न अंग है जिसमें रहते हुय समस्त समाज के एक अच्छी संघ की संकल्पना कर सकते हैं । यही कारण है हमारा संघ एवं समाज हमारे विचारों को सहायता से नहीं लेता है उसके अर्थ निराले ही होते हैं, यह अर्थ के अर्थो की बात ही जानता है ।

समाज रूपी दर्पण में हमें समाज की वास्तविक छवि देखने को मिलती है और यही कारण है कि मृदुला जी के उपन्यासों के सामाजिक पक्ष को सही रूप से प्रदर्शित किया है ।

मृदुला जी के रचनाक्रम का यह पूर्वाद्ध क्रम था और यही कारण है कि उनके उपन्यासों और कहानियों में सही दार्शनिकता हमें देखने को मिलती है । लेकिन यह दर्शन हमें कुछ इंतजार और बेसब्री के बाद मिले क्षण भर के सुख के जरिये ज्ञात होता है । ''कहकर वह गया नहीं । हमारे उठने का इन्तजार करने लगा । उसे कोई जल्दी नहीं थी । कुदाल का हेरा लेकर वह लम्बी प्रतीक्षा में जड़ हो गया । बच्चे हमें घेरे रहे ।''[1]

अपनी जिम्मेदारी के प्रति भी नारी सजग है और उसे बखूबी निभाने के लिए भी स्वसंकल्पित है । मृदुला जी ने अपने वाक्य में बहुत ही गहराई दर्शाई है । कुछ मन की बात कहकर रूक जाना और फिर सोचकर कहलाना एक अपनी विशिष्ट पहलू है इसी कारण से हमें मृदुला जी कई अनकहे पहलू ज्ञात हो जाते है ।

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''शहर के नाम'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष:2000 पृष्ठ संख्या : 40

"शायद ढलते सूरज का मृत्युगामी प्रकाश था या तारे निकलने से पहले का धुंधलका, वे मुझे जीते जागते इंसान नहीं, आधुनिक मूर्तिकला के अनगढ़ नमूने लगा देते हैं । वह उनकी अपेक्षा रहित स्थिर दृष्टि झेलने की क्षमता इसमें नहीं थी ।"[1]

जिस प्रकार से ढलता हुआ सूरज और बुझता हुआ दिया अपनी कहानी छोड़कर जाता है उसी प्रकार से उठता हुआ धूंआ और अग्नि की ज्योति अपनी निशानी पाकर पूर्वार्द्ध के रूप में हमें प्रदान कर देते हैं, मृदुला जी का पूर्वार्द्ध का रचनाक्रम यथा, "टुकड़ा-टुकड़ा आदमी", "कठगुलाब" और "एक और अजनबी" इसी का ज्वलंत उदाहरण है जिसमें मृदुला जी ने अपनी आत्मीक त्रासदी का उपन्यासों में लिखे विचारों और उदाहरणों के द्वारा उद्घृत किया है । अपनी वेदना को उन्होंने नारी की कहानी का रूप दिया है और उसकी पीड़ा भी उपन्यासों और कहानियों की मीमांसा भी है ।

मुझे लगता है इन दस-पन्द्रह सालों में लोग बदल भी काफी गये हैं । हो सकता है, पहले से भी मुस्कराते हो उसकी

---

(1) गर्ग, मृदुला, "शहर के नाम", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष:2000 पृष्ठ सं. : 32

तरह आंखों से, मैंने देखा न हो । अब चलन न रहा हो । "फैशन का क्या ठिकाना, रोज बदलता है ।"(1) मृदुला जी ने अपनी पीड़ा को जिस प्रकार से एक विवाह योग्य लड़की की पीड़ा होती है, के रूप में प्रदर्शित किया है वह यह नहीं जानती कि इसका क्या परिणाम होगा, वह इसकी परवाह किये बिना कि वह जीवन भर एकाकी भी रह सकती है । अपने विचारो को नियमित अवरूप करती हो शायद यही उनका कथन हमें बड़ा विश्वसनीय लगता है कि "सब कहते हैं जिंदगी तबाह कर ली मैंने ।"(2)

मृदुला जी ने अपनी बात को रामराज्य की निर्दोष परिकल्पना भी निरूपित किया है । वह कहती है कि-"उसकी बात मुझे रामराज्य की उस निर्दोष परिकल्पना की तरह लग रही थी जिसमें राम ने धोबी के आरोप पर सीता को देश निकाला नहीं दिया था, उसकी अग्नि परीक्षा नहीं ली थी, कहीं कुछ गलत तो नहीं हुआ था और हो सकता था ।"(3) रामराज्य की परिकल्पना ने मृदुला जी के विचारों और बात अघोषित विराम सा ही लगा दिया क्योंकि

(1) गर्ग, मृदुला, "शहर के नाम" कहानी "अस्क", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 39

(2) गर्ग, मृदुला, "शहर के नाम" कहानी "अस्क", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 39

(3) गर्ग, मृदुला, "शहर के नाम" कहानी "विलोम", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 94

वह इस बात से वाकिफ हैं कि किसी के आरोप व प्रत्यारोपों के जरिये भी जिन्दगी तवाह हो सकती है लेकिन इसका स्वयं का कोई परिजन यदि उसकी तरफदारी करें तो वह उसके लिए बड़ी है । आगे की बात होगी । .... यदि कोई ठोस सम्बल का सपना नहीं देख सकते तो इस पर विश्वास की नजरें ।(1)

मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में मजबूती और एकाकी के साथ-साथ वास्तविक पहलूओं पर भी चिन्तन किया है जिसके कारण उनकी कहानियों के पात्र भी सशक्तता के साथ उमड़ पड़े हैं । जिसके विचार और कार्य हमारे ऊपर काफी गहरा प्रभाव डालते हैं ।

मृदुला जी ने राजनीतिक और सामाजिक पहलूओं के साथ-साथ अर्द्ध राजनीतिक-सामाजिक पहलूओं को भी अपनी लेखनी का आधार बनाया है ।

बंधुआ मजदूरी हमारे जीवन के लिए एक अभिशाप की ही समझी जाती है क्योंकि कई मिलों और धनाढ़य लोगों के यहां बंधुआ मजदूरी की गैरकानूनी प्रथा आज भी प्रचलित है, 37 साल

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''शहर के नाम'' कहानी ''विलोम'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 94

पहले बने देश के संविधान के बाद भी बंधुआ मजदूरी को गैरकानूनी घोषित किया जा चुका है जिसकी यह हमारे रक्त में व्याप्त हो चुकी है । बंधुआ मजदूरों पर जमकर उपन्यास, नाटक लिखे जाने लगे फिल्में बनने लगी और सभी इस बैजा कार्य का अर्थ समझने लगे फिर भी इसे बंद करने के कार्य में फर्क नहीं आया और यह हालात बद से बदतर होते ही गये ....।[1]

बंधुआ मजदूरी को मृदुला जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से उपन्यासों की पृष्ठभूमि बनाया इस उद्देश्य से वादी-प्रतिवादी के रूप में प्रश्न करना और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करना वाला प्रेरक तो लगता है लेकिन महत्वहीन भी है क्योंकि इस दृष्टि से हमें कोई विश्वसनीय और ठोस प्रमाण नहीं मिल पाते कि कौन अपराधी है और कौन नहीं । असमानता हमारे समक्ष सदैव यह प्रश्न करती है कि समानता हमारे लिये कष्ट पैदा करती है ।

अपराधबोध समानता और विडंबना को हम आज की विवशता भी समझ सकते हैं इसके जरिये हम कोई ठोस अर्थ निकाल सकते हैं परंतु ऐसा जानने के लिए हमें किसी नतीजे पर

(1) गर्ग, मृदुला, ''शहर के नाम'' कहानी ''विलोम'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 110

अवश्य पहुंचना होगा क्योंकि बंदुआ मजदूरी तथा किसानों की दुर्दशा का चित्रण करें तो हमें अर्थशास्त्र की किताबों के पृष्ठ भी पलटने होंगे ।

(स) मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का उत्तरार्द्ध :-

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का उत्तरार्द्ध उनके उपन्यास यात्रा की चरनसीमा थी । सायंकाल के धुंधलके में एक शहर की अखण्डितताएं हमारे समक्ष आती है। वही वक्त होता है उसे पहचानने का, उसकी आत्मा की एक झलक पाने का ।

मृदुला जी के कथा साहित्य के माध्यम से परिवार व समाज की जीवंत तस्वीर हमारे सामने प्रस्तुत की है । शहर वाले अंधेरो के समान हमारे संघर्ष की भाषा तथा सुबह का कोहरा व धुंधलका संघर्ष कर हमारी विजय को इंगित करता है । इसी प्रकार प्रेमभाव हमारी सभ्यता का प्रतीक है । जो सदैव ही कटावों को भर देता है ।

मृदुला जी ने अपने साहित्य में नारी के एकांकीपन और जीवन व्यतीत करने का वास्तविक चित्रण किया है । ''मैं बहुत व्यस्त हूँ'' यह कहकर मनुष्य जिस संतोष का अनुभव करता है

उसका बोध अपने एकाकी पन को समाप्त कर जानने वाले के सामने अपनी असलियत बयान करना होता है ।

"मनीषा ही कैसे बार-बार इस कमजोर शब्दों को दुहराकर जीती जा रही है । क्या उसके पास संतोष पाने का और कोई साधन नहीं है ।"[1] मनीषा का एकाकीपन उसके जीवन के अंधियारे के समान होकर सदैव ही उसे यह एहसास कराता है कि वह एक अकेली औरत है और उसे किसी की बात की छूट या आजादी नहीं है जो उसे जीवन जीने का रास्ता प्रशस्त करें ।

"उसके हिस्से की धूप" मनीषा, जितेन और मधुकर के आपसी जीवन की कहानी है, इस आधार पर मृदुला जी ने जीवन की असलियत को बयान किया है ।

"जितेन, मधुकर, फिर जितेन, ये मनीषा के जीवन के उस ज्वार के समान आये जो जब आता है तो सहत को उथल-पुथल, उद्वेलित मंचित कर उसका रूप-रंग ही बदल डालता है, भाटा आता है, सागर पीछे धकेल दिया जाता है और बंधे जन्तु सा धीमे- धीमे सिसकारी भरता रहता है । पर ज्वार

(1) गर्ग, मृदुला, "उसके हिस्से की धूप", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृ. सं. : 136

या भाटा, दोनों में से कोई भी सागर का सम्पूर्ण परिचय नहीं है । उसका सच्चा परिचय है उसकी गहराई में, उसके विस्तार में, उन असंख्य जीवजन्तुओं, पौधों, शंख में जो उसकी गहराई में पलते हैं, मनीषा को भी अपना सच्चा परिचय अपने समस्त तल की गहराइयों में खोजना होगा।''[1]

जीवन की चरम सीमायें व गहराइयां होती है । मनुष्य जो कुछ भी सोचना है उसे किसी न किसी रूप में अवश्य जीवन में उतारता है । जीवन को स्वयं मनुष्य अपने ढंग से जीता है - चाहे वह उद्वेलित होकर जीये या एकाकी रूप में संभीरता के साथ यह तो मानव मन पर निर्भर करता है । जीवन में आने वाले सभी पहलूओं को एक अंगीकार करना चाहिये, इससे दूर भागना अर्थात् अपने को कमजोर दर्शाना होता है ।

नारी सामर्थ्यवान होती है वह मजबूर होकर भी हमारे समाज का सम्बल होती है । नारी कितनी ही मजबूर क्यों न हो स्वयं अपनी सामर्थ्य पर दिखावा रखती ही है । वह अपने बलबूते पर समाज से लड़ सकती है और स्वयंहीनता की परिभाषा में आ

---

(1) गर्ग, मृदुला, "उसके हिस्से की धूप", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृ. सं.:155

जाती है । एक और उसमें बढ़ाई वाली बात होती है कि मनुष्य की चेतनता उसकी आत्मा की आवाज होती है । पुरूष चाहे वह उसका पति ही क्यों न हो उसके द्वारा निस्सहाय होकर भी वह रोष के आंसू पी जाती है और बाद में वह मन ही मन दु:खी होती है, पति की बातें घुमाती रहती है ।

भोजन की बात हो तो वह भी वह अपने विरूद्ध नहीं सुन सकती है क्योंकि पति भी अपने परिजन के सामने खाने की तरीफ. न करे तो वह चिन्तनशील पति की भूमिका अदा करते हुये उसकी कमी बता ही देता है । भले ही वह इस रूप में या परोक्ष रूप में इसकी तारीफ ही क्यों न करता हो । कहा जाता है कि यदि किसी के समक्ष हम ज्यादा तारीफ करे तो वह उसकी सबसे अधिक आलोचना होती है ।

मृदुला गर्ग जी का कथा साहित्य नारी की विविध विचार धाराओं से ओतप्रोत है तथा उनकी विविध संरचनाओं से प्रभावित है । मृदुला जी ने स्वयं को उनके रूप में देखा है । नारी एक संपूर्ण मानवीय व्यक्तित्व का जीवन का सर्वशक्तिमान विविधा स्वरूप है ।[1]

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''उसके हिस्से की धूप'', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृ. सं.:141

<u>संवेदनात्मक पहलू</u> :-

नारी को हम चाहे कितना सशक्त क्यो न माने उसे हम संवेदनात्मक ही कह सकते हैं क्योंकि नारी समाज का दर्पण होकर भी उसके अनन्त पहलूओं का समावेश है । समाज के कई संवेदनशील हिस्सों का एक हिस्सा नारी ही होती है । मृदुला जी ने अपने व्यक्तित्व की छवि अपने कई उपन्यासों में हमे दर्शायी है ।

संवेदन शक्ति नारी की सबसे अहम होती है । और इसी रूप में वह अधिक शक्तिशाली भी है क्योंकि संवेदना सदैव संभावना का ही रूप होती है । मृदुला जी के उपन्यास ''अनित्य'' व ''शहर के नाम'' में बंधुआ नारी के विविध स्वरूपों का चित्रण हुआ है ।

<u>संघर्ष की गाथा</u> :-

नारी को सदैव सदियों से संघर्ष करते ही देखा गया है । जिससे हमें उसका दुर्गा या काली रूप ही समक्ष आया है । जब-जब नारी के प्रति अत्याचार हुये । उसने संघर्ष करने और उस त्रुटिपूर्ण कार्य को उखाड़ फैकने की ही ठानी है । नारी को दुर्गा स्वरूपा भी कहा गया है ।

मृदुला जी ने अपने कथाओं को नारी संघर्ष की एक गाथा बनाया है । संघर्ष को तो उन्होंने आम राय बताया है । जब भी पुरूष प्रधान समाज नारी के समक्ष या उसके विरोध में बोला है । तब तक वह शक्ति के रूप में सामने आयी है इस प्रकार मृदुला जी ने कथा साहित्य को संघर्षता के रूप में नया मोड़ दिया है ।

नवीन संरचनात्मक स्वरूप :-

मृदुला जी ने कथा साहित्य में नारी के नवीन रूप को सदैव चित्रित किया है। चाहे वह शहरी नारी हो या ग्रामीण अनपढ़ महिला अथवा पुरूषों के बीच संघर्ष करती महिला, प्रत्येक के स्वतंत्र विचारों को उन्होंने अपनी साहित्य की स्थायी बनाया है । संरचना सदैव नये आयम घूर रही तैयार होती है । समाज में आज नारी का जो स्थान है वह पाकर तराशकर जिस प्रकार मूर्ति का रूप दिया जाता है, उसी प्रकार से नारी भी तपकर निखरकर सामने आती है।

स्वयंसिद्धा :-

नारी को स्वतंत्र और स्वच्छंद रूप से स्वयंसिद्धा भी कहा जाता है । अर्थात् स्वयं को समाज के सामने सिद्ध करने की

शक्ति रखने वाली एक नारी । आज के युग में इस प्रकार की नारियों का मिलना तो तय है लेकिन एकदम से उचक्कर सामने नहीं आ पाती । क्योंकि कई तो संघर्ष करते-करते धूमिल हो जाती हैं और कई संघर्ष तो करती हैं साथ ही साथ वह स्वयं को सिद्ध भी करती है - समाज के समक्ष ।

मृदुला जी ने स्वयंसिद्धा के रूप में नारी को अपने उपन्यासों का पात्र रखा है । समग्र पक्ष में नारी बहुत ही सशक्त है । समाज के साथ इस मुकाम पर पहुंचाने का श्रेय भी नारी और उसके विचारों को जाता है ।

समाज सार :-

मृदुला जी की उपन्यासी यात्रा घर से प्रारंभ होकर बाहरी दुनिया तक पहुंती है । मृदुला जी ने समाज को एक घर और आंगन के रूप में ही देरवा है उसमें घटने वाली प्रत्येक घटनाओं को इन्होंने बरवूबी चित्रित किया है । एक गृहिणी कालेज या नौकरी करने वाली महिला और पति या पुरूष के समक्ष रहकर समाज को दिरवाने वाली महिला के रूप में उन्होंने नारी का बयान किया है ।

नारी समाज का एक कोण है । जिससे चलकर ही प्रत्येक बिन्दु एकमेव होते है तथा आकृति का रूप लेते हैं । कथा साहित्य के क्षेत्र में मृदुला जी ने एक महत्वपूर्ण तथ्य यह समर्पित किया है कि पुरूष प्रधान समाज में भी नारी उसका ''सार'' है आपके बिना समाज अर्थहीन है, अधूरा है ।

सार्थकता का बोध :-

मृदुला जी के कथा साहित्य का मुख्य केन्द्र बिन्दु नारी ही है । एवं नारी के लिए किसी भी रूप में उसे दर्शाना मृदुला जी के लिए स्वाभाविक व सरल तथ्य है । नारी की असहायता, वेदना व संघर्ष की गाथा को मृदुला जी ने अपने शब्दों में बखूबी जाहिर किया है । नारी को प्रेमावास्था और संघर्ष की मूर्ति का तमगा देकर इन्होंने उसे सार्थक पहल की है । तथा समाज में एक उपयुक्त स्थान दिया है ।

''मनीषा कला महत्व में लाये निःसहाय रोष में आंसू आंखों में भरे, वहीं बैठी रही । आगे एक शब्द भी नहीं लिख पायी ।''[1]

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''उसके हिस्से की धूप'', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृष्ठ सं. : 140

<u>नारी की अमिट कहानी</u> :-

भारतीय साहित्यकारों की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे किसी न किसी रूप में नारी को दर्शाते रहे है, समाज का प्रत्येक भाग नारी के कर्तव्यों से अछूता नहीं रहा है । नारी का चित्रण बड़ी ही धार्मिकता के साथ भी उन्होंने प्रदर्शित किया है । स्त्री को वेदना की अनुभूति तो होती है परंतु वह उसके इर्द-गिर्द रहकर भी जीवंत रहती है और इनमें सबसे बड़ी बात थी समाज में वह अपनी प्रतिष्ठा कायम किये हुये है।

आज के इस इस भौतिकतावादी युग में भी नारी सामाजिक व आर्थिक पहलूओं की पहिचान है आज जिस रूप में हम उसे देखते है वह उसका बाह्य रूप ही जबकि यदि अंदर खोजें तो वह बड़े सुंदर रूप में हमें दिखाई देती है । मृदुला जी ने अपने साहित्य में नारी को एक भारतीय कार्यरत महिला के रूप में भी प्रदर्शित किया है ।

नारी को भारतीय संस्कृति की परिधि भी कहा जा सकता है क्योंकि कोई भी क्षेत्र क्यों न हो वह हमें बराबर दिशा निर्देशित करती है ।

नारी की सबसे बड़ी विशेषता भी यह है कि वह कष्टप्रद जीवन व्यतीत करने के बावजूद ही अपने दायित्वों से पीछे नहीं है ।

"वह जानती है कि अकेले अपने से शिशु का जन्म जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता । पर साथ ही यह भी जानती है कि वह एक मधुर दायित्व भरा जीवन पूरक अनुभव है जो वह नाहक छोड़ देना नहीं चाहती ।"[1]

हम देख सकते हैं कि व्यक्ति कितना संघर्षशील रहकर भी स्वयं में कर्त्तव्यनिष्ठा अर्जित कर सकता है । सदैव ही महिला अपने व अपने परिवार की स्थिति को बरकरार रखते हुये जीवन को व्यतीत करती है ।

नारी को मृदुला जी ने अपने कथा साहित्य में पुरूष की अर्धांगिनी या निजसहायक के रूप में अथवा एक सलाहकार के रूप में भी प्रदर्शित किया है ।

"क्यों, इतनी बार संकेत तो दिया था । कहना भी चाहता था पर सबकी राय थी की जब तक पूरी तैयारी न हो जाये किसी

---

(1) गर्ग, मृदुला, "उसके हिस्से की धूप", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृष्ठ सं. : 148

से कुछ न कहा जाये पत्नि से भी नहीं। क्या करता लाचारी थी । बात को गुप्त रखने के लिए एक तरह से हम जवान दे चुके थे ।''(1)

''मनीषा यदि जरा भी प्रोत्साहन देती, दिलचस्पी लेती, प्रश्न करती तो बावजूद जबाव देने के मधुकर उससे तब नहीं तो बहुत कुछ कह जाता ।''(2)

मृदुला जी ने स्वयं भी यह माना है कि नारी के बिना जीवन नहीं पुरूष का जीवन अधूरा है और यदि पुरुष नारी को वह सम्मान भी नहीं दे तो भी वह अपना जीवन अपने विचार सदैव परिवार को एक सूत्र में बांधने और सहजता से चलाने में व्यतीत कर देती है । यही पहल भी मृदुला जी ने अपने कथा साहित्य में की है ।

राष्ट्रीयता का प्रेमभाव :-

''अनित्य'' नामक अपनी कहानी में भी नारी की भूमिका को मृदुला जी ने अत्यधिक महत्ता प्रदान की है । इसी प्रकार से -''देश के युवा वर्ग और विशेषकर नारी की ताकत कोई

(1) गर्ग, मृदुला, ''उसके हिस्से की धूप'', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृष्ठ सं. : 145

(2) गर्ग, मृदुला, ''उसके हिस्से की धूप'', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृष्ठ सं. : 172

छोटी-मोटी ताकत नहीं है संगठन के साथ मोर्चा लेगें तो व्यवस्था को उनकी बात सुननी ही होगी ।''(1) ऐसी आम क्रान्तियां पहले भी हो चुकी हैं ।''

मृदुला जी ने अपने साहित्य के कुछ पृष्ठ राष्ट्रीयता व राष्ट्रीय आंदोलन से लिखे है । जिसमें हमारी संस्कृति, सभ्यता सीधे प्रत्यक्ष रूप में मानवीयता से जुड़ गई है ।

''अनित्य'' में भी मृदुला जी ने सर्वाधिक महत्व राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका पर ही दिया है ।

''सहसा खड़े होकर उसने (शुभा) जोर-जोर से वन्देमातरम् का नारा लगाना शुरू कर दिया था । उसकी देखादेखी बैठक के बाकी लड़के भी वन्देमातरम् चिल्लाने लगे । फिर क्या था । सामने के बाई से प्रतिध्वनि की तरह नारा गूंजा फिर बगल के बाई............. क्या समां था ।''(2)

इस तरह की बातें और तथ्य अक्सर मृदुला जी के स्वतंत्रता से ओतप्रोत साहित्य में प्राप्त होते हैं । स्वतंत्रता भी महिलाओं का मूल मंत्र है ।

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''उसके हिस्से की धूप'', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996 पृष्ठ सं. : 145

(2) गर्ग, मृदुला, ''अनित्य'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998 पृष्ठ सं. : 123

<u>नारी शक्ति का शोषण</u> :-

समाज में नारी शोषण के पश्चात् नारी जगत शक्ति रूप से प्रदर्शित हुआ है । मृदुला जी ने एक महिला कथाकार होने का गौरव अर्जित किया है उन्होंने नारी की दशा को सबसे नजदीकी से अध्ययन करके अपनी कहानियों को उद्बोधित किया है । जिससे कथायें सशक्त हो गई हैं । नारी शोषण व संघर्ष को मृदुला जी ने अपनी पृष्ठभूमि बनाया है । शोषण सिर्फ कार्यशील महिलाओं का ही नहीं, यह तो सम्पूर्ण नारी जाति की नियति है । भारतीय नारी स्वयंसिद्धा तो कहलाती है परंतु वह किसी न किसी रूप में अपने परिवार या पति के ऊपर निर्भर अवश्य रहती है । वह स्वयं बाती की तरह जलकर समाज को अभिप्रेरण की दीपज्योति दिखाती है ।

नारी के विचार सदैव एक मुक्ति की चाह में स्वच्छंद उन्मुक्त होने का प्रत्यन करते हैं । स्त्री पारिवारिक उत्तरदायित्वों की बलिवेदी पर वह अपने सपनों की बलि चढ़ा देती है । वह कर्त्तव्यबोध के नाम अपनी इच्छाओं को भी नजरअंदाज कर देती है उसके सामने कई ऐसे सवाल उठते हैं जिससे वह काफी टूट

जाती है । उसका शोषण वास्तविक रूप से उसका शोषण न होकर सामाजिक व्यवस्था का शोषण है जिसमें हम सभी निवास करते हैं, यह हमारे जीवन को किसी न किसी रूप को प्रभावित तो करती ही है । यदि समाज में रहकर हमारा पारिवारिक जीवन स्वस्थ और सहज न हो तो जीवन विश्रृंखलित हो जाता है । नारी कितनी ही सहज क्यों न हो वह किसी न किसी रूप में समाज के विविध पहलूओं में एक समान रहती ही है ।

नारी विचारों को ससम्मान अंगीकार करने के लिये नारी को समाज से संघर्ष भी करना होता है । समाज के लोग उसे स्वीकार करने या उसके विचारों को जानने सुनने की बजाय उसे नजर अंदाज करने की कोशिश करते रहते हैं । ऐसे लोगों में स्वार्थी तत्व अधिक संख्या में जुड़े रहते हैं जो सभी नारी जाति को अच्छी निगाहों से नहीं देखते।

औरत का जीवन त्याग तपस्या का जीवन है । वह त्याग की भावना के साथ अपना जीवन व्यतीत करती है । सदैव अपने परिवार के लिए ही सोचती है मापदंडो की सहारे की छड़ी को भी वह कभी-कभी नई सोच के साथ समाज के सामने प्रस्तुत होती

है । इससे समाज में नारी की छवि एवं नवीन विचारों वाली भी है । हाँ यह हो सकता है कि उसके नये विचार समाज के गले ही न उतरते हो ।

पारदर्शिता :-

मृदुला जी के कथा साहित्य में हमें पारदर्शिता का भी बोध होता है । मनुष्य का जीवन समाज के बंधनों में बंधकर भी स्वयं की जिम्मेदारियों से भी वाकिफ होता है । लेकिन कभी-कभी वह स्वयं को अकेला व एकाकी महसूस करता है क्योंकि ऐसा उसे तब लगता है जब उसके अपने ही उसे कोई मद्द नहीं करते हैं ।

मृदुला जी ने उपन्यासों में पारदर्शिता सम्बन्धों के रूप में प्रदर्शित किये । यह संबंध क्या हैं पति-पत्नि के हो या पारिवारिक के किसी अन्य सदस्यों के साथ संबंध हो नैतिक मापदंडों के परिवर्तित होने के बावजूद भी हमें उन बंधनों में बंधना ही होता है जो रीति-रिवाजों के रहते हमें उद्बोधित करते रहते हैं ।[1]

(1) डॉ. गुप्त, रामकृष्ण : 'समाज में नारी चेतना : एक आलोचनात्मक अध्ययन' शोध प्रबंध पृष्ठ : 47

स्वच्छ मधुर संबंधों का होना भी समाज की उन्नति के लिए परमावश्यक होता है । यही कारण है कि मृदुला जी ने अपनी साहित्यिक यात्रा में पति-पत्नि, मित्र व समाज के जिन लोगों के संबंधों की गूढ़ता और उससे पारदर्शिता का बोध हमें कराया है । वह इनके तथ्य संबंधी विचारों की पक्षधर तो है परंतु उसमें उन्मुक्त विचार भी वे पसंद करती हैं । महिला की अनुभूति का भी हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ता है । पारम्परिक संवेदना और संबंधों को साहित्यकारों ने प्रमुख स्थान दिया है और नवीनता के साथ उसकी आसक्ति प्रदर्शित की है ।

"मैं उसका इंतजार करती रही और उसे रोका भी लेकिन उसने यह कहकर की मेरा इंतजार ही करना ....।"[1]

समाज के डर से अथवा अपनी वैचारिक अनुभूति के लिए भी हम स्त्री से दूर रहने की कोशिश करते रहते हैं लेकिन क्या यह स्त्री के मन के अनुरूप होता -"नहीं" हम समाज को यह कहकर सावधान हो जाते हैं कि क्या यह गलत है लेकिन यही पर कुछ लोग हमें गलत बना पाठ पढ़ाकर, दिशा रहित बना

---

(1) गर्ग, मृदुला, "समागम", हिन्द पॉकिट बुक्स, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृ. सं. : 45

देते हैं । यही सबक हमारे जीवन में अंधकार ला देता है और हम भटकते हुये इधर- उधर घूमते रहते हैं ।

"सहसा उसका मन अपने प्रति गहरी करूणा से भर आया । उस मानसिक संतोष से बचाने के लिए वह कितना बड़ा बलिदान दे रहा है ।- उसने करूणा से भी धीमे टूटे स्वर में कहा ।"[1]

किसी भी परिस्थिति में हमें यदि कोई सहानुभूति के सागर में नहला दे अथवा हमें कोई सांत्वना प्रदान कर दे तो यह हमारे टूटन में अपार आत्मबल भर देता है भले ही उसका प्रभाव अधिक लम्बे समय तक न हो ।

मृदुला जी ने अपनी विचारों की श्रृंखला उपन्यासों के इस तरह बहायी है कि हमें नित् नये-नये जीवन आयामों का प्रभाव व उसका ज्ञान पढ़ने को मिलता है। यही कारण है कि आज के दौर से वह सशक्त लेखनी की अधिकारी है । मृदुला जी का चिंतन समाज के दौर में सहज और सरल होने के साथ गहन और स्वचिंतन के लिए भी आवश्यक है । यही कारण है कि

---

(1) गर्ग, मृदुला, "टुकड़ा-टुकड़ा आदमी", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1995 पृष्ठ सं. : 112

आज के दौर में उनका साहित्य हमें दिशा निर्देशित करता है स्वयं वह लेखक के रूप में नहीं कथा पात्र के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हैं । "ओह महेश तुम नहीं समझ सकते । मैं मर चुकी हूं और दुबरा जन्म लिया है तुम मेरी मौत दुख करो, पुर्नजन्म भगवान के हाथों में है । महेश को लगा आस-पास उड़ रहे रूई के रोयो की तरह वह भी आजाद है ।"(1) आजादी शब्द का एक सशक्त ढंग से इन्होंने विचार किया और पात्र को भी एहसास कराया कि वह क्यों ऐसा विचार कर रहा है ।

मृदुला जी ने अपने कई उपन्यासों में नारी की प्रारंभिकता पर भी विचार को दर्शाया है । उनके अनुसार नारी को आज सम्पूर्ण दुनिया में पूज्यता के रूप में पूजा जा रहा है और वह मनुष्य के प्रत्येक कार्य में अपने को सहभागी मानती है । उन्होंने अपने उपन्यास "कठगुलाब" से भी अपनी यथार्थवादी लेखनी को प्रदर्शित किया है ।

"नहीं, मैं मानती हूँ कि न्याय करके ही भगवान ने उसे स्वर्ग भेजा था । भीम की गदा से चोट खाकर वह अपाहिज बन, इतने दिन दर्द में तड़पता रहा ।"(2)

---

(1) गर्ग, मृदुला, "टुकड़ा-टुकड़ा आदमी", "अवकाश" कहानी से उद्धृत नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1995 पृष्ठ सं. : 55

(2) गर्ग, मृदुला, "कठगुलाब", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृ. सं. : 150

मृदुला जी ने अपनी नारकीय जीवन की दुनिया में मनुष्य के अपाहिज होने को भी भगवान की देन ही बताया है वह कहती हैं कि पिछले जन्म की करनी का प्रभाव है जो आज हम भुगत रहे है और समाज में व्याप्त कुरीतियां भी नरक के समान ही हैं जिसमें हम लोग जीवित रहते हुये भी कष्टदायी जीवन व्यतीत करते हैं । हम सब कुछ जानते हुये भी यह जीवन जीने को मजबूर हैं । हमारी मजबूरी ही मानों की ऐसा जीवन हमें देखने और व्यतीत होने को मिल रहा है।

लेखक का प्रारंभिक जीवन कई मुसीबतों और घटनाओं से होकर गुजरा है जिस कारण से उनके जीवन पर उन्हीं घटनाओं का पूरा प्रभाव दिखलाई देता है जिसके द्वारा उन पर जो आपत्तियां आयीं थी प्रारम्भिक दौर काफी संघर्ष से बीतने के कारण ही उनकी अधिकांश पुस्तकों में काफी पैनापन भी दिखलाई देता है । तिरस्कार और अनुभूति के बीच भाग की सतह पर चल रही लेखिका को समाज के दोनों ही पृष्ठों को ध्यान में रखना होता है । इसी को आधार मानकर वह आगे बढ़ती हैं ।

मृदुला जी का कथा साहित्य जीवन रसो से ओतप्रोत है तथा वर्तमान की जीवन शैली को भी अपने में समेटे हुये है ।

मृदुला जी ने अपनी आंतरिक जीवन शैली को भी उपन्यासों में यत्रतत्र प्रदर्शित किया है, प्रत्येक पात्र अपनी-अपनी भाषा बोलते तो है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वह प्रत्यक्षत: किसी के हाथ की कठपुतली बने बैठे हैं । यही कारण है कि मृदुला जी का कथा साहित्य सजीवता की परिभाषा में आकर खड़ा हो गया है । लेखक के अपनत्व और नजदीकी का परिणाम ही यह होता है । जिससे हमारा सारा का सारा ध्यान उसकी आख्या और व्याख्यानों पर चला जाता है ।[1]

संघर्ष और स्पष्ट वक्ता की परिमिति हमें उनके प्रत्येक उपन्यासों में दिखाई देती है । ''औरत-मर्द में कोई फर्क नहीं होता'' माँ कहती गई थी ।[2] ''अब इस नमीता के हाथ में ताकत आयी है तो वह भी अपने पति जितनी क्रूर हो जायेगी, और तू; समझती क्या है तू मर्द को जिंदगी से निकाल देगी तो महफूस हो जायेगी ।''[3]

उन्होंने अपने मर्द के प्रति संघर्ष का बिगुल बजा दिया और चाहकर भी वह ऐसा नहीं कर सकती है क्योंकि उसमें

---

(1) शोद्यार्थी की स्वयं की सोच उद्घृत है ।

(2) गर्ग, मृदुला, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 168-169

(3) गर्ग, मृदुला, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 168

संस्कारों में ही ऐसा नहीं है क्योंकि-उसकी माँ ने ही कहा है कि औरत और मर्द में कोई फर्क नहीं रहता, दोनों एक चक्र के हिस्से हैं । यदि हम दोनों विचारधारा को अपने मस्तिष्क में लाये हो तो भी हमारी विचार शक्ति हमारे आत्म बोध को ललकारती अवश्य है । यही कारण भी है कि लेखिका ने संघर्ष और पछतावे के बाद भी परिवार के सदस्यों या पति को गले से लगाया है क्योंकि वही तो उसका सामाजिक आधार है यदि वह नहीं हो तो फिर उसका जीवन तो अधूरा ही रह सकता है ।

मृदुला जी ने जीवन के भावों को बड़ी ही जीवंतता से प्रस्तुत किया है । जीवन में आने वाले उतार चढ़ावों के प्रति हम कितने सजग रहते हैं, जिससे हमारा जीवन भी प्रभावित होता है । संघर्ष करते हुये यदि हम अपनी शक्ति के सहारे दूसरों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करें तो यह गलत भी होगा और न्यायप्रिय भी नहीं होगा ।

''अश्रुविजलित माँ ने कहा- ''दुश्मन को दु:ख पहुंचाकर खुश होना गलत है, खुद हमारी आत्मा के लिए नुकसानदेह है । तुमने उसके लिए सजा दी, अच्छा किया पर उसकी तकलीफ पर खुश क्यों होती हो, फिर तुझमें और उसमें फर्क क्या रहा?''(1)

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 168 से उद्धृत

ऐसा देखने में भी आया है कि हमारी आत्मा किसी कि मद्द तो करती है लेकिन उसके बदले में हम उससे कुछ चाहते भी हैं । चाहे वह हमारी मदद शारीरिक रूप से करें अथवा मानसिक रूप से करें अवश्य चाहे उसे इसके लिए कुछ भी करना पड़े ।

"मर्दो को देखते ही उन्हें पीटने का मन करता था लेकिन एकदम लात-घूंसों से मारने की बात मैं नहीं कर रही हूं । उनकी बात का सफल विरोध करने की, बहस में उन्हें हराने की तिरस्कृत करके उन्हें तिलमिलाने की तीव्र ललक उनमें उठती थी ।"[1]

दुनिया में नारी स्वयं अपने साम्यर्थ पर ही जीवन की संघर्ष गाथा में अपने आप को झौंकती है वह यह नहीं सोचती कि इसका परिणाम अच्छा होगा या बुरा होगा। हिन्दुस्तानी नारियों की चरित्र गाथा ही समाज को सुधारने में अधिकांशतः व्यतीत होती रही है । "एशिया में कुछ औरतों की तरक्की या पद हांसिल करने की बात हैरत अंगेज तरीके से हुई है लेकिन बांकी औरतों

---

(1) गर्ग, मृदुला, "कठगुलाब", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 179 से उद्धृत

के कंधों पर चढ़कर ही हुई है ।''[1] उस यथास्थिति को बनाये रखना चाहती है क्योंकि वह आपके हित में है । अत: विशेष रूप से देखे तो नारी की यह लड़ाई ''आकर्षण, प्रेम, समर्पण, स्वामित्व, अस्तित्व, अस्मिता और आजादी की लड़ाई है, सामान्यकरण असम्भव है, इसीलिये होना चाहिये यह बात करना फिजूल था .... ।''[2] इस प्रकार से हमें अपने सुधार की बात करना ही श्रेयस्कर लगता है और शेष समाज सुधार की बात हमें बैमानी लगती है । लेकिन हम और हमारा समाज ऐसा नहीं सोचता वह कहीं न कहीं भारतीय नारी को एक आधार स्त्री के रूप में देखता है और वह चाहता है कि वह आगे आकर हमारी सहायता करें तथा विकास की राह में हमारे साथ हो ।

''भारतीय नारी इतनी आसानी से पल्ला कहा छोड़ती है, नमिता को पता होगा कि उसके पति का हिस्सा उसे नहीं उसके बेटे को मिला है । बाद में इसका राज खुल गया''[3] मृदुला जी ने अपने साहित्य को समाज की दशा और उसके सुधार की

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 183-184 से उद्धृत

(2) गर्ग, मृदुला, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 173 से उद्धृत

(3) गर्ग, मृदुला, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 185 से उद्धृत

स्थिति पर लाकर खड़ा कर ही दिया है । तभी तो हम भी बरबस ही इस विषय को सोचने पर ही मजबूर हो जाते हैं । हम परिवार के साथ रहकर भी यह चाहते है कि हमारी भी कोई मदद करे, हमारा कोई कहना माने लेकिन जब यह स्थिति नहीं हो पाती है तो हम सर्वथा संघर्ष की स्थिति में आ जाते हैं । "तुमने उस पर तभी बार किया जब वह कमजोर व अपंग था, तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकता था । जब तक वह तुम्हें पालता रहा, तुम उसे आड़ देती रही । पहले की शक्ति चूक गई तभी तुम्हें उसे गलती की सजा देने की सूजी । तुम्हारा उसे तड़पाना, प्रतिशोध नहीं मौकापरस्ती । मैं तुम्हें कभी माफ नहीं कर सकती ।"[1] नारी ही नारी के विरूद्ध आवाज उठाती रही है और वह किसी न किसी रूप में हमारे लिए सुधारक का कार्य करती है । हम न चाहकर भी उसका यह मानना है कि हमारे बीच जो भी कुछ रहा है वह महज़ एक गलत फहमी थी और हमने उसे सुधार लिया है अब सम्बन्ध काफी मधुर है ।

लेकिन यह मधुर सम्बन्ध कभी-कभी मधुर नहीं रहते वह उद्वेग में निराशाजनक स्थिति में पहुंच ही जाते है । ऐसी

(1) गर्ग, मृदुला, "अनित्य", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 194 से उद्धृत

स्थिति में उन्हें ठीक करना एक कठिन कार्य सा लगता है । तिरस्कार से एक अच्छा-खासा मनुष्य क्षीण-क्षीण होकर इधर -उधर घूमता रहता है । तिरस्कार से तिक्त ऐसे असभ्य शब्द बोलते मैने खुद को पहले कभी नहीं सुना था। पर मेरा उद्दाम आवेग अब उस जगह जा पहुंचा था जहॉ नीरजा को चोट देकर तिलमिला देने के सिवा कोई आश्वस्ति बाकी नहीं थी। पर चोट खायी किसने? अपने वार से घायल हुआ केवल मैं स्वयं ।''(1)

यानि की हम किसी को घायल करने के लिये उत्प्रेरित रहते है लेकिन शायद हम भी स्वंय उसी अवस्था में आ जाते है जिसका कोई अर्थ नहीं होता । हमें यह देखना आवश्यक होता है कि इससे कौन आहत हो रहा है और कौन नहीं । हमें स्वंय के बारे में सोचते हुये भी दूसरो का भी ध्यान रखना चाहिये क्योंकि वह हमारी ही तरह एक बेबस मानव जाति की ही छवि है । सामाजिक व्यवस्था की आत्मा है ।

(द) कथा-साहित्य का समग्र पक्ष एवं नारी की पहिचान :-

साहित्य समाज की दशा का दर्पण है । मृदुला जी के साहित्य पर जनसाधारण की विचारधारा का प्रभाव है। जहां तक

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''अनित्य'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. : 233 से उद्धृत

उनकी लेखन शैली का प्रश्न है–सहज, समरूप और शीघ्र समझने वाली है । हम देखते है कि मृदला जी का अधिकांश कृतित्व नारी जीवन के अनछूऐ पहलूओं को उजागर करता है जिस कारण से हम समाज की समस्त और जिम्मेदाराना बातों से भिज्ञन भी हो जाते है । पारिवारिक पक्ष, सामाजिक पक्ष को देखे तो अधिकतर यह दोनों ही पक्ष व्यक्ति के जीवन का अहम् हिस्सा होते है । जिसका प्रभाव भी प्रत्यक्ष रूप से हम सभी के जीवन पर पड़ता ही है ।

मृदुला के विचारो से हमें सामाजिक शब्द की विस्तृत आरव्या पढ़नें को मिलती है और शायद ही हम उसे पूर्व में पढ़ चुके होते है। साहित्य और समाज का आपसी मिलाप लगभग साम्य रूप से दृष्टिगोचर होता है । सामाजिक पक्ष सदैव धार्मिक चिंतन को भी आधार प्रदान करता है । यही कारण है कि उनके अधिकांश उपन्यासों में धार्मिक चिंतन का प्रभाव हमे दिरवाई देता है ।

परिवार के पक्ष को समझना और अपने मतानुसार उसे ढालना स्त्री की सबसे बड़ी परीक्षा होती है । पारिवारिक चिंतन और सामाजिक चिंतन को उन्होंने स्वयंसिद्धा बनकर ही अपनी

लेखनी के माध्यम से हमें इंगित कराया है। ''पर जिन्दगी का क्या करें। बच्चे दूर तो खुद-ब-खुद सहज, स्वत: ध्यान पति से हटकर उन पर केन्द्रित हो गया। उनकी जरूरत अपनी जरूरत बन गयी, उनके लालन-पालन की जिम्मेदारी ही हमारा सब कुछ है ।''[1]

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य भिन्न होता है भले ही वह इंगित न करें । अपनी जिन्दगी के खास मायने तब निकलते हैं जब हम सभी का कर्त्तव्य फलीभूत होता है। हम अपने जीवन के प्रति सजग रहते है और उनकी जिम्मेदारियों को निभाते हैं। व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए वृद्ध होते जाते हैं, जिंदगी गुजरने लगती है । अंतत: वह समय आ जाता है, जिसके सहारे ही हम अपना सर्वस्व शेष जीवन व्यतीत करते हैं। ''स्वत: तुम करते जाते हो वह, जो होना होता है। समय के साथ सिर्फ एक चीज़ तय है जिंदगी में, बूढ़े होना-मौत के अलावा, सिर्फ एक चीज तय है, समय का गुजरना ।''[2]

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''समागम''-बर्फ बनी बारिश, शीर्षक से उद्धृत, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998 पृष्ठ सं. : 53

(2) गर्ग, मृदुला, ''समागम''-बर्फ बनी बारिश, शीर्षक से उद्धृत, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998 पृष्ठ सं. : 55

मृदुला जी के उपन्यास साहित्य की विधा को एक पृथक अंजाम दिया है जिसके द्वारा वह अपनी एक अलग पहचान बना पायी है । जिन्दगी के प्रत्येक पहलूओं के बारे में इन्होंने सोचा है और वह भी स्वयं अपने तरीके से और सामान्यजन के विचारों के माध्यम से। मृदुला जी के जीवन परिचय में मैंने यह बात साफ तौर पर उद्घृत की है कि उनके जीवन और विचारों पर उनकी माताजी के आचार-विचारों की अमिट छाप है। जिसके कारण उनके जीवन में सटीक उदाहरण हमें सोचने को मजबूर करते हैं । माताजी उन्हें एक-एक बात स्मृतियों के रूप में प्रदान कर चुकी है वही स्मृतियाँ हमारे जीवन की गहराईयों को छूती हैं। कथा साहित्य को उन्होंने काफी कुछ प्रदान किया है, वाद-संवाद और स्मृतियों के नजरिये से हमें बैठने का जब भी मौका मिलता है हम स्मृतियों को ताजा करने लगते है । ऐसा भी देखा गया है कि हम अपने जीवन के उदाहरणों को आपस में मिल बांट लें तो सोचने में समय भी निकल सकता है और शायद ऐसा होता है कि लेकिन यदि इसे हम सीधे अंगीकार कर लें तो हमें उन्नति या संबल अवश्य ही प्राप्त हो सकते हैं।

जिन्दगी को आप जितने करीब से देखते हो वैसा रंग उसका नहीं होता, वह कई कोणों से अपना रूप पृथक-पृथक दिखलाती है । वह जानती थी, पास रहना साथ होना नहीं होता, फिर भी वह उसका साथ चाहती है । जिन्दगी में बार-बार चुनने को नहीं मिलता । बहुत पहले उन्होंने उन जैसे सभी ने अकेले रहना चुन लिया था तब से केवल समय आगे बढ़ा था वे खड़े रह गये थे ।[1]

पारिवारिक एवं सामाजिक चिन्तन पक्ष :-

स्वत: अपने को मानवीय जीवन मनुष्य के चिंतन पक्ष से ओतप्रोत है । एक समरसता के साथ ढालना और उसको समाज के विभिन्न कोणों से अंगीकार करना हमारा स्वभाव रहना चाहिए । उक्त पक्ष मृदुला जी के उपन्यासों व कथा साहित्य में प्रतिबिंबित होता है । मृदुला जी सामाजिकता की पक्षधर हैं और उन्होंने समाज के विभिन्न रूपों को विविध आयामों तक पहुँचाया है । धर्म और सामाजिक चिन्तन को मृदुला जी ने कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं के जरिये हमारे तक पहुँचाने की कोशिश की है ।

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''समागम''-बर्फ बनी बारिश, शीर्षक से उद्धृत, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998 पृष्ठ सं. : 48

परिवार की आधारशिला समाज रूपी गारे से चुनी जाती है और लेखक इसका स्त्रोत भी पारिवारिक चिन्तन एवं विचारों को ही मानती है। मृदुला जी ने अपने उपन्यास ''वंशज'' में पारिवारिक धरातल को ही सर्वमान्यता प्रदान की है। हमारे विचार सदैव भिन्न-भिन्न होने के कारण भी टकराहट या कड़वाहट पैदा हो जाती है इसके कारण भी हमें दु:ख-वेदना उठानी पड़ सकती है । यह कड़वाहट जब तक ठीक हो सकती जब तक हम उसे उसी रूप में स्वीकार नहीं कर लेते । सामाजिकता की दौड़ में भी हमें बराबरी से हिस्सा लेना पड़ सकता है । ''यह देह किसकी है'' और इसके निर्माण के बाद इसमें संस्कार कौन डाल देता है जिसका प्रभाव ही हमारे और परिवार पर पड़ जाता है''(1)

बच्चों और पत्नी की जबाबदारी उठाना समस्त पति की जिम्मेदारी होती है । सही मायनों में देखा जाए तो वह इसके लिए समर्थ नहीं होता तो पत्नी को ही इसके लिए सामर्थ्यवान बनना होता है । पत्नी द्वारा उठाई जाने वाली जिम्मेदारी को हमारा समाज गलत नजरिये से ही देखता आया है और जैसा भी करना चाहे वह उसे सदैव गलत ही करार देता है ।

---

(1) गिरिराज किशोर, ''यह देह किसकी है'' द्वारा उद्धृत विचार, पृष्ठ सं. : 125

समाज के निर्माण की बात प्रत्येक मनुष्य द्वारा नहीं सोची जाती है जिससे सामाजिक न्याय की बात खोखली ही नजर आती है, उसके द्वारा हमारा जीवन कष्टप्रद हो जाता है । हम यह कहते तो रहते हैं कि हमारे समाज में नारी की इज्जत होना चाहिए और उसे बराबरी का दर्जा दिया जाना चाहिए लेकिन ऐसा कुछ दिखलाई नहीं देता है क्योंकि सभ्य समाज यह कदापि नहीं चाहता कि कोई भी स्त्री उसके बराबरी का दर्जा पा जाए । वह या तो जानबूझकर करते होते हैं अथवा समाज के ठेकेदारों के माध्यम से कह देते हैं लेकिन इसके द्वारा समाज में व्याप्त बुराई और भी बढ़ सकती है । बढती हुई बुराई को रोकने में भी कठिनाई हो जाती है हमारा रचनाक्रम भी बिगड जाता है । इसका भी प्रभाव हमारे दैनिक जीवन के साथ-साथ सम्पूर्ण जिन्दगी पर भी दिखलाई देने लगता है । यही कारण है कि परिवार की आधारशिला सामाजिकता की धरोहर कही जाती है ।

धार्मिक व आर्थिक चिन्तन पक्ष :-

धार्मिक क्रियाकलाप हमारे समाज की पृष्ठभूमि से भी जुड़े रहते हैं । यदि रीति-रिवाज या धर्मशास्त्र का नियंत्रण नहीं हो तो हम एक बे-लगाम घोड़े की तरह ही भाग जा सकते हैं ।

इसका गलत प्रभाव हमारे वर्तमान की पारिवारिक स्थिति पर भी आर्थिक चिन्तन का पक्ष हमारे धार्मिक कट्टरता और सहिष्णुता को गहरा आघात पहुँचा सकता है । मृदुला जी ने अपनी पुस्तक ''कठगुलाब'' और ''अनित्य'' में धार्मिक रीति-रिवाजों के जरिये अपनी सटीक बात कहीं है । इस कारण से भी मृदुला जी को बेबाक लेखक की हैसियत प्राप्त है । धार्मिक सहिष्णुता के साथ-साथ परिवार के सदस्यों के मिल-जुलकर रहने और आर्थिक क्रियाकलापों को नियंत्रित रखते हुये धार्मिक कृत्यों पर अंकुश लगाना अनिवार्य है । हम जब तक स्वयं ही नहीं चाहें तो कोई कार्य नहीं कर सकते हैं ।

यदि हम अपना मन बनाकर चले कि हमें यह कार्य करना ही है तो फिर हमें इस कार्य में आने वाली सभी बाधाओं को दूर कर देना चाहिए । परिवार के सदस्यों का भी इसमें महत्वपूर्ण सहयोग होता है जिसके कारण हम कई सफल मोर्चों पर विफल हो जाते हैं । मृदुला जी ने अपने कथा साहित्य में धार्मिक सहिष्णुता और धार्मिक अंधविश्वास आदि के संदर्भों में अपने विचार व्यक्त किये हैं । धर्म शास्त्र में भी साहित्य के जरिये ही अपनी नियमावली को संयोजित किया है । यदि

साहित्य और समाज नहीं होता है तो कोई भी कार्य हमारी अर्थव्यवस्था का प्रतीक नहीं होता ।

राजनैतिक चिन्तन पक्ष :-

मृदुला जी के उपन्यासों ने राजनैतिक चिंतन पक्ष उभर कर सामने आया है क्योंकि मृदुला जी ने समाज के साथ-साथ राजनैतिक चिन्तन को भी अपनी कलम का सहारा बनाया है । इसमें उन्होंने राजनीति का प्रभाव हमारे दैनिक जीवन पर कैसा पड़ता है ? यह स्पष्ट किया है । नारी हमारी राजनीति का भी सक्रिय पक्ष रही है, वर्तमान समय में भी कई स्त्रियों द्वारा राजनीति में ससक्रिय राजनीति की जा रही है और वह हमारे समाज की भी दर्पण है।

राजनीतिक चिन्तन के माध्यम से उन्होंने हमें व्यवहारिकता का भी पाठ समझाया है । अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने राजनीति का प्रभाव हमारे परिवार के सदस्यों पर कैसे पड़ता है, अतीत में भी हमारे कई परिवार राजनीति और स्वतंत्रता आंदोलन के आधार स्तम्भ रहे हैं । राजनीति आज के युग की मांग रही है और समाज द्वारा भी इसे स्पष्टतः स्वीकार कर लिया गया है । लेकिन कई परिवार इस राजनीतिक समस्या से पीडित हुये हैं ।

इसका प्रभाव परिवार के बच्चों व सदस्यों पर भी पड़ता है। नेताओं के खोखलेपन को उजागर करती उनकी कलम आज सशक्त माध्यम सी बन गई है । आज की राजनीति दूसरे व्यक्ति को गिराकर आगे बढ़ने वाली हो गयी है भले ही इसके लिए उसे कुछ भी करना पड़े ।

राजनैतिक चिन्तन को मृदुला जी ने काफी गहराई और एकाग्रता के साथ उजागर किया है । उन्होंने ऐसी कुरीतियों पर कुठाराघात किया है जो कि हमारे समाज को खोखला करती जा रही है । इसका प्रभाव स्त्रियों पर तो पड़ता ही है साथ ही उनके परिवार और समाज पर भी पड़ता है । स्त्रियों द्वारा राजनीति में आने से उनका और अन्य स्त्रियों का भी शोषण होता है जिसका प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से हमारी जनता पर भी आता है । कई बुराईयॉ जन्म लेती जाती हैं । यह हमारी राजनीतिक कुरीतियों का परिचायक है।

<u>व्यवहारिक चिन्तन पक्ष</u> :-

व्यवहारिकता हमारे समाज के चिन्तन का विषय है । व्यवहारिकता समाज के प्रत्येक शील में उपस्थित रहती है । समाज के प्रत्येक दर्पण में व्यवहारिकता का बोध होता है ।

व्यवहारिक पक्ष सदैव समाज में मजबूत रहता है और उसके विचार हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण होते हैं । व्यवहारिक चिन्तनशील व्यक्ति सदैव हमारे लिए कार्यशील रहते हैं । मृदुलाजी ने अपने उपन्यासों में व्यवहारिक चिन्तन का प्रबल समर्थन किया है ।

"हमारा समाज व्यवहारिकता के दौर से तो गुजर रहा है परन्तु आधारित वस्तु और सामग्री कुछ और ही है । समाज में रहते हुये भी हम अनभिज्ञता के पल का स्वाद चख रहे हैं । जैसा कि विधि का न्याय है कि हमें इसका ज्ञान तब होता है जब इसका खामियाजा हमें ठोकर के रूप में सहन करना पड़ता है । व्यवहारिक व्यक्ति हमेशा समस्तजनों का दिल जीत लेता है और कभी भी विफल नहीं होता है । विफलता के अंधकार को चीर कर वह सफलता के निर्णयरूपी सौपान पर चढ़ता ही जाता है ।[1]

व्यवहारिकता, शीलता, समरसता और एकरूपता द्वारा हम समाज के प्रत्येक वर्ग का दिल जीत सकते हैं और इस पर

(1) गर्ग, मृदुला - लेखिका के व्यवहारिक चिन्तन पर व्यक्त विचार है । शोधार्थिनी द्वारा इसे अपने विचारों द्वारा सन्नियत किया गया है ।

हमारा अधिकार भी होता है क्योंकि हम अपने विचारों को उन व्यक्तियों पर थोप सकते हैं जो हमारे द्वारा अभिप्रेरित हैं । समाज के विकास में हमारे विचारों और व्यवहारशीलता का सर्वोपरि स्थान है । व्यवहारपरक व्यक्तियों को हम सदैव सही पाते हैं और उनके विचारों को हम भी स्वीकार करने की स्थिति में होते हैं यही कारण है कि हम सदा से ही इस चिन्तन पक्ष पर केवल बोलते ही रहे हैं उस पर अमल नहीं कर पाये हैं । मृदुला जी द्वारा समग्र साहित्य पर व्यवहारिकता की मोहर लगा देने से उसको और मजबूती मिलती है । हमारा समाज भी व्यवहारिक और व्यक्तिपरक होता जा रहा है और पुन: वह व्यवहारिकता की गर्त में धस जाता है । हम समाज में रहकर भी उसके सिद्धांतों को देखते हैं और वही खोखले रीति-रिवाजों को अपनाने को मजबूर हो जाते हैं ।

----::+::----

अध्याय तृतीय

महिला कथा साहित्य में नारी की पहिचान

अध्याय तृतीय

महिला कथा साहित्य में नारी की पहिचान

भारतीय समाज में नारी को सर्वोपरि स्थान प्रदान किया गया है । समाज में रहते हुये भी हम समाज से परे होते हैं । समाज हमारे कार्यो और व्यवस्थाओं का प्रतीक होता है । साहित्य में भी हमारी पहिचान किसी न किसी रूप में कायम है । महिला कथा साहित्यकारों ने भी अपनी लेखनी के माध्यम से सहज, सरल तो कभी जटिल प्रक्रियाओं के माध्यम से हमें सम्बोधित किया है जीवन का हर पल हर क्षण महत्वपूर्ण है । साहित्य चूंकि समाज का दर्पण है, इसी कारण प्रत्येक कथा साहित्य हमारे किसी न किसी व्यवस्था का प्रतीक होता है । सामाजिक, पारिवारिक व्यवस्था में रीति-रिवाज यानी परम्परा यानी प्रथा एक हिस्सा है । जिसे हमें परिवादी यानी नियमादि कहते हैं जो लिखित नहीं है ।

सामाजिक सभ्यतायें मानवीय संवदेनाओं का प्रतीक चिन्ह होती है। अपनी नियत संयमित भाषा के जरिये हम इन सभी मान्यताओं को प्राप्त कर लेते हैं जो हमारे लिये हितकारी रहती है । यही कारण है कि वर्तमान कथा साहित्य समाज के प्रत्येक कोणों को समेटे हुये है, जिसकी जानकारी हमें प्रत्येक स्थिति में प्राप्त होती रहती है ।

कथा साहित्य में घर-परिवार और समाज के सभी दायित्वों को समेटते हुये एवं अन्य बाह्य दायित्वों को वहन करते हुये भी अपनी 'चीख' और 'आवाज' को उपन्यासों की भाषा में शब्दबद्ध करने की कला को ही हमने पहिचाना है । कथा का है, यह एक बीता हुआ कल है । महिला कथाकारों की लेखनी संवेदनशीलता की चरम सीमा पर पहुंचकर हमें आंदोलित करती रहती है । आधुनिक महिला कथाकारों ने कई नवीन विसंगतियों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है । डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, डॉ. कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया आदि कथाकारों ने अपनी चतुर्दिक लेखनी से हमें संबोधित किया है ।

मृदुला जी का कथा साहित्य समग्र रूप से समाज की प्रत्येक दशाओं का वर्णन करता है । वह कभी तो ग्रामीण अंचल की नारी का चित्रण करता है तो कभी शहरी प्राध्यापिका की मजबूरियों का वर्णन, कभी हरियाली और पत्थरों में घूमता है तो कभी स्वतंत्रता के रहस्यबार को वर्णित करता है । मृदुला जी का कथा साहित्य हमें धार्मिक, रहस्यवाद, सभ्यता व संस्कृति के अध्यायों पर केन्द्रित करता है ।

जीवन में आने वाले उतार चढ़ावों को साहित्य के माध्यम से ही समाज हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है । कथा साहित्य की पहिचान होती

है कि वह सदैव हमें एक नया विषय प्रदान करता है । उसकी जानकारी हमें होती रहती है जो समाज के लिये भी लाभदायक होता है । शील की पहिचान ही कथा साहित्य की पहिचान होती है । क्योंकि कई महिला कथाकारों ने संवेदनशील भाषा से अपने जीवन का चित्रण भी प्रस्तुत किया है । जो कि वास्तविकता के धरातल पर सटीक बैठता है ।

"हिन्दी उपन्यास मूलतः सामाजिक यथार्थ का संवाहक रहा है । उपन्यास या कथा साहित्य के माध्यम से तत्युगीन भारतीय समाज का चित्र, पुनर्जागरण की चेतना तथा मूल्यों की ध्वनि प्रतिध्वनित होती है ।"[1] महिला कथाकारों के समान ही पुरूष कथा साहित्यकारों ने भी सामाजिक यथार्थ को पहचान, मानव मन के दुर्भेद्य तहों में झांकने का प्रथम प्रयास किया था । समाज के सापेक्षिक चित्रों को हम कहीं से भी देखे तो ज्ञात होता है कि जन-जीवन, उसके सारे सुख-दुःख, सारी ज्वलंत समस्याएं तथा उसके माध्यम से उठते सवाल उसमें विद्यमान है ।

यथार्थ के सहारे यथार्थ का सच्चा और विश्वसनीय चित्र उसमें अंकित है । मुंशी प्रेमचंद का नाम इस परम्परा के विरूद्ध समाजवादी और सामाजिक चेतना के उन्नायक उपन्यासकारों के रूप में लिया जाता है ।

---

(1) डॉ. यादव, उषा : "हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना", वर्ष : 1999, राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली, पृ. सं. : 18

महिला कथाकारों ने संपूर्ण समाज के साथ-साथ आंचलिक व क्षेत्रीय कथाओं को भी प्रासंगिकता प्रदान की है । चूंकि प्रत्येक कथाकार के जीवन का अपना क्षेत्र होता है और उसके जीवन की परिधि का क्षेत्र भी इधर-उधर सिमटकर रहता है इसी कारण से भी कई गांवों और जीवन की धड़कनों को यह समाये रहते हैं ।

कथाकार अपनी रचनाओं द्वारा मानवीय संवेदनाओं को वाणी देता है । आधुनिक कथाकारों के साथ-साथ हिन्दी गद्य विधा के प्रारंभिक कथाकार भी इसी भाषा को अभिप्रेरित करने में सहभागी रहे । उपन्यासों में मानव चरित्र ज्ञापित होता है । कथाकार किसी न किसी समाज की समस्या से जुड़े होने के कारण उनके कथा चित्र काफी प्रभावशाली रहते हैं । समाज की परिस्थितियों का विषयवार अध्ययन इन कथा साहित्य के माध्यम से हमें प्राप्त होता है ।

भारतीय कथाकारों द्वारा जीवन के प्रेम, विवाह, नारी संघर्ष और अन्य सामाजिक विषयों को उठाया गया है । जिसमें समाज की विसंगतियों और कुरीतियों की जानकारी पाठकों को स्वत: ही हो जाती है । मृदुला जी के उपन्यास आधुनिकता मानवीयकरण की धूरी पर चिन्हित है । इसी कारण से अन्य उपन्यासकारों की अपेक्षा इनके उपन्यास रहस्यवाद के अधिक निकट है ।

शकुंतला शुक्ल, इंदिरा नुपूर, शशिप्रभा शास्त्री, शांति जोशी, कंचनलता सब्बरवाल आदि कथाकारों ने भारतीय नारी के गौरवमय चरित्र परवनता तथा उनकी दृढ़ता का परिचय दिया है । इनके उपन्यासों में सहजता के साथ-साथ दृढ़ता के साथ अपनी बात निर्भीक वाणी में प्रस्तुत की गयी है ।

उपन्यास के पात्रों की जीवंतता, चित्रण और सद्गुणों को भी विशेषत: उभारा गया है । सुख-दु:ख की धूप-छांव में जीवन की गतिशीलता देखने को मिलती है । कहीं-कहीं लेखिकाओं ने स्त्री जीवन को समाज और माता-पिता के लिये एक खिलौना साबित करने की कोशिश की है ।

समाज की स्थिति एक अंधेरे मार्ग के समान होती है जिसमें स्त्री अपना जीवन जीती है । सामाजिकता के अंधेरे रास्तों में स्त्री जीवन को अभिशप्त जीवन बताया है । शांति जोशी के उपन्यास ''एक और बात'' में एक पृथक बात दिखाई देती है । उसमें तत्युगीन परिस्थितियों, विसंगतियों और भ्रष्टाचार को बेनकाब करने की सफल चेष्टा की है । आज से पूर्व भी इन वर्तमान को आजमा जा चुका है । देखा जाये तो समाज की विभिन्न विसंगतियों को महिला कथाकारों ने नये-नये रूप में लेखनीबद्ध किया है ।

प्रत्येक महिला कथाकारों का रचना विधान परंपरागत न होकर एक नए ढंग का है । मृदुला जी ने वस्तु वर्णन की सीधी साधी शैली को न अपनाकर बीच-बीच में स्मृति चित्रों का सहारा लिया है । लेखिका शशिप्रभा शास्त्री ने एक नारी की मानसिक कुंठाओं को वाणी दी है । जो अंततः अपने पुराने प्रेम की सहायता से ही अपने कुंठाग्रस्त मन को एक स्वस्थ दिशा दे पाती है । शोध के दौरान ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रत्येक महिला कथाकार ने नारी की प्रेमभावना और पीड़ा बोध के प्रति नारी मन की भावुकता के प्रति भी अपना दृष्टिकोण प्रदर्शित किया है । इसमें लेखन का ढंग सभी का परिवर्तित है ।

हिन्दी की महिला कथाकारों में डॉ. कृष्णा सोबती जी का अग्रगण्य स्थान है । इनका गद्य साहित्य आज भी काव्य की कोमलता एवं माधुर्य से आपूरित है । इनके उपन्यासों में नारी के प्रति विलक्षण खुलापन और बेबाक सहजता समाहित होकर नारी मन भी प्रवाहित है । सोबती जी के अधिकांश उपन्यासों में लोकजीवन एवं उसके सांस्कृतिक परिवेश की अतल गहराईयों तक उतरने वाली सूक्ष्म कला दृष्टि दिखायी देती है ।

नारी मन की अंतरंग गहराईयों को छूने में सोबती जी निष्णात् है । उनके उपन्यास ''डार से बिछुड़ी'', ''मित्रो मरगानी'', ''दिलो दानिश'' में पंजाबी तेवर के साथ-साथ लोकगाथाओं का चित्रण भी हमें

दिखायी देता है । उनके उपन्यासों में माधुर्य, भावाबेग और रेशमी संस्पर्श, आकर्षण उनके शिल्पज्ञ की विशेषता है ।

मृदुला गर्ग जी कथा साहित्य के अधिकांश पहलू स्त्री की सामाजिक स्थिति के समकक्ष है । जिसमें मन्नू भंडारी जी के उपन्यास भी है सम्मिलित है । मन्नू भंडारी ने अपनी रचनाओं में वृहत्तर सामाजिक आयाम को अपनाकर व्यापक जीवन दृष्टि का परिचय दिया है । उपन्यासों में गहरी संवेदनशीलता, अनुभव की सच्चाई और प्रस्तुति का अपना मौलिक कलात्मक अंदाज भरपूर दिखायी पड़ते हैं ।

''महाभोज'', ''स्वामी'' और ''एक इंच मुस्काम'' में तथा ''आपका बंटी'' में उन्होंने बच्चे की मुस्कान व मन:स्थिति का अत्यंत विस्तृत फलक पर चित्रांकन है । मृदुला जी ने संवेदनशीलता के साथ-साथ पात्रों को वर्ग अनुसार विभाजित भी किया है । भाषा की दृष्टि से सहज संप्रेषणीय भाषा और शिल्प की दृष्टि से सहज सपाट शिल्प से उपन्यास सज्जित है । राष्ट्र के ज्वलंत प्रश्नों को अनदेखा न कर सकने की जागरूकता मन्नू भंडारी जी के उपन्यासों में सृजन है । इसी प्रकार ग्रामीण अंचल की नारकीय स्थितियों का व्यापक चित्रण भी किया है । उपन्यास में व्यक्तिगत सुख-दुःख, अंतर्द्वन्द और आंतरिक भावों के साथ-साथ समकालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य का भी उद्घाटन है । भंडारी जी ने

राजनीति की औद्दात्य और गांभीर्य खोल की वास्तविकता की घिनौनी तसवीर को भी उन्होंने बड़ी सूक्ष्मता से उजागर किया है । महिला कथाकारों द्वारा समय-समय पर अपनी सोच को समाज के प्रत्येक पाठकों को उनकी सोच से जोड़ने की कोशिश की है । इन्हीं में एक सरल व सहज नाम है मालती जोशी जी का । मालती जी ने अपने उपन्यासों का आधार सीधे-सच्ची बात को बिना पच्चीकारी से बोझिल किये बिना प्रस्तुतीकरण को बनाया है । लेखन में कोई जटिलता और फैशन न होकर सच्चापन दिखायी देता है ।

मालती जी के कथ्य और शिल्प बड़ी सादगी, प्यारी मोहक और मन को छू लेने वाले हैं । पारिवारिक रिश्तों के उत्थान पतन की कहानी को मालती जोशी की कलम ने इतनी तन्मयता से उकेरा है कि उसकी विश्वसनीयता और सच्चाई प्रकट हुए बिना नहीं रही ।[1] समाज में हमारे आस-पास कुछ न कुछ अवश्य घटित होता रहता है । हमारी मानवीय संवेदना को कभी-कभी यह यथार्थ झकझोर कर भी रख देता है ।

हम सदैव यह सोचकर रह जाते हैं कि हम क्या करें जिससे हमारा आवश्यक जीवन हमारा सहरूप बन जाये । परिवार के रिश्तों को

---

(1) डॉ. यादव, उषा : ''हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना'', वर्ष : 1999, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. सं. : 93

मजबूती प्राप्त हो । मालती जोशी जी की कहानियां भी यथार्थता पर खरी उतरती है । मालती जोशी के दो लघु उपन्यास 'सहचारिणी' व 'राग-विराग' में एक संवेदनशील नारी की मर्मकथा का वर्णन किया गया हैं । कई प्रकार से उनका जीवन परिस्थितियों के घात-प्रतिघात के कारण इस तरह से अभिशप्त है कि वे नारी सुखी नहीं रह पाती । परिवार की क्षत्विक्षत् परिस्थिति को अपने अपार स्नेह से जोड़ने की कोशिश भारतीय स्त्री द्वारा की जाती रहती है ।

मूलत: स्त्री के जीवन में विवाह वह स्थिति है जो काफी सुखद है । कई उपन्यासों में जोशी ने अपनत्व को विवाह के परिणति कहा है । यही कारण है कि जोशी जी के उपन्यास 'ऋणानुबंध' के जरिये विकलांग संतान की वजह से उत्पन्न विषम पारिवारिक परिस्थिति का चित्रण किया है । परंपरा के अनुसार श्रीमती जोशी जी ने कथा सृष्टियां प्रस्तुत की है।

हिन्दी साहित्य की आधुनिक महिला कथाकारों में मंजुल भगत का महत्वपूर्ण स्थान है । नारी पात्रों के वैविध्य दर्शन को भगत जी ने आधुनिक अभिजात्य तरीके से प्रदर्शित किया है । उन्होंने समाज के सामान्य व मध्यमवर्गीय परिवार के वर्ग को अपनी कलम का विषय बनाया है । मालती जोशी जी ने परिवार और समाज के मध्य के बीच के

सम्बन्धों को दर्शाया है । उन्होंने अभावग्रस्त नारी के साथ-साथ सामान्य नारी के करूण क्रन्दन का परिणाम भी बताया है । "समर्पण का सुख" एक ऐसी पढ़ी-लिखी अभावग्रस्त नारी गीता की कथा है जो बेकार, अनपढ़ और निकम्मे पति में आत्मविश्वास जगाती है और उसे समर्थ बनाकर उसके प्रति पूरे विश्वास से समर्पित होकर सच्ची खुशी इज़हार करती है ।

हिन्दी साहित्य में क्रांति त्रिवेदी साहित्य की सूक्ष्म अनुभूतियों के साथ-साथ नारी की साक्षी अनुभूतियों को भी हमारे समक्ष प्रस्तुत करने में माहिर है। उनके उपन्यास "अशेष" में एकसरला नारी की अंतर्व्यथा समाहित है। "उनके दूसरे प्रमुख उपन्यास "कथा अनंता" में भी क्रांति त्रिवेदी जी ने नारी के मान-अपमान, पीड़ा प्रसन्नता सब समेटे वह निरंतर कुछ देती आगे बढ़ती जाती है, स्वयं विस्तृत होती रहती है । संसार के कलेवर को पुष्ट करती हुई निरोपित हो जाती है ।"[1]

मृदुला गर्ग के उपन्यासों की तरह ही मंजुलभगत, डॉ. कृष्णा सोबती, मालती जोशी और उषा प्रियंवदा आदि ने भी नारी को विविधा स्वरूपों में प्रस्तुत किया है । नारी को विभिन्न उपन्यासों की तरह ही

---

(1) डॉ. यादव, उषा : "हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना", वर्ष : 1999, राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली, पृ. सं. : 95

विविधा स्वरूप दर्शनीय माना गया है । उसके स्वभावों और कार्यो की श्रेणी को नवीन रूपों में प्रदर्शित किया गया है । मंजुल भगत के उपन्यास ''अनारों'' में उन्होंने निम्न मध्यम वर्ग को अपनी कलम का विषय बनाया है । इसमें उन्होंने आधुनिक आभिजात्य को चित्रित किया है । मंजुल जी ने उपन्यास की श्रेणी के माध्यम से दो विरोधी वर्गो पर समान दक्षता से लेखनी चलाकर अपने रचना कौशल का परिचय दिया है । इस प्रकार से निम्न मध्यवर्गीय नारी की पीड़ा को वाणी दी है ''अनारों'' के माध्यम से उन्होंने झुग्गी-झोपड़ी में रहकर ऊंची-ऊंची कोठियों में बरतन सफाई करने वाली महिला उस वर्ग की प्रतिनिधि है,''[1] जो आर्थिक अभावों, सामाजिक रूढ़ियों और पुरूष के अत्याचार तले दब-पिसकर अपनी जिजीविषा नहीं चुकने देती परन्तु स्वाभिमान के साथ जीने का संकल्प उसकी आंखों में कौधता रहता है ।

उक्त उपन्यास में निम्न मध्य वर्ग की सारी भयावह सच्चाइयां एक साथ उजागर हो रही है ।

समाज के निम्न वर्ग और मध्यमवर्गीय परिवारों के कार्यकलापों को उपन्यास की दृष्टि से अधिक श्रेष्ठता से स्पष्ट किया जा सकता है ।

---

(1) डॉ. यादव, उषा : ''हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना'', वर्ष : 1999, राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली, पृ. सं. : 96

मंजुल भगत जी के उपन्यासों में निम्न वर्ग के परिवेश और उसकी हकीकत से नकारा नहीं जा सकता, "काम ही ने तन ढका, काम ने ही पेट भरा । काम ही सुहाग, काम ही स्वामी ।"[1] नारी के मेहनत और ईमानदारी से काम करने से उसे कोई दबाव नहीं होता पलटकर जवाब देने का साहस उसे उसकी कर्मठता ने ही दिलाया है ।

आधुनिक उपन्यासकारों की श्रंखला में चंद्रकांता और उषा प्रियंवदा नाम सशक्त रूप से उभर कर सामने आया है । दोनों के ही लेखन में आधुनिक संस्कृति और पारंपरिक संस्कारों के बीच चलने वाले अंतर्द्वन्द को उभारता है । भावुकता और बौद्धिकता के ताने-बाने ने उनके कथ्य को एक अद्भुत धूप छांही आमादी है, पर भावुकता किंचित दबी और बौद्धिकता हावी होती स्पष्ट परिलक्षित होती है ।

"उसकी त्रासदी यह है कि सीता सावित्री वह बन नहीं सकती । देहरी पर दीप जलाकर तुलसी पौधा की परिक्रमा करती गृहलक्ष्मी भी वह नहीं हो सकती गृहलक्ष्मी भी वह नहीं हो सकती ।[2]

---

(1) भगत, मंजुल : "अनारो" के वाक्यांश से उदघृत
(2) चन्द्रकान्ता : उपन्यास - "अर्थान्तर" के वाक्यांश से उदघृत

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में परंपरावादी आचार संहिता के विरूद्ध व्यक्ति मन का विद्रोह और एक स्वस्थ स्वाभाविक जीवन जीने की उत्कट लालसा व्यक्त की गयी है । प्रियंवदा जी ने नारी की आत्मा की शांति, अकेलापन, घुटन व संवेदनशीलता को अपनी भावप्रवण शैली में व्यक्त हुयी है । उनका कहना है कि ज्यों-ज्यों आदमी के पास भौतिक सुख सुविधाएं बढ़ रही है, त्यों-त्यों उसके मन का सुख आत्मा की शांति विलीन होती जा रही है । उनके उपन्यास ''पचपन खबें लाल दीवारे'' में उषा प्रियंवदा जी ने आज के परिवर्तित परिवेश में पारिवारिक उत्तरदायित्वों का वहन करती, संघर्षो के उत्ताप से पल-पल झुलसती और बदली सामाजिक मान्यताओं के तहत एक नई प्रेमवृत्ति का पोषण करती दिखायी देती है । ''रूकोगी नहीं राधिका'' में जिस द्वंद्व का लेखिका ने बड़ी सूक्ष्मता, तन्मयता और मार्मिकता से अंकन किया है, वह पाठकों को भी अभिभूत किये बिना नहीं रहता । राधिका का निर्णय भी पाठक को गहरा स्वस्ति बोध कराता है ।

हिन्दी की महिला कथाकारों ने मालती परूलकर का विशिष्ट स्थान है । उनके उपन्यासों में अधिकांशतः मिलन बिछोह की स्थूल घटनाओं को उकेरा गया है । नारी के अंतर्द्धन्दों की कथा और प्रेम सम्बन्धों को आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करने की कला मालती परूलकर जी के पास हैं ।

नारी सम्बन्ध और उनका समाज में महत्व भारतीय उपन्यासों की धरोहर है । समाज में नारी के संबंधों और भारतीय समाज में उसकी सार्थकता को भी परूलकर जी ने उदात्त तरीके से प्रस्तुत किया है । सम्बन्धों के मध्य निरर्थकता को भी उन्होंने उजागर किया है । परूलकर जी के उपन्यासों में कई उपन्यासों की शैली देखने को मिलती है । स्वप्न शैली, नाटकीय शैली और उद्धाहरण शैली आदि का प्रयोग भी उपन्यासों में देखने को मिलता है । मालती परूलकर उन समर्थ कथा लेखिकाओं में से हैं जिन्होंने लीक से हटकर लेखन किया है । ''भ्रष्टाचार से ग्रस्त राजनीति, अस्पर्शता की समस्या, नारी शोषण आदि सम-सामयिक जीवन से जुड़े संदर्भो को प्रस्तुत करने उन्होंने अपनी संवेदना को वाणी ही है ।''(1)

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी की पहिचान :-

मृदुला गर्ग की भांति अन्य कथा लेखिकाओं ने अपनी लेखनी को कई विषयों से पोषित किया है । वह प्रत्येक क्षण को हमें अपनी भाषा शैली के माध्यम से प्रस्तुत करती है । मृदुला जी ने नारी को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करने की ज्यों हिम्मत की है शायद ही इतने सारे रूपों को किसी कथा लेखक ने प्रस्तुत किया हो । नारी को स्वयंसिद्धा उन्होंने बताया है

---

(1) परूलकर, मालती : ''जहाँ जो कहने वाली है'', उपन्यास से उद्धृत ।

और उसी अनुरूप ही उसके कार्यो को भी उन्होंने गिनाया है । ''वास्तव्य'' की प्रस्तुति मृदुला गर्ग जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से कथा साहित्य में प्रस्तुत की है ।

मुदुला जी ने अपने कथा साहित्य में नारी के एकांकीपन और जीवन व्यतीत करने का वास्तविक चित्रण किया है । जीवन की वास्तविकता को भी बड़े ही सहजता से प्रदर्शित किया है । कहीं-कहीं उन्होंने जीवन एकरूपता के साथ व्यतीत करने पर भी बल दिया है । जिसके लिये उन्होंने यह कहकर कि ''मैं बहुत व्यस्त हूँ'' मानवीय संतोष का अनुभव किया है । नारी संघर्ष की भाषा और उसकी जीवन झांकी को विविध रूपों में मृदुला जी ने प्रस्तुत किया है । जीवन की गहराइयों और चरम सीमा को क्षितिज की किंकर्तव्यविमूढ़ता के साथ प्रतिबिंवित किया है । मानवीय ध्रुवीकरण से वह कुछ न कुछ अवश्य सीखता है ।

मनुष्य स्वयं अपने ढंग से जीता है और उस परिचय को किसी न किसी रूप में अवश्य उतारता है । लेकिन वह कभी-कभी द्विउद्वेलित होकर भी जीता है और जीवन में आने वाले कई संघर्षो को मानव मन पर निर्भर रहता है लेकिन जीवन में आने वाले समस्त पहलूओं को वह अंगीकार करता है अथवा उससे दूर भाग सकता है । परन्तु यह उसकी कमजोरी होती है ।

नारी की मजबूरी उसकी साम्यर्थ के सामने कभी आड़े नहीं आती। वह अपनी सामर्थ्य के बलबूते पर अकेले ही लड़ सकती है और स्वयंसिद्धा की परिभाषा में आ जाती है ।

नारी को हम चाहे कितना सशक्त क्यों न कहे उसे हम संवेदनात्मक ही कह सकते हैं । नारी में समाज का दर्पण प्रतिबिंवित होता है और उसमें अंनत पहलूओं का समावेश रहता है । उसकी संवेदनात्मक शक्ति ही अहम होती है । मृदुला जी ने अपनी कथाओं को नारी संघर्ष की एक गाथा बनाया है । जब भी पुरूष प्रधान समाज नारी के सामने विरोध प्रदर्शित करता है, तब-तब वह शक्ति के रूप में हमारे सामने आयी है, इस प्रकार मृदुला जी ने कथा-साहित्य को संघर्षता के रूप में नया मोड़ दिया है । मृदुला जी ने शहरी नारी, ग्रामीण अनबूझी अनपढ़ महिला अथवा पुरूषों के बीच संघर्ष करती महिला, प्रत्येक मानवीय संवेदना को उन्होंने अपनी साहित्य की स्थायी धरोहर बनाया है । मृदुला जी ने स्वयंसिद्धा के रूप में नारी को अधिकांश ही उपन्यासों का पात्र रखा है । उपन्यास के समग्र पक्षों में नारी को बहुत सशक्त रूप में दर्शाया है । समाज के साथ-साथ इस मुकाम पर पहुंचाने का श्रेय भी नारी और उसके विचारों को जाता है ।

हमारा समाज परिवर्तनशील है और इसमें कई जीवन रूपी वस्तुयें स्थिर भी होती है । आन्तरिक वेदना, संघर्ष, सांमजस्य एवं तर्क आदि ही हमारा संबल है क्योंकि हम इसी के सहारे समाज में जीवित हैं । यदि हम इसके सहारे नहीं रहे तो सामाजिक जीवन मूल्य भी नष्ट हो सकता है । यह परिवर्तित भी हो सकते हैं । नारी जीवन भी आवावेग और विस्तृतता को मृदुला जी ने अधिक गहराई से उद्घृत किया है ।

मृदुला जी के उपन्यास मानवीयता के गुणों से भी सुसर्जगति भी है । लेकिन परिस्थितियों और परिवर्तनशीलता को हम विचारशील बनाते हैं। रचना प्रक्रिया हमारे लिये हितकारी होती है । मनुष्य समाज में रहकर सामाजिक वेदना को जानता है ।

इसी बीच समाज का संघर्ष भी सदैव जारी रहता है । समाज के संघर्ष के बीच कथा-साहित्य में आपसी सम्बन्ध विशेष रूप से देखने को मिलता है । संघर्ष दर संघर्ष और आगे समाज के विरूद्ध विचार रखते हुये भी आगे बढ़ने की प्रेरणा ही हमारा सबसे बड़ा संबल है । यही कारण है कि नारी में इस आगे बढ़ने के चरणों में किसी न किसी की प्रेरणा अथवा प्रेरक विचार भी अपनी आधारशिला हुआ करते हैं । मृदुला जी का कथा-साहित्य इस प्रकार में विचारों में ओतप्रोत है ।

हमारी समाज व्यवस्था में नारी का स्थान निरंक है निरंक से आशय बिना किसी स्थान के तो वह सामाजिक व्यवस्था में तो रह सकती है परंतु एक विचार व चिंतन का विषय पर स्थिर नहीं हो सकती है क्योंकि सोचने की बात है कि समाज के माध्यम से हमारा अस्तित्व है और यह समाज नारी के विविध रूप को वहीं मानेगा तो इसे हम चिंतन का विषय कैसे बना सकते हैं ।

चिंतनशील व्यक्ति सदैव किसी भी रूप में कभी भी अपने को ढालकर विचार व्यक्त कर सकता है । वह यह तथ्य साबित कर सकता है कि कौन सा तथ्य सही है और कौन-सा गलत ? चिंतन के साथ-साथ जीवन दर्शन में सदैव सूक्ष्मता, व्यापकता और गहनता होती है ।

मृदुला जी का कथा-साहित्य नारी चिंतन के मनोवैज्ञानिक रूप को मजबूत करता है । उनकी कथाओं का सार नारी जीवन के वृत्तांत को अग्रत्वरीत करता प्रतीत होती है । मृदुला जी ने अपने साहित्य के माध्यम से विविध आयामों के जरिये तथ्यों को मोड़ने की कोशिश लगातार की है । उनके साहित्य की विषय-वस्तु एक शोध का विषय रही है । नारी की दशाओं, चिंतन तथा सांमजस्य की वेदना को भी शोध का विषय बनाया जा सकता है । समाज के प्रत्येक आर्थिक व सामाजिक पहलू उसकी पृष्ठभूमि पर ही आधारित होता है ।

मृदुला जी ने अपने कथा-साहित्य में नारी के नवीन रूप को सदैव चित्रित किया है । उन्होंने नारी को चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी प्रत्येक के स्तंभ विचारों को उन्होंने अपनी साहित्य की पृष्ठभूमि बनाया है । समाज में आम नारी का जो स्थान है वह पत्थर को तराशकर जिस प्रकार से मूर्ति को रूप दिया जाता है उसी प्रकार से नारी भी तपकर संघर्ष के विरूद्ध बिगुल बजाकर हमारे सामने आती है ।

स्त्री को वेदना की मूर्ति कहा गया है और उसी वेदना के चलते वे समाज में जीवंत रहती है । स्त्री को वेदना की अनुभूति तो होती ही है परंतु वह उसके चारों ओर रहकर भी जीवंत रहती है, इनमें सबसे बड़ी बात यह है कि वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा कायम रखे हुये है । मृदुला जी ने अपने साहित्य में नारी को भारतीय कार्यरत् व श्रमिक महिला के रूप में भी प्रदर्शित किया है ।

नारी की सबसे बड़ी विशेषता भी यह है कि वह कष्टप्रद जीवन व्यतीत करने के बावजूद भी अपने दायित्वों से पीछे नहीं है । भारतीय स्त्री अपने व अपने परिवार की स्थिति को कारगार रखते हुये जीवन को व्यतीत करती है ।

नारी के बिना परिवार नहीं परिवार की संरचना स्त्री-पुरूष संबंधों पर भी निर्भर रहती है । यदि पुरूष नारी को वह सम्मान भी नहीं दे तो भी

वह अपना जीवन अपने विचार सदैव परिवार को एक सूत्र में बांधने और सहजता से चलाने में व्यतीत कर देती है ।

मृदुला जी का कथा-साहित्य नारी प्रधान तो है परंतु उसमें पुरूष प्रधान समाज के विरूद्ध एक वेदना और संघर्ष की गंध भी आती है । उन्होंने अपने साहित्य को नारी की महत्ता की कसौटी पर खरा उतारा है । मृदुला जी ने नारी और उसके पारिवारिक संबंधों को भी महत्ता प्रदान की है । क्योंकि नारी स्वतंत्र तो है परन्तु परोक्ष रूप में वह परिवार के रीति-रिवाजों से भी बंधी हुयी है । वह परिवार के लिये सदैव संघर्षरत् रहती है । नारी का रहन-सहन उसके परिवार की स्थिति को दर्शाता है।

समाज में रहकर नारी को कभी-कभी मानवीय संवेदना भी झेलनी होती है । नारी को हम सीता, अहिल्या और वर्तमान की नारियों में भी देख चुके हैं । मृदुला जी के नारी के बारे में विचार कुछ गहराई लिये हुये है जिससे हमें उनके अनकहे या छुपे हुये रहस्यवाद की भी परिकल्पना प्राप्त होती है । देखें तो ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें यथार्थता नही है परंतु ऐसा नहीं है । नारियों का चिंतन, उनका इतिहास एवं विचार एक शक्ति है ।

मृदुला जी ने स्त्री को समाज व परिवार का एक साथी तो माना है परंतु कहीं-कहीं पृथकता का बोध भी कराया है जिसमें स्त्री के पति

को अथवा परिवार के अन्य सदस्यों को इसकी जानकारी प्राप्त हो सके । कथाओं में नारी की वेदना स्वाभाविक है लेकिन मार्मिकता और मनोवैज्ञानिक पहलूओं को संवारना तथा उपन्यासों में उन्हें उतारना एक विशेष लक्ष्य है।

शोध के सन्दर्भ में सामाजिक स्थिति ही हमारी पीढ़ी का परिचायक होती है जिसकी पृष्ठभूमि में हम वर्तमान की कल्पना कर सकते हैं । इसी आधार पर हम अपने परिवार और समाज को भी देखते हैं । मृदुला जी ने नारी की सर्पादर्शक स्थिति और विवेचनात्मक परिस्थिति को हमारे समक्ष रखने की कोशिश की है । मृदुला जी ने पाराचरिक सहयोग को व्यवस्थित रूप से हमारे समक्ष भी रखा है । मृदुला जी ने आधुनिकता के संदर्भ में सम-सामयिकता को भी सामाजिक परिस्थिति से जुड़ा हुआ बताया है ।

जीवन के सिद्धांतों को अपने विचारों के माध्यम से मृदुला जी ने उपन्यासों में स्पष्ट किया गया है । मृदुला जी ने अपने कथा-साहित्य में छोटी-छोटी कहानियों को भी संदर्भित किया है । वर्तमान की समस्याओं और उसके प्रति अपनी जिम्मेदारियों से भी अवगत कराया है । इसी कारण से उनकी कथाये जीवन्त चित्रित सी लगती हैं ।

शोधार्थिनी ने परिलक्षित किया है कि नारी चिंतन का महत्व अधिक है, इसी दृष्टि से सामाजिक, आर्थिक, व्यवहारिक, धार्मिक परिवेशों

को भी अध्ययन की दृष्टि से सम्मिलित किया गया है । नारी पात्रों की अभिव्यंजना को भी शोध प्रबन्ध का माध्यम बनाया गया है ।

मानव जीवन सदैव ही ऊहापोह में रहकर ऐसा मोहपाश में बंध जाता है कि व अपने कर्तव्यों को भी भूल जाता है । वह कभी-कभी तो नारी के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भी भूल जाता है । इसी आधार पर ही नारी की भी उपेक्षा हो जाती है ।

महिला कथाकारों की आंतरिक वेदना का ही रूप उपन्यास के संयोजन में हमें प्राप्त होता है । उपन्यास के माध्यम से महिला कथाकार अपने जीवन एवं संबंधियों के जीवन का वृत्तांत हमारे समक्ष रखता है । नारी के विविध रूप और पहलूओं को हम उनके विचारों में पाते हैं । जीवन की परिस्थितियों का लेखा-जोखा भी हमारे समक्ष उपस्थित होता है। परिस्थितियों के सामने हम अपना मनोयोग पर लक्षर खो देते हैं । स्त्रियों की विवशता और वेदना के चलते हमें यदि उनके मनोयोग को देखें तो विचारों की श्रंखला से हम उसके संघर्ष को विराम दे सकते हैं । मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में निस्तब्ध अंधकार के मध्य एक प्रकाश व आशा की किरण का निराला अन्दाज दर्शाया है ।

----::+::----

अध्याय चतुर्थ

मृदुला गर्ग के समग्र रचना संसार का परिचय

अध्याय चतुर्थ

मृदुला गर्ग के समग्र रचना संसार का परिचय :-

मृदुला जी का साहित्य नारी को उसके असली मुकाम पर पहुंचाने और समाज में उसकी स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास है । उन्होंने अपने कथा साहित्य में नारी की पहिचान एक पृथक रूप से बनायी है । नारी चाहे वह ग्रामीण अंचल की हो, शहरी क्षेत्रों की अथवा कामकाजी या किसी सुसंस्कृत परिवार की हो, उन्होंने स्वयं को उनमें ढ़ालकर चित्रित किया है । उनका ऐसा सजीव चित्रण हमें उनके प्रत्येक उपन्यासों में देखने को मिलता है ।

इसी प्रकार महिला कथाकारों कृष्णा सोबती, कृष्णा अग्निहोत्री, मालती जोशी आदि ने भी महिलाओं का विविध प्रकार से चित्रण किया है। मृदुला जी "शहर के नाम" में एक अपनी अदभूत छाप छोड़ी है । एक उत्कट अनुभव, कृति का आधार केवल उसी तरह है, जिस तरह वृक्ष का आधार बीज माना जा सकता है । बीज को यदि उर्वर भूमि न मिले, सूर्य का प्रकाश और जल उपलब्ध न हो तो वह सदा-सदा के लिये सूखा बीज बना पड़ा रहेगा । हमें अपने अनुभव को मानवीय अर्न्तरात्मा की भूमि न मिले संवेदनात्मक ज्ञान का जल न मिले और सबसे बढ़कर कल्पना के

सूर्य का प्रकाश उत्प्रेरक न बने तो गीले कपड़े में बंधी मूंग की तरह वह अंकुरित तो हो जायेगा पर दो-तीन दिन के अन्दर वह मर जायेगा ।

"कुछ अनुभव ऐसे होते हैं जो केवल घटना बनकर नहीं घटते । समय के साथ धुंधले पड़ने के बचाय अधिक समृद्ध होते रहते हैं ।"[1]

मृदुला जी का कथा साहित्य अनुभव व संवेदनशीलता की धरातल पर खड़ा होकर यथार्थ पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है । अनुभव को समृद्ध बनाने में तीन मूल संवेदन शक्तियाँ काम में आती हैं - पहली : स्मृति, दूसरी कल्पना व तीसरी वांछा, इन तीनों संवेदन शक्तियों के द्वारा ही हमारा पूर्ण मानवीय यथार्थ हमारे समक्ष आता है । विगत में हुये अनुभवों की स्मृति नये अनुभव से आ मिलती है । अनुभूति की सीमा- रेखा कहीं सिकुड़ती है तो कहीं फैल जाती है । मानव स्मृति का अद्भूत संग्रहालय है । उसमें अनेकानेक ऐसे तथ्य सम्मलित रहते हैं, जिनका हम सचेत रूप से पुन: स्मरण नहीं करते ।

मनुष्य अपने जीवन को अपने कार्यकलापों से ही पुष्ट बनाता है। मानवीय जीवन शैली सदैव घटनाओं पर आधारित रहती है । घटित-घटना को जब-जब मैं स्मरण करती हूँ सदैव ही नवीन रंग रूप और सुगंध में

---

(1) मृदुला गर्ग -"शहर के नाम", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृष्ठ सं : 7 व 8 वर्ष : 2000

पाती हूँ । यही कारण है कि सदैव मृदुला जी के उपन्यासों व कहानियों में नये-नये आयाम दृष्टिगत होते हैं । सृजनशील कल्पना तो रचनाकार का स्वभावगत् धर्म है । उसी में सौंदर्य की अनुभूति होती है और यह रचनाकार का अनुभव वैयक्तिक न रहकर सार्वभौमिक हो जाता है ।

वांछा से तात्पर्य है, हमें जो चाहकर प्राप्त होता है । इसके अन्तर्गत अनुभव में एक और सूक्ष्म परिवर्तन देखने में आता है- "जो घट सकता था" वह नहीं और जो घटना चाहिये वह देखने की लालसा ही वांछा होती है ।

हम अपने जीवनकाल के अनुभव, संघर्ष, अध्ययन और भावनात्मक संवेदना को हम आकलन द्वारा एक निजी या विशिष्ट जीवन दृष्टि अर्जित करते हैं ।

उपन्यासों का वास्तविक धरातल कल्पना द्वारा समृद्ध अनुभव और पूर्वसंचित जीवन दृष्टि का बोध होता है । परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया द्वारा हमारे मानस में एक नये वांछित संसार की संरचना होती है । जो जीवन के समानांतर तो चलता है पर उसकी सीमा बिन्दुओं के बीच बंधा नहीं रहता ।

प्रत्येक पात्र के विकास का एक स्वभावगत् तर्क होता है, जो उसकी गति और दिशा को निर्धारित करता है । यह तर्क उसे मेरी

भावात्मक संवेदना और जीवन दृष्टि के समन्वय से बनी मानवीय चेतना से प्राप्त होता है । पर वह बौद्धिक न होकर पराबौद्धिक होता है ।

मृदुला जी के उपन्यासों में पात्रों की मार्मिकता के दर्शन होते हैं। उन्होंने पात्रों को प्रगतिवादी या समाजवादी की संज्ञा तो दी परंतु उनकी असमर्थता को भी दर्शाया है । जिन लोगों के व्यक्तित्व और जीवन का उद्‌देश्य सम्पदा, सामाजिक जनमर्यादा प्राप्त करना है, वे कितने भी प्रगतिवादी या समाजवादी दावे क्यों न कर लें, अपने या किसी और के कितने भी पीड़ादायक अनुभवों का चयन क्यों न कर डालें, अपने पात्रों को सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि बनाकर ही दम लें, फिर भी उनके उपन्यासों का मूल स्वर या संवेदना उपभोक्ता संस्कृति या महाजनी सभ्यता की महत्वाकांक्षाओं की रहेगी ।

साहित्य–सृजन एक विशिष्ट प्रकार की स्वभावगत् प्रक्रिया है, जिससे सृजनशील व्यक्ति चाहकर भी भरण नहीं पा सकता ।

नारी चित्रण और उसकी वेदना तथा संघर्ष कथा को मृदुला जी ने विशिष्ट रूप से उपन्यासों में प्रस्तुत किया है और यही कारण है कि एक कामकाजी महिला और ग्रामीण महिला के विचारों और उनके क्रियाकलापों को भी उन्होंने सही रूप से प्रदर्शित किया है ।

(अ) मृदुला जी की उपन्यास यात्रा :-

।। वंशज ।।

मृदुला गर्ग के आधुनिक एवं पारंपरिक सभ्यता में सेतु जैसे उपन्यासों पर आधारित एक और उपन्यास है-''वंशज'' जो हमारी वर्तमान सभ्यता पर आधारित होकर भी पुरातन सभ्यता से हमें जोड़ें हुये है । भारतीय संयुक्त परिवार हमारे परिवार के अन्य सदस्यों को सुरक्षा कवच तो प्रदान करता ही है साथ ही उसके संस्कारों के लिये भी उन्हें प्रेरित करता है।

सभ्यता से हटकर, नया रास्ता तलाश करने वालों को परिवार भयावह निस्संगता देता है । एक स्त्री परिवार का प्रमुख अंग बनकर अपने सास-ससुर एवं अन्य सदस्यों की सेवा तो करती ही है और आत्मीयता से सेवा करने के बावजूद भी वह पति का विश्वास अर्जित नहीं कर पाती है । पिता-पुत्र व पति-पत्नी तथा सास-बहू के इन अटूट रिश्तों पर आधारित इस उपन्यास में स्वयं मृदुला जी ने भी स्वयं को अंगीकार कर दिया है ।

इस संघर्ष में नारी अपने को अकेला तो पाती ही है परन्तु अपने लोगों के साथ की भी उसे आवश्यकता होती है । स्त्री

एक दुर्गास्वरूपा भी है जो एक नारी होकर भी समाज से सदैव टक्कर लेने के लिये तत्पर है ।

"वंशज" नामक उपन्यास में मृदुला जी ने नारी चेतना के साथ-साथ राजनीति और स्वतंत्रता के स्वर को भी मुखरित किया है । यही कारण है कि मृदुला जी का स्वर स्वयं ही तीव्र हो गया है और पृथक-पृथक विचारों को भी जन्म देता है । जिससे हमें उनके विभिन्न चरित्रों के विषयों पर भी ज्ञान प्राप्त होता है ।

"वंशज" उपन्यास में गांधी जी के स्वतंत्रता आंदोलन को भी मृदुला जी ने स्पष्ट किया है और उसे नवीन प्रेरणा भी प्रदान की है ।

मृदुला जी ने उपन्यास "वंशज" में मुसीबत का बयां भी किया है साथ ही उससे निपटने की भी बात बयां की है । उन्होंने अपने उपन्यास में एक विडम्बना भी बतायी है ।

"कितने दिन बाद जीवन में एक छोटी सी विजय पायी थी उसने । मुसीबतजदां इंसान की मद्द करने में कामयाब हुआ था । उससे बड़ी सफलता यह थी कि सविता का समर्थन पा गया था ।"[1]

(1) मृदुला गर्ग-"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. : 115 वर्ष : 1999

विरोध में नारी यदि किसी का समर्थन पा ले अथवा कोई आगे बढ़कर किसी की मद्द करें तो उससे बढ़कर कोई सफलता हो ही नहीं सकती क्योंकि मनुष्य सदैव अपने को अकेला पाकर व्यथित हो जाता है । लेकिन यदि हम घृणा, आक्रोश को अपने पास रखकर दूसरे परिजनों को कष्ट पहुंचाये तो सबसे गलत बात यही होगी कि हम अपने को सबके सामने नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे हैं ।

''रेवा समझती थी कि डैडी और सविता के लिए आक्रोश और घृणा पालकर, जो घाव सुधीर ने अपने हृदय पर लिये हैं, उन्हें समझा-बुझाकर या बहस करके नहीं भरा जा सकता ।''[1]

समाज की सहानुभूति जीतने के लिये हमें पारिवारिक जीवन में भी खुशी का माहौल फैलाना होगा जिससे सभी व्यक्ति आपस में परामर्श कर ही कोई कार्य करें । हमारे पृष्ठभूमि में यदि कोई गलत विवचार काबिज हो जाये तो वह समस्त परिवार की खुशियों में घृणा, नफरत और आपसी कलेष को पैदा कर देगा जिससे हम सभी परिवार के लोग व्यथित हो सकते हैं । खुशी का संसार नष्ट हो सकता है ।

---

(1) मृदुला गर्ग-''वंशज'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.:118 वर्ष : 1999

स्त्री पुरूष की उत्तर्राधिकारी होती है वास्तविक रूप से परंतु यदाकदा उसे इसका त्रुटिरूप में भी नुकसान उठाना होता है। ''वंशज'' उपन्यास में मृदुला जी ने स्त्री के उत्तराधिकारी के रूप में भी अपनी पहल की है । ''वंशज'' उपन्यास में अभिजात वर्ग की जन्मजात उत्तराधिकारी बिजनैसमैन के संसर्ग में आकर खुद को मानने लगी है । एक सुशिक्षित लड़की का उद्धार हो गया था । वे शुरू से मानते रहे है, औरत को आदमी जो चाहे बना सकता है । कर्त्तव्य परायण गृहिणी या बुद्धि-विहीन खिलौना है ।''[1]

स्त्री अपने को अकेला कब पाती है ? जब वह स्वयं कुछ करके दूसरों पर निर्भरता बिल्कुल नहीं रखना चाहती है, ऐसी स्थिति तब होती है जब हम स्वयं को समाज के प्रति पुष्ट बनाये ।

''मैं खिलाफ किसी चीज के नहीं हूँ । किस वक्त क्या करना नीति संगत है, यह परिस्थिति पर निर्भर करता है । सदैव परिस्थितियों पर निर्भर करता है ।[2] कि हम उसके अनुरूप अपने-आप को ढालते है अथवा नहीं जब हम दूसरे के साथ स्वयं

(1) मृदुला गर्ग-''वंशज'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.:148 वर्ष : 1999
(2) मृदुला गर्ग-''वंशज'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.:142 वर्ष : 1999

को समायोजित नहीं कर पाते तो सदैव कष्ट होता है लेकिन हम किसी दूसरे व्यक्ति का, जो हमारे परिवार का सदस्य नहीं है उसे परिवार के मामले में पड़ने की इजाजत नहीं देता है ।

"नहीं", शुक्ला साहब ने वितृष्णा के साथ कहा, "अपने घर के मामले में दूसरो को डालने की जरूरत नहीं है । मैं बिजनेस के किस्से में नहीं पड़ना चाहता ।"[1]

मृदुला जी के उपन्यास में संत्रास, घृणा और आक्रोश सभी देखने में मिलते हैं, यदि हम यह कहें कि इन सभी स्वभावों में हमारे भावों और विचारों का कोई स्थान नहीं है तो यह कहना उचित नहीं होगा ।

"भगवान तुम्हें सद्बुद्धि दे दें तो हमें क्या फिक्र, क्यों रहे ?[2] ईश्वर ने हम सभी को प्रेरणा से कार्य करने की शक्ति तो दी है परन्तु यदि हम इसका उपयोग न करें तो इसका फर्क हमें जीवन में अवश्य दिखायी देता है । हम चाहकर भी यह दर्शा नहीं सकते कि हम दुःखी हैं और इसका प्रभाव हमारे ऊपर पड़ रहा है । जीवन याथावर प्रकृति का भी रहता है और उसके अनुसार भी कभी-कभी कार्य करने लगते हैं ।

---

(1) मृदुला गर्ग-"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.:151 वर्ष : 1999

(2) मृदुला गर्ग-"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.:160 वर्ष : 1999

-संदीप ने धर्माभिमानी भाव से कहा, "हम बस यह चाहते हैं कि भगवान तुम्हें उसका सदुपयोग करना सिखा दे ।"(1)

"हमें मिलता वास्तव्य समर्थन भी हमारा संबल रहता है । हमें जो कुछ मिलता है, उससे ज्यादा चाहने या पाने की चाहत हमारे मन में सदैव बनी रहती है । लेकिन कभी-कभी यह चाहत खाली भी चली जाती है ।"(2)

"अपनी जानकारी की वजह से, उनके मद्‌दगार रहे थे और काफी फायदा करवाते रहे थे । उन लोगों की बात वे नहीं टालेंगे ।"(3)

मृदुला जी ने अपने उपन्यास में स्वयं को कहानी का सूत्रधार दर्शाया है, मानो पूर्ण रचना उनके आँखों के सामने ही घटित हुई हो । उपन्यासों की व्यवस्थित और सूचीबद्ध संरचना ही पाठकों के मन पर घात करती है और अपने आप संपुष्ट बनाने में भी मद्‌द करती है । कहानी और उपन्यासों का अंत

---

(1) मृदुला गर्ग-"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.:159 वर्ष : 1999

(2) डॉ. गुप्ता, रामकृष्ण : "नारी विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, शोध आलेख, वर्ष : 1997-98

(3) मृदुला गर्ग-"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.:163 वर्ष : 1999

यदि दूसरों के निर्णय लेने से हो तो यह एक बड़ी कल्पना होगी। उपन्यास में यही बात गर्ग जी ने कही है । अंत में दिल का दौरा पड़ने के बाद की स्थिति मृदुला जी ने अधिक श्रेष्ठता से बतायी है ।

विचारों की भावना विचारों की शक्ति का ही उदय है, इससे मनुष्य अपने आप को संपुष्ट पाता है । मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आन्तरिक वैचारिक भावना देखने को मिलती हैं । उनके कई उपन्यासों में हमें नारी की वेदना और उसके संघर्ष की गाथा भी सुनने को मिलती हैं । उनकी लेखनी में कई वर्ग संघर्ष तथा संवेदनशीलता भी देखने को मिलती है ।

उनमें कहीं स्वातंत्र्य के प्रति अगाध आस्था तथा राजनीतिक जीवन के वर्ग संघर्ष की भी स्त्रैणता देखने को मिलती है ।

"सुधीर के हृदय की गहराईयों में छिपी गांधीजी के प्रति श्रद्धा के बारे में देखा क्या, कोई नहीं जानता था ।"(1)

मृदुला जी ने मनुष्य के हृदय में छिपी गहराईयों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाया है, वे उसको अन्तराल के बाद

(1) मृदुला गर्ग -"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. :65 वर्ष : 1999

भी निहारती रहती है। ''कितने दिन बाद जीवन में एक छोटी सी विजय पायी थी उसने । मुसीबतज़दा इंसान की मद्द करने में कामयाब हुआ था । उससे बड़ी सफलता यह थी कि सविता का समर्थन पा गया था ।''(1) नारी की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वह अपने को स्वयं जिम्मेदारियों की सफलता के बाद भी परिवार में पृथक पाती है और तो और परिवार के सदस्यों का भी उसे भरपूर समर्थन प्राप्त नहीं हो पाता है । नारी सफलता के लिये येनकेन प्रकारेण कोई भी समर्थन प्राप्त कर सकती है लेकिन उसके व्यक्तिगत जीवन के मध्य वह किसी को भी पसन्द नहीं करती है ।

कर्त्तव्य-परायण बहू या पत्नी होकर भी वह अपने को अकेला ही पाती है । पत्नी बहू बनकर सास-ससुर की सेवा तो करती है उनके प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भी वह अहसास रखती है । लेकिन सदैव ही संघर्षरत् रहती है । वह परिवार को अपना मानती भी है और उनको अपने लिये मर मिटने के लिये भी कहती है । लेकिन उसकी विवशता यह है कि कोई भी उसे यह यकीन नहीं दिलाता कि वह उसके साथ है ।

---

(1) मृदुला गर्ग-''वंशज'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. :113 वर्ष : 1999

"सुधीर की सहानुभूति बर्फ का स्पर्श या जम गयी"[1]

"उससे हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है"

तटस्थता से, उसी बिन्दु पर खड़े-खड़े बिना एक कदम उठाये, महज़ अपनी राय जतलाकर ।[2]

"मैं और मैं"

'मैं और मैं' एक दो काल्पनिक पात्रों पर आधारित एक परिपूर्ण उपन्यास है । मृदुला जी ने इस उपन्यास में दो कलात्मक चरित्रों का निर्माण किया है। मौलिकता और असत्यता के मध्य एक कशमकश हमें प्रतीत होती है।

स्वयं का अतं ही सबसे बड़ी जीवन की बाधा होती है । 'मैं और मैं' के अन्तर्गत हम यह जानकर भी गलत कार्य करते हैं जो कि नीतिगत नहीं है और न हो सकता है । इसी प्रकार से एकपात्र अपनी मौलिकता के अनुरूप कार्य ही करता है लेकिन उसके दूसरे साथी को यह प्रतीत होता है कि सर्वथा गलत है । इस उपन्यास में मृदुला जी ने माननीय पक्षों को रखा है तथा उसका बेहिस्त इस्तेमाल भी किया है । पत्नी यह जानते हुये कि

(1) मृदुला गर्ग-"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. :54 वर्ष : 1999
(2) मृदुला गर्ग-"वंशज", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. :69 वर्ष : 1999

उसका पति गलत कार्य कर रहा है, वह मना भी नहीं कर सकती है । माधवी जो कि "मैं और मैं" की प्रमुख कथानक है । वह पति पर नजर रखे हुये हैं । दोनों में विचारों का द्वन्द होता है और यह द्वन्द रणनीति में तब्दील हो जाता है । यदि हम सत्य से साक्षात्कार करे तो भीतर अपराध बोध पनपता है और व्यक्ति झूठ में शरण लेने की लालसा बढ़ती है ।

"रौ में बहकर काम कर सके, वही कलाकार है, सर्जक है; सोच विचार कर पैर बढ़ाने वाला तो व्यवसायी होता है ।"(1)

हम यदि बिना विचार कर कोई कार्य करते हैं तो वह मूर्खतापूर्ण कहलाता है तथा इसमें हमें काफी नुकसान ही पहुंचता है । परन्तु यही सोच यदि हम भावुकता, कलात्मकता और उदारता के साथ प्रस्तुत करें तो हमें और परिवार को अधिक ज्ञान भी प्राप्त होता है ।(2)

परिवार के सदस्यों के उतार-चढ़ावों और उनकी सोच की टकराहट ही हमारे बीच वैमनस्यता को बढ़ाती है । पति और

---

(1) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. : 24 वर्ष: 2001
(2) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. : 25 वर्ष: 2001

पत्नी के बीच यदि कोई बात बिगड़ भी जाये तो वह सुलझ सकती है लेकिन उसके लिये मन की आँखें आवश्यक होती हैं।

"वह स्तब्ध खड़ी थी । आँखों के सामने एक धुंध सी उठ आयी । उसी धुंध के बीच से उसने देखा, कौशल कुमार का चेहरा तमतमा रहा है ।"[1]

व्यक्ति को गुस्सा या क्रोध के साथ-साथ यदि हम उसकी प्रशंसा करें तो गुस्सा स्वत: ही शांत हो जाता है । लेकिन उसके साथ-साथ स्वप्रशंसा नहीं होनी चाहिये।

"आत्मप्रशंसा बहुत करते हैं आप ।"

उतनी नहीं जितनी आपकी करता हूँ । "कौशल ने उमंग से कहा और माधवी का जायजा लिया ।"[2]

मृदुला जी की कहानियों और उपन्यासों में मुझे जैनेन्द्र जैसा भाव संवेग और चिन्तन मिलता है । मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में सामान्यता को काफी ऐहमियत दी है उन्होंने अभाव, संघर्ष और भावनात्मक पहलूओं को प्रधानता दी है।

---

(1) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. : 45 वर्ष: 2001

(2) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं. : 48 वर्ष: 2001

"लगता है, अभाव में उत्पन्न व्यथा का रूक्ष संगीत ही उसके लिये उपयुक्त पृष्ठभूमि है, सुख की हल्की सी संज्ञा भी लय बिगाड़ देगी । त्रासदी की पवित्रता को कलुषित कर देगी।"(1)

मृदुला जी ने "मैं और मैं" अहम् को बताया है और पात्रों को विविध आयामों पर तो इंगित किया है परंतु उन्हें आपस में मिलाप का कोई मौका नहीं दिया है, वह दोनों विपरित विचारों के विरूद्ध है और उसको अन्तरण में ही देखना चाहती है ।

जिन्दगी में कुछ सीमा रेखायें होती हैं । जो व्यक्तियों के बीच, चाहने, कहने और करने के बीच खींची रहती हैं । हम इन्हें अपने जीवन में ही महसूस कर सकते हैं । चाहे यह हमारे परिवार के लिये हो अथवा समाज के बीच । परिवार के सदस्यों के बीच भी एक रेखा होती है जो अपने-अपने स्वभाव तथा विचारों के बीच ही होती है और इसके चारों ओर घूमती रहती है । हम अपने विचारों को किसी पर थोप नहीं सकते, इन्हें अंगीकार करने के लिये प्रेषित अवश्य कर सकते हैं।

---

(1) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.: 69 वर्ष: 2001

"देखे बिना मुझे यकीन नहीं होता, क्या करूं कुछ किये बिना रहा नहीं जाता ।"(1)

हम अपने ऊपर जितना विश्वास करते हैं, उतना विश्वास हमें अपने सगे लोगों पर नहीं रहता । "इस समय राजेश्वर का साथ उसे अत्यंत अप्रिय है, फिर भी कौशल के साथ से अधिक सह्य है ।

हमें कभी-कभी अपनी संकल्पना के लिये कुछ आवश्यक जरूरतों की अनिवार्यता होती है और इसी कारण से यह कारण और भी तीव्र तथा ओजस्वी हो जाता है कि यह हमारी अनिवार्यता है । मृदुला जी ने अपने साहित्य का सृजन मार्मिकता के अतिरिक्त विश्लेषणात्मक तरीके से पूर्ण किया है । माधवी और कौशल के बीच में सम्बन्ध अनिवार्य होते हुये एक-दूसरे के पर्याय रूप से है।

"कौशल उसकी साहित्य रचना के लिये अनिवार्य है और साहित्य-रचना माधवी के जीवन के लिए ।"(2)

(1) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, पृ. सं.: 78 वर्ष: 2001
(2) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, पृ. सं.: 91 वर्ष: 2001

हमारी एक दूसरे के प्रति आश्वस्तता तथा चाहत भी विश्वास के काबिल होती है भले ही हम उसे अन्तराल के बाद मिले हो । "मैं आप में अगाध श्रद्धा रखता हूँ और हमेशा रखूंगा। आप मेरे लिये संसार की सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं और सदा रहेगी ।"(1)

विपरीत विचारों के रहते हुये भी हम आपस में विश्वास प्रेम, आत्म बलिदान की प्रेरणा, आत्मोत्सर्ग भी चाहते हैं । लेकिन कभी-कभी हमें यह आंशिक रूप से ही मिल पाता है । माधवी और कौशल में भी बहुत कुछ इस प्रकार की स्थिति भी है । मृदुला जी ने अपने कहानियों व उपन्यासों में अध्यात्म की उमंग को भी इंगित किया है - "अप्राप्त को प्राप्त करने की लालसा जब तक बनी रहेगी प्रेम अपने उदान्त रूप में प्रकट होगा, आत्मोसर्ग का माध्यम बनेगा । प्रेम अध्यात्म का माध्यम है । जैनेन्द्र कुमार की उपन्यासों के पुट भी मृदुला जी के उपन्यासों में हमें पढ़ने को मिलते हैं । ऐसा लगता है कि उनके साहित्य का प्रभाव मृदुला जी पर है । प्रहर्ष की अनुभूति में कोई बाधा नहीं

(1) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.: 95 वर्ष: 2001

है, तो यह एक सहज ही आत्मोत्सर्ग की परिभाषा में आती है और हम उनके माध्यम से चरमोत्कर्ष तक पहुंच सकते हैं । लेकिन वर्तमान समाज के नियम और कायदे हमारे विश्वास तथा विकास में काफी अड़चने उत्पन्न कर देते हैं।

"शिष्ट-सभ्य समाज के नियम-कायदों के नीचे दवा फैशन, उद्दाम आवेग, लेनदेन से परे सुलगता आदिम आवेश, यही तो पूंजी है लेखक की, माधवी की और यह पूंजी कौशल की कर्जदार है ।[1]

"स्नेह ! एक बेमानी शब्द । इसका प्रयोग औरो के सामने किया जाता है । मेरा मतलब प्रेम से है । इस परम सत्य तक पहुँचने से पहले, काफी ढोंग चलता है दोनों के बीच । वास्तव में स्त्री तिरस्कार का ढोंग करती है, पुरूष बलिदान का ।[2]

मन में उठने वाले उद्बोधन और बिना कही बातें भी हमारे मन मस्तिष्क को झकझोरती है । स्त्री के मन की भावना और पीड़ा को समझने का कार्य मृदुला जी ने बखूबी किया है-

---

(1) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.: 118 वर्ष: 2001
(2) मृदुला गर्ग-"मैं और मैं", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ. सं.: 114 वर्ष: 2001

(माधवी) चाहती थी, कौशल उसे दिलासा दे । उसका अपराध बोध कम करे, उससे कहे, उसका कोई अपराध नहीं है, उसने जो दिया बहुत दिया, दूसरा कोई उतना भी नहीं करता पर कौशल झूठ नहीं बोल पाया था ।''[1] कलुषता मुलाकात की संवेदना से ही धुल जाती है और यह हमारे बीच में अन्तर या दूरी को भी कम कर देती है ।

अनित्य :-

विशिष्ट विचारशक्ति भी हमारे जीवन का प्रमुख अंग होती है । यह वह शक्ति होती है कि चिरकाल तक हमारे ऊपर प्रभावकारी रहती है । प्रत्येक स्थान और समय का हमारे जीवन पर काफी प्रभाव पड़ता है और यह तब तक चलता है जब तक कि हम उस पर कोई विपरित असर नहीं डालते ।

मृदुला जी के उपन्यासों व कहानियों में मानवीयता तो परिलक्षित होती है साथ ही उसमें छुपा दार्शनिक गुण भी हमें देखने को मिलता है ।

---

(1) मृदुला गर्ग-''मैं और मैं'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, पृ.सं. : 124 वर्ष: 2001

" अब जाकर मेरी समझ में आया था अपने शहर से इतने दिनों तक दूर रहकर कि बचपन में मुझे घुंघकरे दिन अच्छे क्यों लगते थे । तब में सोचती थी शायद इसलिए कि जब दूर तक कुछ साफ दिखलाई नहीं देता तो यह सोच लेना आसान होता है कि वहां दूरी पर कुछ बहुत खूबसूरत छिपा हुआ है ।"(1)

"उक्त वाक्यांश में हमें दार्शनिकता मनोभावनागत लगती है ऐसा प्रतीत होता है कि हम वर्तमान के आधार पर भविष्य की परिकल्पना करते हुये अपनी आस पूरा करने की कोशिश करते हैं ।"(2)

परन्तु उसमें आवश्यक नहीं कि सफलता हांसिल हो जाये । मृदुला जी ने शायद यही जानने की कोशिश की है कि हमारा अतीत और भविष्य ही शायद सबसे खूबसूरत है । वर्तमान से भी अधिक । यही परिकल्पना हमारे संवेदनशीलता का परिचायक है ।

---

(1) मृदुला गर्ग-"शहर के नाम", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वर्ष : 2000, पृ. सं. 108

(2) संदर्भ-"अनित्य", पुस्तक पर आधारित वाक्यांश है ।

मृदुला जी के राजनैतिक विचारों का ही संधीकरण उपन्यासों का आधार है और यह राजनैतिक आधार ही हमारे सामाजिक जीवन में भी विचारणीय है । यदि हम उसके बिना कार्य करना चाहते है तो भी हम इसे भुला नहीं सकते क्योंकि इसके आधार पर ही हम एक हैं ।

समाज में व्यक्ति को कुछ करने या बनने के लिए या धन की जरूरत होती है, पर शिक्षा की, या सिफारिश की । शिक्षा या सिफारिश के लिए धन की आवश्यकता है और क्योंकि इस धन पर जनसंख्या के एक बहुत छोटे प्रतिशत हिस्से का अधिकार है, इसलिए जाहिर है कि ऊंची शिक्षा, पद, उद्योग धंधे और सत्ता इसी वर्ग के वंशजो के हाथों में रहती चली जायेगी । जब तक अवसर की समानता न हो, किसी प्रकार की आर्थिक समानता या लोकतंत्र-गणतंत्र की बात करना बेकार है और यह अवसर की समानता हमारे यहां न कभी थी न है''[1]

ऐसा प्रतीत होता है कि मृदुला जी ने राजनैतिक पहलूओं में हमारे सामाजिक विचारों को भी केन्द्रित किया है और इसी

---

(1) गर्ग मृदुला, ''अनित्य'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998 पृ.-11

दृष्टि से उनके उपन्यासों के पात्र भी काफी नज़दीक दिखलायी देते हैं । ऐतिहासिक घटनाक्रमों को आधार बनाकर वर्तमान में प्रदर्शित करने की कोशिश मृदुला जी ने काफी बखूबी निभायी है । उनका मानना है कि यदि समाज स्थिर तब तक नहीं रह सकता जब तक कि राजनीतिक स्थिरता समान न हो, यदि यह स्थिरता नहीं है तो समाज में भी उथल पुथल मची रहेगी ।[1] समाज में शांति का वास तभी रह सकता है जब राजनैतिक अवस्थायें स्थिर रहे । हमें इसमें उपभोक्ता संस्कृति का भी ज्ञान होता है । उपभोक्ता संस्कृति ही हमारी समाज व सभ्यता का दर्पण है और यही कारण है कि समाज का हर एक व्यक्ति इसके आस-पास ही रहता है ।

समाज में रहना और उसके बाद संघर्ष की बात को मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में स्पष्टतः परिलक्षित किया है । संघर्ष व क्रांति की बात मृदुला जी के उपन्यासों में देखने को मिलती हैं । ''क्रांति होने पर पुरानी सामाजिक व्यवस्था बिल्कुल

---

(1) गर्ग मृदुला, ''अनित्य'', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998 पृ. सं. 10

टूट जाती है और नयी व्यवस्था स्थापित होने में समय लगता है। एक बार आर्थिक समानता स्थापित हो जाने के बाद लाभ के लिये श्रम करने की प्रकृति का ह्रास हो जाता है''[1]

संघर्ष को मृदुला जी ने कुर्बानी को महत्त्व दिया है और यह कुर्बानी सदैव संघर्ष में कामयाब रही है । "नेहरू जी ने भी कहा था कि कामयाबी तभी हासिल होगी जब आदमी उसके काबिल हो और कुर्बानी दे ।''[2]

राजनैतिक उहापहों से बचते हुये हमें अपने समाज के लिए भी कार्य करना चाहिये और समाज के लिए कार्य करने में हमारी संस्कृति, सभ्यता और एकजुटता मजबूत होगी । मृदुला जी के उपन्यासों में हमें संघर्ष और उसके पश्चात् एकरूपता के साथ बलिदानी का अनुभास होता है, मृदुला जी के उपन्यासों और कहानियों के तने कहीं न कहीं इतिहास की छलक देखने को मिलती है ।

---

(1) गर्ग मृदुला, "अनित्य", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998 पृ.सं. 198
(2) गर्ग मृदुला, "अनित्य", नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998 पृ.सं. 98

<u>चित्तकोबरा</u> :-

महिला कथाकारों में मृदुला जी के उपन्यासों में से हम भलीभांति परिचित होते हैं । ऐसे कई पहलू होते हैं जो मनुष्य को अपनी करनी पर पछतावे के रूप में सदैव याद रहते हैं। मृदुला जी ने अपने उपन्यासों और कहानियों में महिलाओं के विविध रूपों और स्वभावों को परिलक्षित किया है।

हम जीवन के लक्ष्य के अनुरूप कई तरह से कार्य करना चाहते हैं और प्रयत्न भी करते हैं परन्तु ऐसी कई परिस्थितियाँ निर्मित हो जाती हैं जो कि हमें ऐसा न करने के लिए हतोरसलित करती रहती हैं लक्ष्य कोई भी हो वह हम उसी रूप में अर्जित नहीं कर सकते हैं जिस रूप में हमें उसे चाहिये था; खैर परिस्थितियों और वक्त का तकाज़ा भी रहता है । ''चित्तकोबरा'' नामक उपन्यास में परिच्छेद नहीं है । जीवन की इतनी प्रवाहमान धारा को टुकड़ों में वही काटा जा सकता । ''जो भी स्थिति बनती जाती है''(1) वह कहानी का ही भाग होती है ।

देखा जाय तो महिला कथाकारों की आंतरिक वेदना का ही रूप उपन्यास के संयोजन में हमें प्राप्त होता है । कहानी या उपन्यास तो सहारा

---

(1) मृदुला गर्ग -''चित्तकोबरा'', नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998 पृ. सं. 20

मान है लेकिन उसमें लिखा हुआ विवरण जीवनी या आत्मकथा हुआ करती है । हम जो भी जानते हैं अथवा जानने की कोशिश करते हैं वह सभी हम अपनी जीवनी का हिस्सा बनाते हैं ।

"वह कागज पर लकीरें खींच रहा है । .... गहरे मनोयोग के साथ । .... बड़े जतन के साथ हाथ में रखी है । आड़ी तिरछी रेखायें खींच रहे हैं । जिनमें कोई गूढ़ अर्थ छिपा है । वह रेखा चित्र को लेकर ध्यानमग्न है । एकग्रता से उसकी आँखों में एक अलग ही चमक है जो कि वास्तविक स्थिति को उक्त कर रहा है ।"(1)

पृथक-पृथक स्थिति में हम वैसा ही अनुभव करते हैं और कार्य भी वैसे करने लगते हैं । लेकिन परिस्थिति के सामने हम अपना मनोयोग अथवा लक्ष्य खो देते हैं और उसके रंग में ही रंग जाते हैं । इसी प्रकार से मृदुला जी ने भी कई स्थितियों को अपने उपन्यास "चित्तकोबरा" में स्पष्ट किया है । कहानी के रूप में उन्होंने प्रेमजीवन को गहराई से देखा और समझा है । उसे वह सीमित नहीं करती बल्कि स्वतंत्र और स्वच्छंद वायु की तरह यहां-वहां हिलोरे लेने के लिए प्रेरित करती है । "व्यक्ति की स्वतंत्रता क्या आवश्यक रूप से समाज विरोधी होती है ।"(2) उनका

---

(1) मृदुला गर्ग -"चित्तकोबरा", नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998 पृ. सं. 158

(2) मृदुला गर्ग -"चित्तकोबरा", नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष : 1998 पृष्ठ संख्या 10

कहना है कि आदिम और उद्यम जिज्ञासाओं को घोंटकर जीना भी कोई जीवन है । इसे हम नकारते हैं और समाज की प्रत्येक स्त्रियों को स्वतंत्रता से रहने के पक्ष में हैं । "चित्तकोबरा" में उन्होंने प्रश्नों में लिपटी जीवन शक्ति से ओतप्रोत प्रेम गाथा जिसमें लौकिक मुख के साथ भी है और लोक निरपेक्ष वेदना की अनुभूमि भी ......"[1] वास्तविक रूप से देखा जाये तो यह उपन्यास अपने आप में सार्वकालिक होते हुये भी परिवेश में अत्यंत आधुनिक है ।

<u>कठगुलाब</u> :-

आज के युग में वैयक्तिक कुछ नहीं होता है, यदि हम व्यक्ति विशेष को ही अधिक महत्व दें और उसके विदथ अन्य को गौण समझे तो शायद यह सभी गलत है। इसी प्रकार समाज में रहकर उसके मूल बातों को तो हम मान सकते हैं लेकिन अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं के विरूद्ध हो रहे अत्याचार को हम सहन नहीं कर पाते हैं। समाज में रह रही स्त्री के लिए वे कानून या समाज रूपी नियम थोप दिये जाते हैं वे नियम या बातें हम पुरूष को नहीं थोप सकते हैं । ऐसा क्यों ?

---

(1) मृदुला गर्ग -"चित्तकोबरा", नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष:1998 पृ. सं. 2

हम नितांत सामाजिक रहते हुये भी समाज के बाहर रहते हैं क्योंकि हमें केवल एक प्रकार के नियमों में बांधकर ही समाज रूपी पिंजरे में कैद कर दिया जाता है । जिसमें हम अपनी ही बातों और अपने लोगों से ही कैद हो जाते हैं । हमें अपनी बातों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है । ''कठगुलाब'' में मृदुला जी ने कुछ इसी प्रकार के तथ्यों को उजागर करने की कोशिश की है । जीवन के तमाम संगत असंगत तत्व खोजने की यह एक कोशिश है । यह उपन्यास व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़कर और उसे तोड़कर एक सतत् गतिशील समाज की रचना करता है।

''नमिता एक ईर्ष्यालु, आत्मकेन्द्रित, कटु और कुंठित औरत गफर थी पर दुखी और अकेली भी थी, उसमें नम्रता नहीं थी । दुःख की शक्ति में उसकी दृढ़ और पुरानी आस्था थी ।''(1)

महिलायें स्वयं में यदि निरीत और असहाय रही तो भी बहू एक दृढ़ ईच्छा शक्ति की धनी होती है । इसी कारण वे वह सदैव समाज में अकेली रहकर लड़ने के लिये तत्पर भी रहती है । यदि समाज उसकी इस प्रकार की बात नहीं मानता या वह संघर्ष को कोई नया रूप देता है तो स्वाभिमान का परिचय देते हुये वह अपनी दृढ़निश्चयी बात मनमाने का प्रयत्न करती है ।

---

(1) मृदुला गर्ग, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000 पृ. सं. 45

"मुझे नहीं पता था, तुम्हारे लिये ये.......... सब......... इतना मायने रखता है । मैंने सोचा था, स्वाभिमान की जिंदगी.............."[1]

"जहाँ तक मेरा सवाल था, मैंने विरोध प्रतीकों का इस्तेमाल मलहम की तरह किया और तीन साल के भीतर दुबारा शादी कर ली, इसमें अचरज की क्या बात है ? पुरूष तुरत-फुरत ट्रसटी शादी तब करता है, जब पहली में सुखी रहा हो और स्त्री तब, जब पहली में दु:खी रही हो । औरतों को ना उम्मीदी में उम्मीद करते चले जाने की लत होनी है ।"[2]

स्त्रियों में एक विशेष गुण होता है कि वह सदैव अपने को सही मानकर ही चलती है, यदि हम उसके साथ ही अपने विचारों को लेकर चले तो विश्वास, समझदारी और सहयोग को प्राथमिकता के साथ पूरा कर सकते हैं । संघर्ष की इस धारा में हम सदैव निराश्रित और अकेले तो देखते है साथ ही वेबस और निराह भी, इसीलिये संघर्ष शक्ति और दृढ़त हमें अकेला होने से बचाये रखती है, औरतों में यह गुण तेजस्वी की तरह ही होता है । इसी कारण वह समाज से अकेले ही मुठभेड़ कर लेती है।

"मैं कठगुलाब उसके लिये झुकी तो नमिता ने बीच में ही टोक दिया बोली, "कुछ तो मेरे पास भी रहने दो ।"[3] इस उपन्यास में मृदुला

---

(1) मृदुला गर्ग, "कठगुलाब", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष:2000 पृ. सं. 150
(2) मृदुला गर्ग, "कठगुलाब", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000 पृ. सं. 95
(3) मृदुला गर्ग, "कठगुलाब", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000 पृ. सं. 23

जी के ''कठगुलाब'' का आराम एक अच्छाई और सप्रेम भेंट से है जो कि किसी एक के पास विशेष गुण से ही होता है ।

महिलाओं में बातों के साथ-साथ तर्क होता है । उनके पास कला के रूप में यह पोषित रहता है । तर्क सदैव हुई घटना के लिये महलम का कार्य करता है । ''अंधेरे में हाथ-पॉव मारने से अच्छा था, नई जगह, नई जिंदगी शुरू करना ।''(1)

नई शुरूबात, नया विश्वास और नई कविता का रूप हमें सदैव प्रेरणा दायी होता है, मिट्टी ही सर्वव्यापी एकमात्र सच्चाई है । ईश्वर, धरणी, प्रभूति, सृष्टि, पार्थिव शरीर, मिट्टी राख । जलाओं तो राख, दफनाओं तो मिट्टी दोनों का विस्तार विस्मीय है, ... !

<u>कहानी यात्रा</u> :- <u>''शहर के नाम''</u>

मृदुला जी की कहानी ''तीन किलो की छोरी'' में शारदाबेन के वास्तविक विचारों और दूसरे के प्रति उसकी भावनाओं को उन्होंने बखूबी सृर्गित किया है। शारदाबेन को उन्होंने एक ऐकास्मी के रूप में प्रस्तुत किया है जो आपस में

---

(1) मृदुला गर्ग, ''कठगुलाब'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000 पृ. सं. 32

फर्क स्थापित करती है चाहे वह बच्चे के स्कूल में पढ़ने का मुद्दा हो या मर्द के कमायी की बात हो ।

कहानी की ''तीन किलो की छोरी'' में भैंस के दूध देने की बात को उन्होंने एक पुत्री से तुलना की है । छोटी बेटी के वजन को उनके द्वारा भैंस द्वारा दिये जाने वाले दूध के वजन से मापा गया है ।

''इसी प्रकार कोलीबेन व शारदाबेन के बीच एक दूसरे की बात को समझने की शक्ति देकर उन्होंने एक नवीन सम्बन्ध स्थापित किया है । दोनों का वार्तालाप ग्रामीण अंचल की स्त्रियों का है ।''[1]

''मोतीबेन की बात काटने की शारदाबेन की बिसात नहीं । उन्होंने कहा उसने सुन लिया पर घी उसने कभी जाना, देखा नहीं, खाने की कौन कहे । न उन भगवानों को उसने कभी देखा, जिनमें डेरी का पैसा वहा करता है । वह तो बस छाछ को रंग सकती है । घी खाने वाले सुखी परिवारों की उसे क्या खबर ।[2]

---

(1) डॉ. सोबती, कृष्णा, शोध आलेख-भारतीय नारी चिंतन और दशाएं से उद्घृत
(2) मृदुला गर्ग, ''शहर के नाम''-भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ. सं. 26, वर्ष : 2000

मृदुला जी ने अपनी कहानियों में छोटे-छोटे पात्रों के द्वारा दैनिक जीवन में आने वाली बातों को स्पष्ट किया है । छोटी-छोटी बातों को मृदुला जी बड़ी गंभीरता से निर्मित किया है, परिवार में रहने वाले और समाज का एक हिस्सा रहने वाले व्यक्तियों के विचारों को प्रस्तुत करना अपने आप में एक दर्शन है ।

मृदुला जी ने अपनी कहानियों में धर्म, धर्म में आस्था और अन्धविश्वासों के प्रति संघर्ष को भी दर्शाया है । ''शहर के नाम'' में मृदुला जी इसी प्रकार की पहलूओं को बखूबी अंजाम देती है । ''कटार'' नामक कहानी में उन्होंने अपनी धर्म में आस्था को स्पष्ट किया है ।

''लेखक ने इसके बहाने कुछ करना चाहा है - वे इसके अनुसार समझाना चाहती थी कि धर्म में आस्था, अन्धविश्वास नहीं, सूझ-बूझ वाली रणनीति थी। मृदुला जी अपने उपन्यासों में निस्तब्धता अंधकार के बीच एक प्रकाश व आशा की किरण का निराला अंदाज दर्शाया है । वे कहती हैं-''जब तक मैं कुछ समझ पाती, बहुत देर हो गयी । निस्तब्धता अन्धकार की तरह

गहराकर पूरे पोषण को निगल गयी । पत्ता पहले ही नहीं खड़क रहा था, अब जैसे धरती-आकाश ऊब से गये ।

अब निःशब्दता अविश्वास बन चुकी थी ।[1]

कथा साहित्य का समग्र पक्ष देखा जाये तो सामाजिक रूप से प्रत्येक पहलू को मृदुला जी ने अपने कथा में संग्रहित किया है । चाहे वह परिवार का कोई पक्ष हो, समाज का कोई ओर, ग्रामीण अंचल का कोई विषय हो अथवा शहरी क्षेत्रों में सम्बन्ध रखने वाला कोई अर्थ हो । इस प्रकार मैं ''शहर के नाम'' की कहानियाँ विशेष रूप से सराहनीय है और वे प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई अर्थ रखती हैं ।

मृदुला जी ने अपने साहित्य में सामान्य परिवार की अदतों और कर्त्तव्यनिष्ठा को भलीभांति बयान किया है चाहे वह आपसी मतभेद हो अथवा आपसी सलाह मशविरा । हम सदैव चाहते हैं कि व्यक्ति आपस में प्रेमभाव से रहे । उसका मन कभी खराब न हो और वह समाज के लिये भी मार्गदर्शक या मित्रवत् रहे। लेकिन

---

(1) मृदुला गर्ग, ''शहर के नाम''-भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ. सं. 35, वर्ष : 2000

कभी-कभी ऐसी भी कटुता देखने को मिलती है कि परिवार का वातावरण एकदम बिखर जाता है, कलुषित हो जाता है।

"अपनी आदत के खिलाफ वे तत्परता से स्वयं बर्तन समेटने लगी । साथ में कहती गयी, छोड़ो-छोड़ो लो हो गया, ले जाओ, और जाओ ।"(1)

इसी प्रकार परिवार में रहने वाले सदस्यों के मध्य भी प्रेमभाव रहता है अथवा बाहरी व्यक्ति द्वारा इसमें कूट या द्वेष की भावना मिलायी जाती है । यही कारण है कि मृदुला जी का कथा साहित्य मिश्रित भाव में ओतप्रोत है ।

जैसे परिवार में आपसी फूट के साथ-साथ ग्रह कलह भी होता रहता है लेकिन कभी-कभी महिलाये आपस में कुछ समय के लिए नियवत् रहते हुये पुरूष पर विकर जाती हैं -

"दोनों औरतों ने इसी मित्यों को देखा और बिना सलाह मशविरा, एक साथ रामू पर चिल्लाना शुरू कर दिया ।"(2)

---

(1) मृदुला गर्ग, "शहर के नाम" बाहरी गन कहानी में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ. सं. 75, वर्ष : 1998

(2) मृदुला गर्ग, "शहर के नाम" बाहरी गन कहानी में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ. सं. 65, वर्ष : 1998

मृदुला जी ने अपनी कहानी ''वह मैं ही थी'' में एकपाटन की नजर से पति को देखने की कोशिश की है । पटिन में मर जाने के बाद-औरत मर गयी तो पति का दिल टूट गया । वह इस घर में नहीं रह पाया । अगले दिन पड़ोसी के घर जाकर टिका । आदमी का ऐसा दिल टूटा कि घर छोड़कर जाते वक्त यह पलंग वहीं छोड़ गया । कहने लगा मुझसे नहीं देखा जायेगा । उसकी हैषतनाक चीखों और बच्चे की वे आवाज मौत का साक्षी हैं यह । हर वक्त उसकी याद दिलायेगा बड़ी बेतरतीब़ में बनवाया था बदकिस्मत ने ।

मृदुला जी के उपन्यासों में दर्द कराह के साथ-साथ अपनी जीवन साथी के लिए निर्भय दर्द भी है, जो व्यक्ति रहकर भी बार-बार उभरकर सामने आता है । मृदुला जी ने एक गर्भवती पत्नि के दर्द को काफी करीब से जाहिर किया है । उसे सामने से प्रस्तुत किया है । अपनी पत्नि की मृत्यु के पश्चात् पत्नि की ओर से जो माँ-बाप, भाई-बहिन हैं वे संवेदनहीन नहीं हैं, यह तो दर्शाया है। लेकिन चेहरे पर पति के लिए वास्तविक दु:ख प्रखर रूप से दिखाई नहीं देता।

''मृदुला जी ने एक स्थान पर लिखा है कि- सामान्य स्त्रियों की अपेक्षा गर्भवती स्त्रियाँ कुछ ज्यादा ही ऊलजलूल सोचती रहती हैं । कहती क्यां, वह सिलसिलेवार सोचती भी नहीं थी । टुकड़ा-टुकड़ा तर्क दिमाग में उठता और मातमी दहशत मन में टड़कती रहती । रात में एक विस्सीम आतंक उसके पूरे अस्तित्व पर हावी हो जाता है ।[1]

''शहर के नाम'' में मृदुला जी का साहित्य एकदम सुजमान सा और एकान्त प्रदेश का हिस्सा है । मृदुला जी ने कथा में शहर का विचार तो दिमाग में रखा है परन्तु उनके मन में एक एकांत या शान्ति अवश्य है, वह ग्रामीण भाग की शांति या मंगल एक भयावह एकान्त । ऐसा एकान्त जो मशीन मानव के समान किसी आदमी को किसी दूसरे आदमी के मध्य सम्बन्ध न रखने वाला एकान्त, दु:ख अथवा मुख में आपसी मेलजोल न बढ़ाने वाला एकांकीपन और कोई लेखक में भी आपस में न रहे ऐसा निष्ठुर मन । मृदुला जी ने अपनी कथा में इसी सन्दर्भो को विशेष रूप से लिखा है । जो सामाजिक और आर्थिक रूप से हमारे विचार योग्य रहते हैं ।

---

(1) मृदुला गर्ग, ''शहर के नाम''-''वह मैं ही थी'' कहानी में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ. सं. 90

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ । मुझे खत लिखने का शौक रहा है । दिमाग पर दस्तक हुई नहीं कि खत लिखने बैठ जाती । जिस किसी का ख्याल पहले जहन में उतर आता उसी के नाम ।''(1)

इसी सन्दर्भ में मृदुला जी ने काफी निकटता से दर्शाया है -

''हर शहर की एक आत्मा होती है, जो शाम के बहराते झुटपुरे में तो इन्सान की पकड़ में आ सकती है । दिन का उजाला बड़ा बेदर्द होता है ।''(2)

''टुकडा-टुकड़ा आदमी'' :-

मृदुला गर्ग जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से इसे समाज में प्रत्येक पहलू के बारे में अवगत कराया है । नारी के तकलीफ की कहानी उनके दिमाग की उपज है वे कहानियों से बुद्धिजीवी और समायोजक पाठकों को बनाने में सक्षम हैं । सामाजिक दृष्टिवादिता और विषमता की ओर से संकेत करती है। वे कहती हैं कि हमें इनसे डरकर आँसू नहीं बहाने बल्कि

---

(1) मृदुला गर्ग, ''शहर के नाम''- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 110 वर्ष : 1998

(2) मृदुला गर्ग, ''शहर के नाम''- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 108 वर्ष : 1998

इनको सिद्ध संघर्ष करना है । शहर की परिकल्पना से लेकर आप आदमी की जिन्दगी तक के स्वयं को सक्षम मानती है और आम आदमी की परिभाषा का बोध कराती है।

''पर में जिस संसार को मानता हूँ, वहां प्रकृति है, सौंदर्य है, मैन है और फिर तुम हो ।''(1)

मृदुला जी ने प्रभा के जरिये अपने मन की बात को ललकारा है- ''सच, बड़ा बेकार शहर है, बनारस'', कला से यहां हूँ कोई जाने लायक जगह नहीं ।''(2)

शहर में सौंदर्य और शांति की बात में लेखक ने आम आदमी की जिन्दगी से जुड़ी कुछ पहलूओं को भी याद करने की कोशिश की है । सौंदर्य और शांति की बात हमारे दैनिक जीवन, संघर्ष की जिन्दगी से कुछ सुकून देती है, शायद यही हमारे लिये शांति का प्रतीक भी है । मजदूरों की बस्ती के सामने बेलापुर का बंगला दिखायी देना और वहां मिले गुलाबों की अमित छाप स्मृति को संजोती है ।(3)

---

(1) मृदुला गर्ग-''टुकड़ा-टुकड़ा आदमी'', नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1995, पृ.सं. 5-6
(2) मृदुला गर्ग-''टुकड़ा-टुकड़ा आदमी'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1995, पृ. सं. 7
(3) मृदुला गर्ग-''टुकड़ा-टुकड़ा आदमी'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1995, पृ.सं. 15

दैनिक संघर्ष ही मनुष्य को तोड़ देता है, वह स्वयं समझने बूझने की स्थिति में नहीं होता है । परिवार के दु:रव दर्द के प्रति उसकी दृष्टि बेवाहा मुजरिम की भांति होती है । वह कुछ कहना भी चाहता है और नहीं भी ।

मृदुला जी ने "टुकड़ा-टुकड़ा आदमी" उपन्यास में मजदूरो के संघर्ष और उनके जीवन की शैली को दर्शाया है ।

"मैंने कभी नहीं सोचा था, कि हमारे मजदूर इस हालत में रहते होंगे ।" सुबोध ने दर्शाई स्वर में कहा-[1] कितनी बार ही मैंने कहा अपने पैर धो ले अथवा स्वयं को सुधारने की कोशिश करे वह और भी दलदल में फंसता जाता है, जब तक वह स्वयं की मानसिकता परिवर्तित न करें । वर्तमान समय में मनुष्य स्वयं को अकेला पाकर भयभीत भी हो जाता है ।

"उसकी आँखों के सामने मजदूर बस्ती का वह गंदा नाला बढ़ कर रह गया है । गंद के पानी में बहते जलपक्ष लकड़ी के टुकड़े, फटे कागज की नावें और सड़ी सब्जी की कतरने । दृष्टि हटा लेने पर भी बार-बार वहीं जाकर टिक जाती है ।"[2]

---

(1) मृदुला गर्ग-"टुकड़ा-टुकड़ा आदमी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1995, पृ.सं.-12
(2) मृदुला गर्ग-"टुकड़ा-टुकड़ा आदमी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1995, पृ.सं.-13

मजदूरों की बस्ती संघर्ष और पीड़ा का वह केन्द्र है जहां हम दिन-ब-दिन मरते ही देखते हैं । अशांत सन्नाटे के बीच उसके भीतर का दिमाग व्यक्ति अपने टुकड़ों के परस्पर साहचर्य या शांति नहीं दे सकता । अनिश्चय की स्थिति सदैव ही दृष्टि में पाती है । मेरी सोच इतनी गंभीर हो सकती है, यह हम मान ही नहीं सकते लेकिन क्या होगा हमें और आपको ऐसा मानने को मजबूर होना पड़ता है ।

इसी दशा का बयान लेखक का अपना अधिकार ही है । यदि हम बलात् अधिकार द्वारा स्त्री को दबाने की कोशिश करें और अपने लांछित पुरूष मन की कुंठा का प्रतिकार करके, वह अपने आदत आत्मसम्मान को फिर पाने का प्रयास कर रहा था ।

मजदूरों की बस्ती में मजदूरों के लीडर उसका नेतृत्व ही परिष्कार स्वरूप अपने सामने आता है । लेखक सांस्कृतिक होने के बावजूद कला, संवेदी, सौंदर्यप्रेमी और कहां वह पशु जैसा व्यवहार । इसमें हमारा छोटापन ही महसूस होता है। इसीलिये मन की विशालता का परिचय देना आवश्यक है ।

सौन्दर्यता और शांति का संगम आज पैसे की वेदी पर स्थिर होकर रह गया है। यदि हम शांति चाहते हैं तो पैसे का होना आवश्यक है, इसी प्रकार सौंदर्य का रहनुमा भी पैसा होता है। आज रूपयों का बंदोबस्त कई गतिविधियों से मिलकर रह गया है । मनुष्य दैनिक जीवन के संघर्ष से ही अपना मुइन मानता है । वह अपनी परिवार की चिंता ही सदैव करता है, कभी-कभी वह यह सब भूलकर दारू के नशे में स्वयं को ही अकेला पाता है । आदमी आज टुकड़ा-टुकड़ा होकर बिखर रहा है । उसके टुकड़े इतने हो चुके हैं कि अब वह जुड़ने की स्थिति में नहीं है । पर बेहतर सोच और बिखराव के बीच का सेतु ही इसमें परस्पर सामंजस्य और घनिष्ठता स्थापित कर सकता है ।

<u>समागम</u> :-

समागम नामक उपन्यास में मृदुला जी ने अपनी अनुभूति के बारे में विस्तृत चर्चा की है । अनुभूति भी अभूतपूर्व होती है जो हमेशा के लिए स्मृति में अंकित हो जाती है । यदि अनुभूति केवल अनुभव पर आधारित नहीं होती तो वह हमारे मस्तिष्क पटल पर अंकित नहीं हो पाती है ।

अनुभव के साथ-साथ प्रतीक्षा का भी आकांक्षा के साथ संबंध होता है । ''मैने अपने चेहरे से सटे चेहरे की ओर निगाह घुमाई, एकदम भावहीन । प्रतीक्षारत कोई आकांक्षा, आशा या आशंका, कुछ नहीं । ऐसा नहीं था उन्हें किसी की प्रतीक्षा थी । अधैर्य व सही, सधा हुआ धैर्य तो दिखना चाहिये था ।''(1)

भावहीनता मनुष्य को अधिक कमजोर करती है इसमें मानो मनुष्य के कोई मान नहीं है, ऐसा लगता है । जो कुछ है वह है मनुष्य की आकांक्षा, आशा जो कि सीधे मनुष्य के चेहरे पर भाव को इंगित करती है । मृदुला जी ने अपने इस उपन्यास/कहानी में भीड़ से संघर्ष करते हुये, धक्का-मुक्की के बीच खड़े मनुष्यों के चेहरों का अध्ययन किया है और इसी अनुरूप उसे इंगित भी किया है ।

मृदुला जी के गद्यांशों में आपसी योजना तथा प्रेमभाव की झलक देखने को मिलती है । धैर्य की भी विडंबना देखें तो ऐसा लगता है कि हम आपस में ही समाहित हो गये हो ।

---

(1) मृदुला गर्ग ''समागम'', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष : 1998, पृ. सं. 127

मृदुला जी ने अपनी कहानियों में भाव-व्यंजना को काफी प्रधानता प्रदान की है । उन्होंने कहानी "समागम" में यही दर्शाया है कि चित्र की भांति लोगों पंक्ति में खड़े हैं या भीड़ में खड़े होकर भी चेहरे से एक-दूसरे के प्रति कैसी भाव भक्ति रखते हैं ।

"अब सोचती हूँ, मगर बीच में अंधकार न आया होता तो मैं उस बूढ़े को कभी न भूल पाती । यह भी कि अगर बूढ़ा आँखों के सामने न रहा होता तो वह............ मुझे नील गई होती, पर एक आतंक दूसरे को काटता, क्षीण करता रहा था । अब सोचती हूँ, अगर बाकई आजादी की उस पहली शाम, कोई बूढ़ा भीड़ के पैरों-तले कुचल कर मरता तो क्या उसकी खबर छपती ?"(1)

मृदुला जी का अविश्वसनियता और सज्ञानता का बोध तब होता है जब वह रहती है कि हमारी जड़े इतनी मजबूत नहीं रह गयी कि "शरीर हरकत कर पाता । यह सुनकर मेरा शरीर थरथरा गया ।"(2)

---

(1) मृदुला गर्ग "समागम", सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष : 1998, पृ. सं. 118-119

(2) मृदुला गर्ग "समागम", सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष : 1998, पृ. सं. 120

''समागम'' नामक कहानियों में अध्ययन व भक्ति का भाव भी दिखलायी देता है । उन्होंने गंगामाता जी की भक्ति भावना को भी उन्होंने कविता के जरिये दर्शाया है -

''जय गंगा माता, जो नर तुझको ध्याता

मनवांछित फल पाता, जय गंगा माता''

उन्होंने गंगा जल को एक ब्रम्ह कुंड के रूप में दर्शाया है और उसमें स्वयं को प्रतिबिंबित भी किया है ।

मृदुला जी ने स्वयं को एक उपजाऊ मिट्‌टी की तरह और खाद के रूप में भी बताया है । ''मृदुला जी ने स्वयं की देह के अवशेष अपने बगीचे में पेड़ों में डाल देने की भी बात कही है । मनुष्य की खाद पेड़ों के लिए अच्छी होती है ।''[1] इतनी समानता और समर्पण की भावना होने के बावजूद भी मन में हताशा और दु:ख की झलक दिखलाई देती है ।

''वहीं तो साफ जाहिर है कि वह हताशा भी मन: स्थिति में जी रही थी । आत्महत्या का ख्याल बार-बार मन में आता रहता था ।''[2] मृदुला के समाज के संघर्ष को अपने उपन्यासों

---

(1) मृदुला गर्ग ''समागम'', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष : 1998, पृ. सं. 122

(2) मृदुला गर्ग ''समागम'', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष : 1998, पृ. सं. 152

में सशक्त रूप से प्रदर्शित किया है । उन्होंने कहानी 'समागम' में कहा है कि समाज के बेसहारा, अशक्त जनों के लिये समाज धनाढ़यों व समाज के ठेकेदारों से भी संघर्ष को मान्यता प्रदान की है । असंतुष्ट महत्वाकांक्षायें भी मन के पेट को कुरेंदती रहती है और संघर्ष के लिये भी प्रेरित करती रहती है ।

समाज शास्त्र का यह निर्विवाद सत्य यह है कि इसकी पृष्ठभूमि पर कोई भी नियम स्त्री व समाज से परे नहीं होता है और यहीं कारण है कि सामाजिक सत्ता सदैव इन संबंधों को एकाकी के रूप में ही देखती है । समाज के कई सवालों का जबाव हमें समाज के ही सेवकों द्वारा ही प्राप्त हो जाता है । हमारी यह विडंबना है कि हम अपने ही सवालों के जबाव अपने-आप में न ही खोजकर इधर-उधर भटकते रहते है और अन्त यह होता है कि आपसी असंतुष्टि और भेदभाव हमारी सीमा के बाहर हो चुका होता है ।

<u>"एक और अजनबी"</u> :-

मृदुला गर्ग जी ने अपने नाटकों में एक वर्तमान पहलू का नवीन विचार प्रशस्त किया है । उनके नाटक हमारे नवीन विचारों

को प्रदर्शित तो करते हैं साथ ही हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति करते हैं । हमारा स्वयं का परिवार से, आस-पास के समाज से जो भी रिश्ता होता है वह प्रासंगिक भी हो सकता है और खून का भी । लेकिन कभी-कभी यह खूबसूरत रिश्ता प्रसंगों से भी प्रेरित होता है, यह रिश्ता हमारी दैनिक जीवन में नया लेकिन स्वेच्छा से जीवित हुआ रहता है और यही कारण है कि कभी-कभी यह रिश्ता रोमांचक भी हो सकता है।

"जो हमेशा बनी रहे, वही याद है ।"[1] किसी बीते हुए क्षण की याद भी सर्वस्व रूप से हमारे ऊपर हावी रहती है । रिश्ता जल्दी बन भी जाता है और क्षण भर पर वह मिट भी जाता है । दूसरे क्षण रिश्ता फिर जन्म लेता है । यह प्रक्रिया रोमांचक होती है । स्त्री-पुरूष संबंध आपसी प्रेमाचार्य का प्रतीक होता है । यह प्रतीक हमारे समाज का द्योतक होता है । यदि हम इसे जटिल नहीं बनाते है तो यह हमारे जीवन की प्रेरणा बनता है ।

यदि कोई ऐसा क्षण हमारे जीवन में आता है तो हम चाहते हैं कि इसे एक साथ मुट्ठी में बंद कर लें, जो एक बार

---

(1) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, सन्दर्भ

मुकर चुका है, वही बार-बार हमारे समक्ष आता है । लेकिन ऐसा संभव नहीं हो सकता है । क्या जो सदैव रहता है वही सुंदर है, शुभ है ।[1]

दिखावे और तमाशे से परे मुक्ति के पारदर्शी क्षण का, बहुत भारी कीमत अदा करनी पड़ती है, समय को दहलीज़ की चौखट से बांध लेने की । जल प्रपात को गंदे नाले में कैद कर लेने जैसी । स्त्री-पुरूष विवाहोपरांत अपने मध्य संवादहीनता की दीवारें बड़ी हो जाती है । भविष्य को नीलाम करके, मूक अतीत की नींव पर भविष्य से समझौता करके वह रिश्ते को अंजाम देता है। मानवीय आत्मा का सम्बन्ध आदिम मानव से है । सुरक्षा के साथ-साथ हम निष्क्रियता से भी विरोध करते हैं । धीरे-धीरे जंग खाता सामाजिक आदमी उस मुकाम तक पहुंच जाता है, वहां उसे अपने निरीक्षण और दैनिक संबंध भी सामाजिक व्यवहार की बलि चढ़ जाते हैं ।[2]

स्त्री-पुरूष आपस में परामर्श और विचार-विमर्श के साथ कार्य करने से आपसी संबंध प्रगाढ़ होते हैं । "दोनों मिलकर

---

(1) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987

(2) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, सन्दर्भ

अपना कुछ काम करें, मैं और तुम भी। कब से सोच रही हूँ कुछ काम करें तो वक्त इस तरह काटने को न दौड़े । साथ मिलकर काम करेंगे तो सब ठीक हो जायेगा ।''(1)

कभी-कभी हमें जीवन में एक अनुभव या एडवेंचर की तरह भाव भी प्राप्त होता है । "मैं जानती हूँ कि सुंदर ने मुझे कभी प्यार नहीं किया । मैं उसके लिये एक अनुभव भी सिर्फ एक एडवेंचर ।(2) ऐसी स्थिति में अजनबी की तरह हम एक-दूसरे के साथ बातें करते रहते हैं और कभी-कभी अपनी या कभी गम नहीं बांटते हैं ऐसी दृष्टि में वह एक पृथकतावादी इंसान की तरह अपना भाव व्यक्त करते हैं ।

लेखक ने स्वयं को इतना मजबूत तैयार किया है कि वह किसी भी तरह की आलोचना से नहीं डरता । मृदुला जी ने अपने उपन्यास में सभी वर्गों एवं सभी पहलूओं पर विचार किया है । "लेखक की खाल इतनी मोटी होती है कि वह आलोचना के प्लेग से नहीं डरता, चैचक-वेचक से बचा सकेगा ।''(3)

---

(1) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, पृ. सं. 77
(2) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, पृ. सं. 36
(3) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, पृ. सं. 32

स्त्री-पुरूष के विवादों का भाव आपसी प्रेरणा और प्रेम का प्रतीक होता है । यही कारण है कि वह अपने विश्वास को साकार करने की कोशिश कर रही है । अंदर की प्रतिक्रियाएं उसकी मन:स्थिति से बिल्कुल मेल नहीं खाती, जिसका पूर्ण आभास उसे अंत में जाकर होता है ।[1]

अपने आप को साकार करने के लिये आपसी परामर्श और मेलजोज की आवश्यकता होती है । क्योंकि एक-दूसरे को जानने पहिचानने की कोशिश भी की जाती है । "अब तक जब भी मैंने प्यार के बारे में सोचा तो सिर्फ सपने में । जानते हो, प्यार क्या होता है ?"[2] शानी के शब्दों में ।

मृदुला जी ने इस एकांकी में मनुष्य के बेबाक और आत्मभिमानी शब्दों से काफी कुछ सीख दी है - एकदेश लौटने के बाद इंदर कहता है- "पर मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो अपने देश को भूल जाते हैं । मैं लौट आया हूँ पर अभी हमें उनसे बहुत कुछ सीखना है ।"[3]

---

(1) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, पृ. सं. 110
(2) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, पृ. सं. 103
(3) मृदुला गर्ग- "एक और अजनबी", नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, पृ. सं. 93

व्यक्ति अपने आप में कई तरह से जीता है, कभी-कभी वह जीवित रहते हुये मरे जैसा जीवन यापन करता है । यह बात तब समझ में आती है जब कोई अपना उसे धोखा देता है -

''अपने लिये तो यही कह सकता हूँ कि पिछले दो सालों में इस तरह जिया हूँ कि भूल गया हूँ, इससे पहले भी मैं जीवित था ।''(3)

जिन्दगी को अपने तरह से जीना और उससे कुछ सबक लेना भी प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है । क्योंकि हमें भी यही यकीन होता है कि हम सदैव सही होते हैं लेकिन ऐसा नहीं रहता कहीं न कहीं कोई न कोई गलती हम अवश्य करते हैं ।

आज के युग में हमें ऐसा नजारा अक्सर दिखायी देता हैं कि एक कोई अजनबी ही हमारे जीवन में आकर हमें सहजता से सहायता प्रदान करता है । मृदुला जी अपनी कहानियों के जरिये आम व्यक्ति की जिन्दगी से मुलाकात करती है । जिसके माध्यम से हमें संघर्ष की यात्रा की मालूमात होती है । जिन्दगी उसी ढेर पर चलती रहती है अगर दो-एक संयोग और न जुट जाते ।

---

(2) मृदुला गर्ग- ''एक और अजनबी'', नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष-1987, पृ. सं. 57

लेखक द्वारा तर्कसंगत कारण दिखलायें तो उसे जिन्दगी का रस चौपट करने वाला माना जाता है तथा यदि वह तर्कहीनता से मेल खाती कहानी बतलाये तो समाज की आलोचना स्वीकार करना पड़ती है ।[1] मृदुला जी की कहानियों में अक्सर तर्कसंगतता दिखायी देती है और उसके बहाने उनकी औपचारिक शैली द्वारा सामान्य दशायें भी बताती हैं ।

दशायें देखने के बाद भी हमें पैसा ही दिखायी देता है । ''हम आप सब जानते हैं कि आज के जमाने में हर बीमारी से निपटने का एक ही कारण है, पैसा''[2]

मृदुला जी ने अपनी लेखनी से पर्यावरण को सुधारने का व्रत लिया है । प्रदूषण कम करने की बात उन्होंने समाज के लोगों द्वारा स्त्री शिक्षा या उन्हें प्रताड़ित करने को लेकर कही है । यही कारण है कि उन्होंने देश की मिट्टी को सबसे पृथक और अधिक निराली महिमा बतायी है ।

---

(1) मृदुला गर्ग, 'मेरे देश की मिट्टी द्वारा', नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. सं. 16, वर्ष ' 2001

(2) मृदुला गर्ग, 'मेरे देश की मिट्टी द्वारा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. सं. 11, वर्ष ' 2001

मृदुला जी ने अपने साहित्य में स्त्री की विवशता और एकाग्रता का भी सटिक उदाहरण प्रस्तुत किया है । उन्होंने पात्रों के माध्यम से संघर्ष और व्यथा को जीवन जीने का भी एक हिस्सा बनाया है ।

"वह जब-तब आता था और यही कहता था । हर बार नयी व्यथा-कथा सुनने को मिलती । सुने बगैर ही नया था । उसका धैर्य वाज़िब था ।"(1)

अपरिहार्य की मान्यता को भी हम समाज में रहते हुये मान्य कर सकते हैं। समाज एक परिकल्पना पर तो आधारित रहता है परंतु परिकल्पना पर वह जीवित नहीं रह सकता । "कलि में सत" नामक कहानी में मृदुला जी ने स्त्री की विवशता के साथ-साथ उसकी अपनी कथा को भी इंगित किया है ।

"नहीं; नाम तो सुकन्या है । कौशल्या ने सुना तो बोली, काहे की सुकन्या ? यह तो कुकन्या है ।"(2)

---

(1) मृदुला गर्ग, कहानी- 'कलि में सत', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. सं. 65, वर्ष ' 2001

(2) मृदुला गर्ग, कहानी- 'कलि में सत', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. सं. 99, वर्ष ' 2001

"यहां सब यह बता दूं कि उसकी पहली पत्नी का नाम भी कौशल्या नहीं था । इतना संयोग तो कहानीकार भी नहीं कर सकता । नाम तो अच्छा भला सुशीला था पर वह भी इतनी बुरी स्वार्थी कि एक दिन दशरथ ने कह डाला, यह तो कुशीला है ।"(1)

मृदुला जी ने अपनी कहानियो में ऐतिहासिक पक्ष के साथ-साथ पुरा अध्ययन को नवीनता के साथ प्रस्तुत किया है । उन्होंने कौशल्या व दशरथ आदि के नामों से हम उन्हें जानते हैं लेकिन उनकी पात्र, संकल्पना में परिवर्तन अवश्य है । "मैं बूढ़ा आदमी ठहरा, नये-नये कानूनों की खोज, खबर कहां तक रखूं। औरतों को समझ पाना नामुमकिन है ।"(2)

मृदुला जी ने इतिहास को साक्षी मानकर नवीन कहानी को एक नया मोड़ दिया है जिससे हमें वर्तमान संदर्भो की बराबर जानकारी मिलती है । मृदुला जी ने 'कलि में सत' में स्त्री विवशता और उसकी चाह को एक नवीन नामांकन दिया है । समग्र

---

(1) मृदुला गर्ग, कहानी- 'कलि में सत', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. सं. 99, वर्ष ' 2001

(2) मृदुला गर्ग, कहानी- 'कलि में सत', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. सं. 103, वर्ष ' 2001

साहित्य में मृदुला जी ने अपनी कलम से सभी तरह के विषयों को समेटने की कोशिश की हे और इस आधार पर उन्होंने अपनी नवीनता के जरिये समग्रता को बटोरने की कोशिश की है नवीनता के साथ में उन्होंने इतिहास को बचाने की कोशिश की है ।

----::+::----

अध्याय पंचम

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी के विविध रूप

अध्याय पंचम

मृदुला गर्ग के कथा-साहित्य में नारी के विविध रूप :-

मानव समाज में रहकर समाज के रीति-रिवाजों को मानते हुये भी स्वयं समाज से कटा-कटा सा रहता है । उसका यह कथन कि हम समाज के उन लोगों में से है जो वहीं रहकर भी अनभिज्ञता की रेखा के नीचे आते हैं, सही प्रतीत होता है। मृदुला गर्ग जी के कथा साहित्य में भी हमें ऐसी कई परिस्थितियाँ देखने को मिलती है जो मानव मन को छूती हुए भोग की स्थिति में होती है।

कथा साहित्य में पारिवारिक रूप :-

प्रत्येक समाज में मानवीय संवेदना जन्म लेती है । उस संवेदना व पारस्परिक संघर्ष के बीच काफी गहरा सम्बन्ध होता है । लेखक ने यही बात अपनी पुस्तक ''शहर के नाम'' में भी कही है कि मानवीय संवेदना से समाज का सृजन नहीं होता है ।[1] परन्तु इन्हीं संवेदनाओं से समाज के प्रत्येक व्यक्ति से वह सम्बन्ध भी स्थापित करता है । चाहे वह सम्बन्ध नारी व पुरूष के बीच का हो या आपसी परिवार के सदस्यों का । कभी-कभी यह सम्बन्ध मनुष्य को शहर व शहरवासियों से भी पृथक बना देता है । आपसी

---

(1) गर्ग मृदुला 'शहर के नाम', भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, वर्ष-2000, पृ. सं.-29

सम्बन्ध व रिश्ते समाज के व्यक्तित्व को भी बदल डालते हैं । यह एक व्यवहारिक जीवन का सत्य है।

''शहर के नाम'' में मृदुला जी ने स्वयं रहकर लेखक के मानवीय बोध को उकेरने का प्रयास किया है । उन्होंने स्वयं को समझकर निस्तब्धता से अंधकार को चीर कर प्रकाश फैलाने का भी प्रयत्न किया है । यह निस्तब्धता अन्धकार की तरह गहराकर पूरे आवरण को निगलने का प्रयत्न कर रही है । परिवार के सदस्यों के मध्य विचारों को सांमजस्यता ही समाज की सुदृढ़ता का परिचायक होती है ।

'अंधकार' जीवन के दुःखों के परत के मध्य रहस्य नहीं बल्कि व्यवहारिक रोमांच भी है। यह स्त्री-पुरूष के मध्य आकर्षण का एक सीधा सरल रास्ता है । वक्त के व्यतीत होने के साथ-साथ ही मानव अपने को समाज के विस्तृत शरीर में अंगीकार कर लेता है । समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा संघर्ष की कठिनता को बुराई कहता है लेकिन उसमें समानांतर चलते रहने की मशक्कत से वह कभी झुठला नहीं सकता।

समाज में व्याप्त कुरीतियों ही हमारे लिये सबसे बड़ी अड़चन होती है, इसी कारण से हम अपनी विकास नीति को सफलतापूर्वक पूर्ण नहीं कर पाते है । मृदुला जी के साहित्य में हमें धर्म एवं धर्म की असीम भावना

के भी दर्शन होते हैं । धार्मिक कार्यों की परिपाटी से वे स्वयं अनुभूत करती है । ''धर्म में आस्था अन्धविश्वास नहीं''(1) यह एक सुलझी हुई रणनीति है । इसके आधार पर हम स्वयं को आधारित मानते हैं एवं सामाजिक क्षेत्र के कार्य करते जाते हैं लेकिन यह अंधविश्वास है ? ऐसा माना जाता है कि धर्मान्धता असीम सीमा तक पहुंचने पर अंधविश्वास का रूप धारण कर लेती है । लोगों का विश्वास उस समय टूट जाता है जब देवालय को आज के कठोर हाथ नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं । कठोरता का एक रूप हम समाज में विघ्न करने वालों के रूप में देखते हैं । शायद मृदुला जी ने अपने साहित्य में इसी प्रकार के कुछ परिमेशों को लिया है ।

मृदुला जी के साहित्य में हमें वास्तविकता के साथ-साथ सामाजिक अनुभूतियों एवं पारिवारिक ज्ञान की भी संज्ञा देखने को मिलती है । नारी सुविधा दुविधा के मध्य धर्म को अंगीकार करती है, क्योंकि वह संस्कार से बंधी भारतीय नारी है । उसका अपना जीवन विवाह जैसे संस्कार से जुड़कर एकांकी नहीं बहुआयामी हो जाता है, जो दर-दर एक-दूसरे के सहारे जीने का पाठ पढ़ाया जाता है । परिवार की संरचना में हो रहे

---

(1) गर्ग मृदुला, 'शहर के नाम', भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, वर्ष-2000, पृ. सं.-50

परिवर्तन एवं समाज में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तन मनुष्य के मन एवं मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं । इसी कारण से वह कभी-कभी अपने आपको प्रभावी वस्तु के आत्मसात नहीं कर पाता है। वह पूर्व संचित जीवन दृष्टि से क्रिया प्रतिक्रिया करता हुआ वांछित संसार की संरचना करने में लग जाता है । आज के परिवर्तन का प्रभाव हमें मृदुला जी के कथा साहित्य में सामाजिक, धार्मिक बोध के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक बोध भी होता है । मनुष्य जीवन के समानांतर तो चलता है लेकिन उसकी सीमा बिन्दुओं के बीच बंधा नहीं रहता । जबकि वास्तविक संसार अपने देशकाल के यथार्थ की परिधि से बंधा रहता है । यह एक नहीं अनेक दिशाओं में विस्तीर्ण होता है ।

अर्थतंत्र बहुत सीमा तक समाज की व्यवस्था पर निर्भर करता है, मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में इसी तंत्र पर विचार किया है । इसी प्रकार के अनुभव जो आर्थिकता को लिये हुये भी है, यह वांछित अनुभव में परिवर्तित होते जाते हैं । लेखन करते समय प्रत्येक लेखक का एक ध्येय होता है, यह उद्देश्य या लक्ष्यविहीन नहीं हो सकता है क्योंकि उद्देश्यहीन व्यक्ति सृजनशील नहीं हो सकता है।

''मुक्ति बोध ने कहा था- आज का लेखक अनुभूत यथार्थ से दूर निकलकर किसी और के यथार्थ से कहानियाँ और उपन्यास गढ़ना

चाहता है, उसमें मानवीय अन्तरात्मा की हलचल मचाने वाली पीड़ा नहीं है, क्योंकि वह जरूरत से ज्यादा समझदार हो गया है और समझदारी का यह तकाज़ा है कि जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें समझौता करें ।''[1]

कथा साहित्य में सामाजिक व राजनीतिक रूप :-

मृदुला जी के साहित्य में हमें आर्थिकता के साथ-साथ समाज की संघर्षशील राजनीति का भी बोध होता है । समाज चाहता है कि एक व्यक्ति विशेष पूर्ण समाज पर अपना राज न करें इसीलिये वह भी परिवर्तन चाहता है । अंग्रेजों ने भी हमारे समाज को राजनैतिक स्तर पर गुलाम रखने के लिये संस्कृति के स्वभाविक व्यवहार तक को कुंठित कर दिया ।[2]

आर्थिकता की दृष्टि से मृदुला जी ने समाज को एक छत में रहने का ज्ञापन दिया, वे समाज में सामूहिकता के प्रश्न को बड़ा बल देती है जिससे उसमें आत्मसम्मान के साथ-साथ आपसी मेलजोल को बढ़ने का मौका मिलता है ।

''अनित्य'' नामक उपन्यास इनकी आंतरिक वेदना को प्रदर्शित करता है । ''अनित्य'' उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन के अहिंसात्मक और

---

(1) 'मुक्ति बोध' आचार्य धर्मवीर भारती ''मानवीय जीवन मूल्य'' नामक पुस्तक से उकरित।
(2) गर्ग मृदुला 'अनित्य', नेशनल पब्लिसिंग हाउस, नयी दिल्ली, पृष्ठ-1, 1998

क्रांतिकारी दोनों रूपों की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है । हमें पात्रों की सजग चेतना और आंतरिक पीड़ा को अहसास कराता है ।

अर्थशास्त्र की दृष्टि से आर्थिक हित ही समूहों और वर्गो के दृष्टिकोण के निर्माता होते हैं । इन हितों के समक्ष न तो तर्क और न ही नैतिक विचारों की ही चलती है । हो सकता है ऐसे में कुछ व्यक्ति राजी हो जाये, जो अपने विशेषाधिकार छोड़ दें ....

कल तक जो बातें आधी-अधूरी लगती थी वे आज जीवन की पृष्ठभूमि में घट रही है । आंतरिक वेदना को देख पाना भले ही मुश्किल हो पर आमतौर से ये भाव चेहरे पर बरबस दिखाई देते हैं ।[1] भौतिकवादी समाज में हर पात्र आंतरिक पीड़ा ग्रस्त है, जो अध्यामिकता की रेशमी चादर से छिपी है । विवाहेत्तर संबंधों में अहसास की पीड़ा व वेदना के चिन्ह अंकित हैं, या नहीं यह प्रश्न भी है ।

राजनीतिक दृष्टि से मृदुला जी ने भगत सिंह को एक विचारशील और योग्य क्रांतिकारी माना है । जिन्होंने अपने भारत की मिट्टी से जन्म लिया । और अपने देश की व्यवस्था और जनमानस को उन्होंने समझा, उनकी समस्याओं का अध्ययन किया, यही कारण उन्होंने बताया कि यदि

---

(1) डॉ. रामकृष्ण गुप्त 'महिला कथाकारों की कथा में दर्शन' पृष्ठ-111

आज हमारा युवा वर्ग उनसे प्रेरणा लेकर काम करेगा तो स्वयं को अपनी मिट्टी के कहीं ज्यादा नजदीक पायेगा । 'अनित्य' भगतसिंह के जीवन संप्रेरणा लेकर ही कृत्तित्व में सामने आया है ।

'अनित्य' पात्रों की नैतिक मापदण्ड की सहभागिता को भी इंगित करता है । पात्र 'अनित्य' के घटनाक्रम में उस हद तक हिस्सेदार नहीं बन जाये जितना कि उन्हें अंदाज था । उनकी व्यथा उन्हें ईमानदार मानदण्डो पर पूरा न उतरने के कारण है और मैं उस व्यथा को बहुत महत्वपूर्ण मानती हूँ ।

मृदुला जी ने अपने पात्रों का चयन भी शरतचन्द्र के पात्रों की भांति ईमानदारी के साथ-साथ जनसाधारण वर्ग से ही किया है । उनकी प्रतिक्रियाएं स्पष्ट, तल्ख व दोटूक हुआ करती है । यही कारण उनका विज्ञजनों की सभ्रांतता का भी है ।

मृदुला जी ने भयानक आर्थिक असमानता और चिरस्थायी वर्ग विभाजन को लेकर भी अपराधिक बोध की संज्ञानता प्रदान की है । वे सभ्रांतता के पीछे अनैतिक कार्यो व महाजनी सभ्यता की भी बात कहती है।

समाज का एक महत्वपूर्ण अंग राजनीति है । तभी तो राजनीति में आने वाली महिलाओं का भंयकर रूप से शारीरिक शोषण किया जाता

है । इस शोषण को यह कहकर खारिज कर दिया जाता है कि घर बार छोड़कर राजनीति में आई है । राजनीति का सुख क्या है समझने दो, बाकी का इतिहास साक्षी है । यह कहना एक कड़वा सच है कि हमारा समाज एक इलीटिस्ट या विशिष्ट वर्गीय समाज है । जब हमारे स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी जा रही थी उस समय भी विशिष्ट व आम जनता के बीच यही कर्म मौजूद था ।

सिर्फ इतना ही नहीं है कि विशिष्ट वर्ग को यहां सब सुविधायें प्राप्त हैं और आम जनता को एक भी सुविधायें उपलब्ध नहीं है, इससे कहीं भयानक बात यह है कि हमारी हर नीति, चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो चाहे उद्योग के इस विभाजन को कायम रखने के लिये काम करती है । यह विभाजन स्थायी है और उसके भीतर वे तत्व मौजूद हैं, जो उसे चिरस्थायी बनाये रखते हैं।

'अनित्य' में मृदुला जी ने विशिष्ट वर्गीय समाज और एक आम जनता के बीच के द्वन्द को उभारकर सामने लाने की कोशिश की है । इसके द्वारा हमें उन व्यक्तियों का परिचय प्राप्त होता है जिनकी मानसिकता काफी हद तक इस संस्कृति के दबाव में बनी है ।[1]

---

(1) गर्ग मृदुला 'अनित्य'- प्रस्तावना, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-1998 एवं नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली

उन्होंने इस उपन्यास में राजनैतिक पहलूओं को ऐतिहासिकता के पृष्ठ पर इंगित किया है । इसे 'अनित्य' से अविजित और उपन्यास की अवधारणा को स्पष्ट करने वाला पात्र प्राप्त होता है ।

मृदुला जी ने अपने इस उपन्यास के मूल प्रेरक के रूप में भगतसिंह और स्वर्णा को विशिष्ट स्थान दिया है । उन्होंने कहा कि ऐसा कार्य करें तो कितनी शांति और सुविधा होगी ।

उनका प्रत्येक पात्र सामाजिक बंधनों व सोच-विचार के साथ बंधा हुआ सा प्रतीत होता है । आवश्यकता के अनुसार मृदुला जी ने उनकी सोच को वर्तमान परिस्थिति का जामा पहनाया है । तभी नीचे दो महिलाओं में इतना घमासान युद्ध छिड़ा कि बांकी औरतें दर्शकों की पंक्ति में आ गयी और अविजित के लिए दर्शक बने रहना मुश्किल होने लगा । सामान्यत: ऐसा हमारे साथ भी अक्सर हो जाता है कि महिलायें आपसी चर्चा करें और यह चर्चा इतनी अधिक गंभीर हो जाये कि पास में खड़े भद्र पुरूष इधर-उधर हो ही जाते हैं । मृदुला जी ने अपनी पुस्तक में इसी प्रकार के सहज उदाहरण प्रस्तुत किये हैं ।

मृदुला जी ने अपने साहित्य के सभी आम पहलूओं को एक धागे में पिरोया है। चाहे वह खेतिहर किसान हो या एक क्लर्क या अधिकारी

अथवा कोई महाजन। साहित्यिक दृष्टि से मृदुला जी ने क्या के शेक्सपीयर जैसे नाटककारों का और उनकी कृतियों का भी अवलोकन कराया है ।

''स्वयंभूमिध्वंस'' नीति के अंतर्गत किसानों की फसलें जला डालना और यातायात के साधनहीन लेना क्या प्रख्यात ब्रिटिश ''सेन्स ऑफ ह्यूमर'' का नमूना है या शेक्सपीयर की ''ग्रेंड आइरनी'' का । ''हमारे सैनिक किस गरिमा के साथ मिस्त्र, सीरिया और ईराक के तपते रेगिस्तान में जाने दे रहे है और उसका मुआवजा हिन्दुस्तानी अवाम को यह मिल रहा है ....''

पारस्थरिक सम्बन्ध ही समाज की आधारशिला है और इन सम्बन्धों को मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में स्पष्ट किया है । मृदुलाजी के उपन्यासों और उनकी कथा यात्रा में स्वयं लेकर चलने और पारस्परिक संबंधों का बयान करने का ढंग एक निराला है । उनके 'अनित्य' उपन्यास में उन्होंने 'शिकायती आँखे पीछा कर रही है'' ऐसा कथन किया है । जिससे यह जान पड़ता है कि वे कथानकों में सदैव भाव-भंगिमा को ढूँढने का प्रयास करती हैं ।

मृदुला जी के कथा पात्रों में सांस्कृतिक तारतम्यता का भी बोध होता है । कहानियों में अक्सर कथा पात्र छोटे-छोटे प्रोग्राम व सैर-सपाटा करते इंगित किये गये । सांस्कृतिक आदान-प्रदान हमारी दैनिक जीवन के

लेनदेन व पारस्परिक हलचल के माध्यम से भी हस्तांतरित होती है । उन्होंने एक स्थान पर प्रकृति का हमारे जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता है यह दर्शाया है -

प्रकृति है उसकी ''खुशमिजाजी, हमदर्दी, कियभाव, समाजप्रियता या डर ''सिर्फ डर'' अविजित की तरह, अकेलेपन का डर । उसका इस प्रकार से रहना उसकी वेदना, करूणा व श्रद्धा का द्योतक है । मृदुला जी ने अपने कथानकों को स्वतंत्र रहकर भी बंदी बनाकर अपने इच्छा शक्ति का मोहरा बनाया है । इस प्रकार प्रत्येक पात्र अपनी मर्जी से कोई भी कार्य सम्पादित नहीं कर सकता है । संस्कृति व सद्‌भावना एकता के दो पहलू हैं, इनके बिना तो हम समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं । यदि संस्कृति को हटाये तो सद्‌भावना की कल्पना करना कठिन ही है ।

कथन है- ''अविजित मकान के छज्जे से नीचे झांक रहा था, सड़क के किनारे लगे सार्वजनिक नल पर औरतें पानी भर रही थी- धक्का-मुक्की और गाली-गलौज से हवा गरम थी, वह यह सोच रहा था कि यदि वे लोग शांति से एक लाइन में खड़े होकर बारी-बारी पुरूष जो राष्ट्रीय क्षितिज पर छाया हुआ था, मुझसे बहुत दूर था पर बौद्धिक और मानसिक धरातल पर मुझे झकझोर रहा था ।'' मृदुला जी के इस घटना वृत्तांत से राजनीतिक सोच और सामाजिक बोध का महत्व कम नहीं होता है बल्कि और बढ़ जाता है ।

मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में कहीं-कहीं राजनैतिक घटनाओं को लिखते हुये उसे महत्वशील बनाने की कोशिश की है ताकि सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ राजनीतिक गतिविधियों की भी जानकारी हो सके ।

कथा साहित्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप :-

समाज धर्म और संस्कृति के मंच पर स्थित है । धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के अन्तर्गत हम उन समस्त कार्यकलापों को लेते हैं जिसके द्वारा हम समाज में अपनी जगह बना पाते हैं और जिसके माध्यम से हम अपना और अपने परिवार के सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता लाते हैं । मृदुलाजी ने साहित्य के माध्यम से अपने सांस्कृतिक पारिभाषिक तथ्यों को समेटने का प्रयास किया है । अनित्य उपन्यास उनके इसी कथा-यात्रा का एक मापयंत्र है ।

''तभी से तो दिमागी हालत ऐसी हो गयी है शरीर ठीक न हो तो मन और दिमाग कैसे स्वतंत्र रहेंगे । यह मस्तिष्क का विकार नहीं यह देह की बीमारी है । यह मानव स्वभाव है और वह इसे अच्छी तरह मानता है।''(1)

---

(1) गर्ग मृदुला 'अनित्य', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 10

राजनैतिक परिवेश के साथ आर्थिक व सामाजिक परिवर्तनों और उनके नवीन रूपांतर की रेखायें आम जनता के चेहरे पर खींचने की सफल कोशिश मृदुला जी ने की है।

स्वतंत्र नीति निर्धारण का अधिकार क्या यूरोप के देशों का पुश्तैनी हक है ? आजादी उनकी बपौती है ? जब तक उनकी अपनी आजादी पर आँच नहीं आती वे शांति की देवी का आह्वान करते रहते हैं पर दूर सुलग रही आग की गरम हवा उन्हें छू कर जाये तो टेक्स के गंदले पानी से उसका विसर्जन कर आजादी की देवी को सत्तारूढ़ करने में जरा देर नहीं लगती । ..... जंग के मैदान में मर मिटना धर्म हो जाता है, शांति की पुकार गांधी जैसे पागलों का प्रलाप ....''

इस प्रकार से मृदुला जी के कथा साहित्य में राजनैतिक पहलूओं को भी सम्मिलित किया गया है । सांस्कृतिक परिवेश के साथ-साथ राजनैतिक व आर्थिक पहलूओं को भी मृदुला जी ने परिष्कृत किया है । एक साथ और एक विचाार होने के बावजूद भी उनके कथा साहित्य में एकांकीपन और पृथकता परिलक्षित होती है ।

''ब्रिटीश साम्राज्य का सबसे खौफनाक पहलू है'', यह हम खुद अपने से बेगाने हो गये हैं । उनसे नफरत करने के बजाय खुद से नफरत करने पर मजबूर है।

''अंग्रेजों का अनुकरण करके जीने वाला उच्च वर्ग सामान्य आदमी से हर तरह दूर होता गया । आजादी चाही तो अपने लिये, देश के लिये नहीं'' भारतीयता के साथ-साथ एक दूसरे की पीड़ा की भावना व मजदूरी को मृदुला जी बहुत खूबी से समझती हैं । उन्होंने पुरूष का नारी पर पौरूषता दिखाना और बेहतरीन तरीके से उसकी भावनाओं को कुचलना आदि भी अपने कथा साहित्य का हिस्सा बनाया है ।

''पौरूष के दंग से उत्पन्न करूणा । कैसा पौरूष ! कैसा दंभ, शरीर धधकती आग जो व्यक्तित्व की पूर्णाहुति लेकर जहरीला धुँआ उगला करती है ....उम्र भर उसका कसैलापन सांस के साथ फेफड़ों में घुलता रहता है।''

हमें मृदुला जी के साहित्य में एक पृथकतावाद का भी बोध होता है । उनकी साहित्यिक गतिविधियों को देखे तो वे काफी विविधता लिये हुये होती है । कहीं उनके साहित्य में राजनैतिक परिदृश्य हैं तो कहीं समाज के परिवार में उत्पन्न विवाद और कहीं पर शांति व प्यार की श्रृंखला । यही उनके साहित्य की विशेषताऐं हैं जिसके परिचय हमें अध्ययन करने पर प्राप्त होते हैं । ग्रामीण अंचल से लेकर बड़े शहरों और मध्यमवर्गीयता के परिवारों और उनकी सभ्यता का बोध उनके साहित्य में देखने को मिलता है । एक स्थान पर उन्होंने लिखा -

"अपना तो यह हाल था कि जब भी कोई किताब पढ़ने बैठें तो ऐसे आत्म विभोर होकर कि कुछेक पन्नों के बाद, पात्रों के संवाद उन्हीं की जुबानी बोलने लगे । ऐसे पागल को किस्मत से मंच मिल जाये तो कहना ही क्या ?"[1]

"आजकल मगर; दूसरा ही डर सताने लगा है मंच से अलग होकर अभिनय कर ही नहीं पाती ।"

मृदुला जी ने अपनी कथाओं में स्वयं को डुबोकर उसमें उभरकर आने का प्रयास किया है । लेखक ने स्वयं को नाटक का एक पात्र समझकर कथा या एकांकी का अंश स्वयं पर ही दर्शाने का प्रयास किया है । जैसे कोई नाटक करते-करते उसके पात्र स्वयं ही बन जाते हैं । कहीं-कहीं लेखक ने स्वयं को समाज की बागडोर का एक हिस्सा बतलाने की भी कोशिश की है। जैसे कोई व्यक्ति को कुछ कार्य करने या विचार करने की प्रेरणा दे रहा हो ।

"मैं देख रही हूँ । पानी में वह है । डुबकी लगाकर एक पुलिंदे को उठा कंधे पर डाल लिया है उसने । अब धीरे-धीरे तैरकर किनारे आ रहा है । पुलिंदा हिल डुल नहीं रहा, पर साफ दिख रहा है, वह कपड़ों का

---

(1) गर्ग मृदुला 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 29 वर्ष 1998

पुलिंदा नहीं, काली पोशाक में लड़की है । चुपचाप बचाने दे रही है अपने आपको, जैसे इसी के इंतजार में रही हो।''[1]

कथा साहित्य में लोकहितकारी एवं मानवीय रूप :-

इस प्रकार से मृदुला जी ने अपनी कहानियों में बरबस खींच लेने वाले सहानुभूति चित्र भी प्रस्तुत किये हैं । समाज में रहकर उन्होंने आपसी स्नेह एवं सहानुभूति के कई मार्मिक चित्र प्रस्तुत किये हैं । "अनित्य" उपन्यास में उन्होंने पात्रों के बीच भी आपसी वैमनस्य तो दर्शाया है लेकिन वह घृणा या वैमनस्य अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ है, जबकि अन्य हिन्दुस्तानी पात्र एक सत्यता पर तटस्थ है । सही कारण है कि मृदुला जी के साहित्य में विविधता देखने को मिलती है ।

पं. नेहरू ने भी इसी सन्दर्भ में एक बात कही थी -कामयाबी तभी हासिल होनी चाहिये जब आदमी उसके काबिल हो वरना कुर्बानी कोई देगा और ऐन मौके पर हुकुमत मौका परस्त लोगों के हाथों में चली जायेगी ।[2]

इसे हम एक दार्शनिक विचार कह सकते हैं । जैसे कई विचार मृदुला जी के कथाओं में देखने को मिलते हैं । इसी प्रकार आपसी परामर्श

---

(1) गर्ग मृदुला 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 29 वर्ष 1998

(2) गर्ग मृदुला, 'अनित्य', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ 98, वर्ष : 1998

और एकजुटता का परिचय भी हमें उसके कथा साहित्य में देखने को मिलता है । ''अनित्य'' उपन्यास एक स्वतंत्रता आन्दोलन की जीवंत झांकी है । इसमें मृदुला जी ने मध्यम वर्ग एवं साधनहीन किसानों की एकजुटता और उनका अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध टूट पड़ना एक हकीकत को बयान करती है।

''चित्तकोबरा'' में भी कहीं-कहीं दर्शन का भी बोध होता है । ''ब्रेख्त ने कहा है, यह था परोपकार का आदर्श रूप सबका भला हो गया और भला करने वाले का बुरा नहीं हुआ । किसी को बलिदान नहीं देना पड़ा । बलिदान देने से आत्मा कुंठित हो जाती है । आदमी अपने ऊपर घमण्ड करने लगता है ।[1]

मृदुला जी के साहित्य में सामाजिक स्वार्थ के साथ-साथ अपनापन और परोपकार का भी दृश्य देखने को मिलता है। 'अपना काम तो सेवा करना है, भइया,' सरण कहता गया, ''आजादी मिलने पर जो एजेंसी सरकार ने हमें दी थी, वह भी हमने छोटे भाई को दे डाली, पेट्रोल पम्प का लाइसेंस मिला वह लड़का कहने लगा-मैं चला लूंगा, मैंने कहा ठीक है भइया चला लो ।''[2]

---

(1) गर्ग मृदुला, 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ 35, वर्ष : 1998

(2) गर्ग मृदुला, 'अनित्य', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ 111, वर्ष : 1998

मृदुला जी का कथा साहित्य विवेचनाओं से भी भरा हुआ है । सभी तरह की घटनाओं के साथ-साथ उन माध्यमों को भी उन्होंने अपने कथा साहित्य में सम्मान दिया है । ''अनित्य'' नामक उपन्यास में मृदुला जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका को वरीयता दी है, इसी भांति उन्होंने पात्रों के चयन और उसके आपसी प्रेमभाव, संघर्ष, समूह एकजुटता का भी बखूबी परिचय दिया है ।

ग्रामीण स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ शहरीकृत बेरोजगारी का भी चित्रण किया है । उन्होंने गरीबी भूखमरी के अलावा बेरोजगारी से झूझते आदमी का भी चित्रण किया है । मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक चित्रण के साथ-साथ रोमांचकता का भी प्रदर्शन किया है।

''अभी नहीं मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ । अपनी आँखों के सामने इतिहास बनता देखूं, इससे ज्यादा रोमांचकारी बात मेरे लिये और क्या हो सकती है ।''(1)

''चित्तकोबरा'' में भी इसी प्रकार रहस्यवाद का उदाहरण देखने को मिलता है। ''पर क्या बतलाऊँ, शीशा देखना भी एक मुसीबत है । अपनी सूरत तो दिखेगी पल भर को, कहां-कहां का भूला-बिसरा सब याद आ जायेगा ।''(2)

---

(1) गर्ग मृदुला, 'अनित्य', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 122, वर्ष : 1998

(2) गर्ग मृदुला, 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 39, वर्ष : 1998

इसी उपन्यास में लेखक ने आपसी सद्भावना व एकजुटता का भी परिचय दिया है -''सीधी सी बात है कि एक देश है । वहीं के लोग मुसीबत में हैं । उन की भाषा मैं समझता हूँ । मुझे जाना ही चाहिये ।''(1)

मृदुला जी का कथा-साहित्य आपसी विचार-विमर्श जैसा प्रतीत होता है । कथा होने के बावजद वे साक्षात प्रतिमाओं से प्रतीत होते हैं।

----::+::----

(1) गर्ग मृदुला, 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 51, वर्ष : 1998

अध्याय षष्टम

(अ) मृदुला गर्ग की नारी चिंतन में भागीदारी

(ब) उनके कथा साहित्य में नारी की पहिचान

अध्याय षष्टम

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी चिंतन की भागीदारी

(अ) **पारिवारिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में :-**

परिवार को एक समृद्ध धरोहर माना गया है इसी दृष्टि से भी समाज का रूप परिवारों की श्रृंखला है । मृदुला जी का कथा साहित्य पारिवारिक दृष्टि से काफी समृद्ध साहित्य है जिससे हमें परिवार शब्द का वास्तविक बोध होता है । यही कारण है कि मृदुला जी का साहित्य परिवार के समस्त सदस्यों के बीच कहे अनकहे घटकों का सही उच्चारण करता है । पारिवारिक धरातल अधिकांश उपन्यासों में उपन्यासकार का सही चित्रण करती है क्योंकि हमें यहीं से परिवार का अर्थ प्राप्त होता है।

वर्तमान संदर्भो में परिवार सम्बन्धी उपन्यासों के क्षेत्र में कृष्णा सोबती, श्रीमती मालती जोशी, मृदुला गर्ग, मनू भण्डारी, डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, डॉ. उषा प्रियंवदा, डॉ. उषा यादव और अन्य नारी कथाकारों का अभूतपूर्व योगदान है । परिवार के सन्दर्भ में हम मृदुला गर्ग जी का कथा साहित्य समृद्ध पाते है कोई अन्य कथाकारों का नहीं, ऐसा कदापि नहीं है क्योंकि हमें और

कथाकार भी ऐसे प्राप्त हुये हैं व उनके विचार मिले हैं कि हम उन पर शोध कर सकते हैं और नई खोज नये विचार सीमाएं कर सकते हैं ।

''लावा उबलता है तो क्या धरती की सीमाएं उसे रोक पाती हैं? व्यक्ति दो हिस्सों में बंटकर जीता है तो क्या दोनों के प्रति न्याय कर सकता है ?''(1)

शोधार्थिनी का विचार है कि समाज में रहकर भी हम अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति न्याय कर सकते हैं । व्यक्ति अपने परिवार और समाज दोनों के प्रति सही अर्थो में जीता है, उसके दो दायित्व होते हैं, उन्हें वह पूरा करता है लेकिन क्या वह दोनों के प्रति न्याय कर पाता है ? यही लेखक का कथन है- हमें ऐसी स्थिति भी प्राप्त होती है जिसमें वह स्वयं कोई परिवार का गला घोंटकर भी समाज के दायित्वों के लिये कार्य करता है; उन्हें पूरा करता है।

''भीतर की आदिम और उद्दाम जिज्ञासाओं को छांटकर जीना और बाद में जीते रहना ही क्या समाज के प्रति उत्तरदायी होना है?''(2)

---

(1) मृदुला गर्ग -''चित्तकोबरा'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली के संदर्भ में वर्ष : 1998
(2) मृदुला गर्ग -''चित्तकोबरा'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली के संदर्भ में वर्ष : 1998

"और ऐतिहासिकता के प्रवाह को अंतिम नियति मानने में व्यक्ति की समझदारी और जीत है या इतिहास को अपनी जरूरतों और इच्छाओं के अनुरूप गढ़ने में व्यक्ति जीवन की सार्थकता ?"(1)

प्रत्येक व्यक्ति की अपने परिवार के प्रति भी कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं परन्तु हम उन्हें समाज के दायित्वों के समक्ष छोटा समझते हैं और उसे कभी न कभी पूरा करने के उपलक्ष्य में स्थानांतरित करते रहते हैं । परिवार तो हमारा होता है, और समाज भी हमारा अपना है तो दोनों में कुछ न कुछ अवश्य है क्योंकि हम परिवार को नजर अंदाज करके परिवार की ओर से समाज को वरीयता देती है ।

परिवार की जिज्ञासाओं के प्रति भी हम अपना वक्त व्यतीत करते हैं और यही कारण है कि वक्त समेटते हुये उसे पूरा करने की ख्वाहिश हमारे दिमाग में रहती है । समाज हमारा काफी हिस्से में फैला हुआ रहता है चाहे वह स्वयं निर्मित समाज हो अथवा अन्यों के द्वारा बनाया हुआ समग्र समाज!

---

(1) मृदुला गर्ग –"शहर के नाम", कहानी "चकरघिन्नी", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. 53

कथाकारों को सम्पूर्ण पृष्ठभूमि मिलती है कि वह समग्र समाज को दर्शाये उसमें विविध रूपों और रंगों को प्रदर्शित करें । नारी की पहिचान समाज में किये कार्यो से भी हुआ करती है । मनुष्य नारी का साथ यदि नहीं भी देता है तो वह स्वयं को अकेला पाकर दूसरी संवेदन शक्ति को मजबूत तो अवश्य करता है, लेकिन परोक्ष रूप से !

''मैं शादी करके घर बार चलाना चाहती हूँ । अच्छी पत्नी और माँ बनना चाहती हूँ । इसमें इतना अजीब क्या है जो आप लोग इस तरह जिरह कर रहे हैं ?''(1)

नारी की महत्ता घर परिवार में इस कारण से भी बढ़ जाती है कि वह परिवार को अपने परिवार को महत्व देती है भले ही उसकी पहिचान समाज में किसी और स्थिति में अथवा पद की रहती है लेकिन ऐसी नारीयों के प्रति हम नतमस्तक हो सकते हैं जिनकी जिन्दगी उन्होंने स्वयं ने सजाई और साथ ही अपने दायित्वों को पूरा कर अपना परिवार और समाज की स्थिति को भी उभारा। ''सब कहते हैं जिन्दगी तबाह कर ली मैंने ।

---

(1) मृदुला गर्ग, -''शहर के नाम''-कहानी चकर घिन्नी'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000, पृष्ठ सं. : 60

जानते हैं क्यों ? शादी नहीं की। हिन्दुस्तानी औरत हूँ, कोई मजाक है। कितने लोग आये मुझे देखने। सजन्धजकर बैठी थी मैं उनके सामने । बेतवा किये घूर-घूरकर मुझे और मैं ढूंढा की एक मुस्कराहट उनकी आँखों में ।''(1)

अपनी जिम्मेदारियों के लिये नारी भी कई कुर्बानीयाँ करती है, विवाहोपरान्त अथवा विवाहोपूर्व परंतु वह सफल तभी मानी जाती है जब वह स्वयं के विचारों को समाज में पर्दापित करती है । मनुष्य चाहकर भी यह नहीं कह सकता है कि वह गलत है क्योंकि वह अपनी घर में जीत चाहता है । उसका स्वयं का मन भी यही चाहता है कि - "और तुमने तो पुरूष समझकर कभी मेरी तरफ आँख उठाकर देखा ही नहीं। उसे छोड़ों । क्या इन्सान समझकर भी नहीं देखा? एक दिन भी तुमने यह नहीं सोचा कि यह जो मैं हर समय किसी भी समय तुम्हारे पास चले आने के लिए तैयार बैठा रहता हूँ''(2)

स्वयं मनुष्य भी अपनी जिम्मेदारियों के लिए कृत संकल्पित रहता है, वह इसके लिए चाहे तो अन्यों को भी इसके बारे में

---

(1) मृदुला गर्ग -"शहर के नाम'', कहानी "अस्क'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000 पृष्ठ सं. 49

(2) कहानी संगत, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. 88

बताता है । इसे परिवार के साथ-साथ समाज की गतिविधियों तथा इसके कार्यकलापों की जानकारी भी होना चाहिये । जिससे हम उससे कुछ सीखें और अपने विचारों के साथ उसे मिलाये ।

(ब) **सामाजिक एवं मानवीय पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में** :-

सामाजिक रूपों की व्यवस्था का जहाँ तक प्रश्न है, वहां पर मृदुला जी का साहित्य समृद्धशील है और नारी की सामाजिक स्थिति की भी चर्चा करता है । नारी को स्तमभिक स्थिति में दर्शाने की कला का दूसरा नाम ही मृदुला गर्ग है । परम्परागत मूल्यों को स्थिरता देते हुये आगे और नवीनतम प्रकृति प्रदान करना ही नारी की विविधता का रूप है । यदि हमने अपनी परम्परा को जीवित रखा तो शायद यह हमारा ध्येय बन सकती है । हमारी शास्त्रीय और साहित्यिक परम्परा को सतत् बनाने के लिये ही सतत् प्रयत्न आवश्यक हैं ।

मृदुला जी परम्परावादिता समाप्त न करते हुये उसके मूल्यों को जीवंत रूप से और उसे अंगीकर करने हेतु भी प्रयत्नशील है। सब कुछ ही मीनारों और ऊंची मीनारों पर निर्भर नहीं होता है बल्कि एकाकी और निर्भीक तथा आपसी पारस्परिक

जीवनी पर निर्भर करता है भले ही वह बाद में ऊंची और संवादी ही क्यों न हो । भले आप सामाजिक तौर पर एकाकी रहकर संघर्ष करें -

''यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पंक्ति को दे दो ।''

-अज्ञेय

हमें मौलिकता की विषमता में भी प्रयत्न को सर्वोपरि मानना होता है यही कारण है कि कठिनाई में भी इसका मूल्य होता है ।

हमारे परिवर्तनशील समाज में कई जीवन रूपी वस्तुयें स्थिर भी होती हैं । आंतरिक वेदना, संघर्ष, पारस्परिक सामंजस्य व व्यवहार, तर्क इत्यादि ही हमारा संबल है । यदि यह ठीक नहीं लगता तो इसे हम अंगीकार नहीं कर सकते हैं और सामाजिक जीवन मूल्य भी नष्ट हो सकता है । समाज में नारी का मूल्य ऐसा भी हो सकता है कि वह अनुकंपा बर्दाश्त नहीं कर सकती है।

सामाजिक जीवन मूल्य परिवर्तित हो सकते हैं और इन सबमें यदि हम स्थिर रहे और उन्हें परिवर्तनता प्रदान करें तो यह

कदापि सही नहीं होगा और यदि इन्हें ठीक मान कर वस्तु स्थिति को देखें तो शायद यह सबसे सही वस्तुस्थिति होगी ।

हमारा वस्तुपरक सिद्धांत हमारे लिये सफल साबित हो सकता है यदि हम उसे अपने अनुकूल बना ले अर्थात् वास्तविकता देखते हुये हमारी जिज्ञासा भी शांत हो जाये तथा नवीन आरंभ भी हो जाये । सामाजिक जीवन में दैनिकता भी मायने रखती है। यही कारण है सत्यता भी यहां रहती है और अधिकांश दैनिकता का भाग सही होता है । नारी का जीवन आवावेग और विस्तृत भी रहता है । अशांत भी रहते हुये वह तेज व तीव्र हो सकता है । इसके लिए हम प्रयत्नशील रहे भी तो समयानुसार वह दीप्त रहता है और अपना प्रभाव बताता है ।[1]

(स) <u>लोकहित के परिप्रेक्ष्य में</u> :-

लोकहित के सन्दर्भ में मानवीयता पर आधारित उपन्यासों में अधिकतर देखने में आता है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी होकर समाज के कई भागों में अपने आप को समाहित करता है । मानव

---

(1) मृदुला गर्ग, "उसके हिस्से की धूप", राजकमल प्रकाशन, वर्ष 1996, पृ. 35

पर आधारित परिकल्पना ही मानवीयता की श्रेणी में आती है और यही कारण है कि मानवीयता की श्रेणी ही हमारे समाज की आधारशिला है।

मृदुला जी के उपन्यासों में कई पात्रों में मानवीयता के गुण स्पष्ट परिलक्षित होते हैं और कहीं-कहीं पर सम्भवत: ही वह मानवीय हो जाते हैं। हमारा ध्येय ही सदैव कई कारणों का परिचायक होता है । यदि हम सोचे कि यह कार्य सफलता से हो जाये तो वह सदैव कठिनता के साथ परिलक्षित होते हैं । मनुष्य जन्य बातों का हमारे समाज पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है । रचनाप्रक्रिया लेखक की लेखनी खत्म होने के बाद भी जीवंत बनी रहती है और यदि वह समाज पर आधारित हो तो वह तो चिरकाल तक जीवंत बनी रहती है । घटनाक्रम भी हमारी परिस्थितियों को विचारशील बनाते हैं । घटनायें नित् नये-नये आयामों को पकड़ती और छोड़ती रहती है ।

मनुष्य समाज में रहकर सामाजिक वेदना को जानता है और उसे महसूस करता है। यदि हम प्रक्रियाजन्म व स्वाभावगत तर्क के आधार पर जीते हैं तो वह कभी-कभी कष्ट कारक भी हो सकता है । यही कारण है कि समाज को परिवर्तनशील माना जाता है ।

(द) **धार्मिक चिंतन के सन्दर्भ में** :-

मृदुला जी का कथा साहित्य सामाजिकता के साथ-साथ धार्मिक पहलूओं को भी समेटने वाला है । उन्होंने धार्मिक निष्ठा को सामाजिक निष्ठा का तो नाम दिया है परंतु उसे अंधविश्वास की श्रेणी से काफी पृथक रखा है । उन्होनें कहानियों में धर्म, धर्म में आस्था और रूढ़िवादिता के प्रति अपने संघर्ष को भी प्रदर्शित किया है । ''करार'' तथा ''शहर के नाम'' में मृदुला जी ने धर्म में आस्था को बड़े निराले ढंग से निरूपित किया है । वे कहती हैं आज मनुष्य धर्म को भी राजनीति का अखाड़ा बना देना चाहता है वह चाहता है कि सभी जनता के लोग जो उसे चाहते हैं उसका अन्धानुकरण करें । बिना रणनीति और योजना के समस्त स्थानों पर उसी का बोलबाला हो।

मृदुला जी ने अपनी कथाओं में अंधकार के बीच एक प्रकाश व आशा की ज्योति के रूप में पृथक अंदाज में दर्शाया है । मृदुला जी ने धर्म को मानव का अस्त्र बताकर सभी को अचरज में भी डाल दिया है । हालांकि कई स्थानों पर उन्होंने इसे गलत बताया भी है । लेखक का मानना है कि श्रेष्ठ विधा के लिए यदि धर्म इजाजत नहीं देता तो फिर पृथक धर्म पालन के

जरिये उस विधा को आगे बढ़ाना चाहिये । लेखक ने अपनी ओजस्वी लेखनी से यह पृथकतावादी की बात कही है । हम सदैव एक ही परिपाटी के जरिये आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं लेकिन लेखक का कहना है कि सदैव अलग पहिचान के नजरिये सामने आना चाहिये ।

मृदुला जी ने समाज के संघर्ष को एक पृथक संकल्पना के माध्यम से प्रदर्शित किया है । हम चाहते हुये भी एक अलग हांडी चूल्हे पर नहीं चढ़ा सकते जब तक उसे सहमत समाज की छाप वाली लकड़ी जलने के लिये नहीं मिले अथवा विरोधस्वरूप पानी भी अग्नि पर पड़ सकता है, इसका सामना करना भी एक संघर्ष गाथा है । मृदुला जी के साहित्य की पहिचान इसी से बनती है ।

(ई) आर्थिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में :-

हमारे अर्थ तंत्र पर पूर्ण दुनिया टिकी हुयी है । समाज की आधारशिला आर्थिक पहलू होते है । यहीं रहकर हम अपने घर को सजाने व संवारने में लगे रहते हैं । मृदुला जी के साहित्य में समाज व आर्थिक स्थितियों का विषय-वर्णन देखने को मिलता है । उन्होंने अपने साहित्य में समाज प्रधान उपन्यासों के

साथ-साथ आर्थिक तथ्यों से भी उपन्यासों पर भी विचार किया है। हम जानते हैं कि बिना अर्थ के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता, इसी को ध्यान में रखकर ग्रामीण अंचल की महिला की पीड़ा से लेकर शहरी क्षेत्रों की महिला की बेबसी को बखूबी अपने साहित्य में परिलक्षित किया है ।

मृदुला जी के कथा साहित्य में आपसी संबंध विशेष रूप से देखने को मिलते हैं चाहे वह मित्रवत् हो अथवा एक-दूसरे से पृथक विचार रखने वाले स्त्री-पुरूषों के, संबंध कहीं न कहीं अवश्य टिके हुये हैं । चाहे वह हल्की सी धूरी ही क्यों न हो । आर्थिक विषमताओं के बावजूद आज नारी समाज में रहकर भी धनी है, अपने विचारों और आपसी संबंधों के कारण, वह चाहती है कि मेरा परिवार मेरे विचारों वाला होकर समाज में अपनी साख रखें, और विपरीत परिस्थितियों से भी संघर्ष करें ।

मृदुला जी ने अपने उपन्यासों व कहानियों यथा 'शहर के नाम' 'अनित्य', 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी' आदि में शहर की कठिनाईयों को अथवा फैक्ट्री मिल मजदूरों की व्यथा-कथा को दर्शाया है । छोटी-छोटी अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये मनुष्य

को किस तरह की मेहनत करना पड़ती है और इसके लिये उसे घण्टो या कई दिनों के लिये अपने परिवार से पृथक भी रहना पड़ता है । आर्थिक विडंबनाओं के चलते हम कोई भी विचार मस्तिष्क में नहीं ला सकते क्योंकि हमें और कोई काम सूझ ही नहीं सकता है । संघर्ष दर संघर्ष और आगे समाज के विरूद्ध विचार रखते हुये भी आगे बढ़ने की प्रेरणा ही हमारा सबसे बड़ा संबंल है । और यही कारण है कि नारी में इस आगे बढ़ने के चरणों में किसी न किसी की प्रेरणा अथवा प्रेरक विचार की अपनी आधारशिला हुआ करते हैं । मृदुला जी का कथा साहित्य इस प्रकार के विचारों में ओतप्रोत है ।

(फ) <u>राजनीति चिंतन के परिप्रेक्ष्य में</u> :-

''अनित्य'' अर्थात् किसी बंधे हुये समाज से पृथक होकर अपनी रचना करना अथवा नित्य किसी किये जाने वाले कार्य से पृथक अपनी छवि निर्मित करना । उक्त उपन्यास क्रांतिकारी स्वतंत्र वेदना को प्रदर्शित करने वाला उपन्यास है । पूर्व में जो चेतना नारी के लिये बंधनकारी थी वह आज अपनी पहचान के रूप में समाज का मार्ग प्रदर्शित कर रही है । संघर्ष

सदैव किसी नित्य से हटकर ही कार्य करता है, चाहे वह समाज दर्शन हो अथवा राजनीति दर्शन शास्त्र । हम हमेशा समाज को राजनीति से जोड़ने की कोशिश करते हैं परंतु सदैव यह पूरक होते हुये भी एक-दूसरे के विपरीत पर्यायों वाले होते हैं । हमारे नैतिक मापदण्ड हमें राजनीति की बेड़ियों के रूप में प्रदर्शित करते रहते हैं । देशभक्ति का जज़्बा एक पृथक बात है और निज स्वार्थों के लिये समाज को समक्ष रखकर उसकी भावनाओं से खिलवाड़ करना पृथक बात है । यदि ऐसी भावनाओं का समूह ज्यादा कुंठित हो जाये तो विस्फोटक स्थिति निर्मित हो सकती है। समाज से नारी विद्रोह करके राजनीति को अपना सहारा बनाना चाहती है परंतु शोषक समाज की बलि चढ़ जाती है और यही कारण है कि अधिकांश महिलायें राजनीति के क्षेत्र में सफलता से पूर्व ही मार्ग से भटक जाती है ।

राजनीतिक गहमागहमी के मध्य हम स्वयं भी यह देख सकते हैं कि अस्थिरता के चलते कोई ठोस निर्णय नहीं लिया जा सकता है । राजनीतिक परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि जिस तरह का मनुष्य हो वही बात दोहराने लगो, और पुनः अपनी पूर्व स्थिति में आ जाओ ।

मानव जीवन एक लहर के समान होता है, उसमें जीवन दर्शन के विविध आयाम छुपे रहते हैं । व्यक्ति चाहे तो उसमें अपने प्रयत्नों के माध्यम से कई रंग भरकर एक स्वतंत्र जीवन रंग उत्पन्न कर सकता है । इसके लिए उसे असंख्य प्रयत्न भी करना पड़ सकते हैं । इतिहास गवाह है कि प्राचीन सभ्यता से लेकर अभी तक नारी की महिमा का बखान किया जाये तो यह एक चिन्तन का विषय बन सकता है । नारी का चिन्तन उसकी अपनी विचारधारा से ही ओतप्रोत रहता है । मनुष्य होकर भी उनकी विचारधारा का अध्ययन बड़ी ही कठिनता से कर पाया है ।

मृदुला जी ने अपना साहित्य नारी के इन विविध रूपों के चिन्तन से सराबोर किया है । नारी विविधा है, वह बहुधा संघर्ष की गाथा है । नारी ने स्वयं का समाज में स्थान अपने स्वयं के संघर्ष एवं समाज को दी गयी एक नई सोच से ही कायम किया है।

हमें सदैव ही विभिन्न लेखकों के विचारों को पढ़कर और सुनकर ऐसी विभिन्नताओं का परिचय प्राप्त होता है जो हमारे समाज में आज व्याप्त हैं । स्त्री व पुरूष का सम्बन्ध हमारे समाज की आधारशिला है और आज यह स्थिति हमें स्पष्टतः देखने को नहीं मिलती है क्योंकि आज जीवन सिमट कर काफी छोटा होता जा रहा है । व्यक्ति एक सीमा रेखा के बीच तक ही अपने को पाता है ।

नारियों के जीवन का चिन्तन, नारियों की दशाओं का चित्रण और उनके विचारों का चिन्तन आज की विशेष विषयवस्तु है । मृदुला जी ने जो भी चिन्तन किया है वह काफी सोच समझकर ही किया है । जीवन दर्शन में सदैव सूक्ष्मता, व्यापकता और गहनता होती है । यदि वह उपस्थित नहीं है तो जीवन का दर्शन सदैव उजला होगा, उसमें गहराई की कमी रहेगी।

जीवन दशाओं का चिंतन :-

नारी का जीवन हमेशा एक पक्षीय रहकर भी समाज में समग्र रूप पद दबाव का रहा है और यह समाज के विभिन्न रूपों में अंगीकार भी है । जीवन केवल जीवित रहकर समाज के कार्य करने का नाम या अर्थ नहीं है । हम जीवन लेकर जीवन का अर्थ ही नहीं समझे तो मानो जीवन व्यर्थ ही है । ''चिंतनशील व्यक्ति सदैव किसी भी रूप में अपने को ढालकर विचार व्यक्त कर सकता है । वह यह साबित कर सकता है कि कौन सा तथ्य सही है और कौन गलत और क्या सही है ? जीवन के इस रथ में संघर्ष प्रमुख पहिये या मशीनरी का कार्य करता है-''नारी का रूप''। यदि हमारी समाज व्यवस्था में नारी का स्थान निरंक है तो वह सामाजिक व्यवस्था तो रह सकती है परन्तु एक विचार व चिंतन का विषय

नहीं हो सकती है क्योंकि सोचने की बात है कि समाज के द्वारा ही तो हम हैं और यदि यह समाज नारी के विविध रूप को नहीं मानेगा तो इसे कैसे हम चिंतन का विषय बना सकते हैं ।''(1)

हमें तो मात्र मृदुला जी के कथा साहित्य पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं करना है, इसे समग्र रूप से भी अध्ययन करना है । हमें सामाजिक चिंतन, सामाजिक बंधनों व जीवन नैतिक मूल्यों की बात के साथ ही नारी चिंतन की भी विषय वस्तु सम्मिलित करना चाहिये । यदि जीवन सार्थक तथ्यों में अग्रेषित करना है तो नारी को विषय-वस्तु बनाना होगा और उसके चिंतन को अपने मस्तिष्क की सोच ।

जीवंत चिंतन ही हमारे पुस्तकों की आत्मा है जिससे हमें वर्तमान और भविष्य के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है । हमें चाहिये कि पहिले इनमें फर्क कर ले और उसी अनुरूप अपना निश्चय कर लें ।

नारी के प्रति चिंतन का विषय काफी व्यापक है, और अधिकतर लेखकों ने इनके कामकाजी और पुरूष-स्त्री सम्बन्धों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया है । इसके अतिरिक्त कई लेखकों ने इनके दर्शन-चिंतन और विचारोक्ति को अपनी लेखनी का विषय बनाया है ।

---

(1) मृदुला गर्ग जी के चिंतन का सन्दर्भ एवं शोधार्थी द्वारा स्वयं के विचार को इंगित किया गया है ।

मृदुला जी का कथा साहित्य नारी चिंतन के मनोवैज्ञानिक पक्ष को मजबूत करता है और कथाओं का अधिकांश सार भी नारी जीवन के वृत्तांत को अग्रसरित करता प्रतीत होता है । मृदुला जी के कथा साहित्य की एक विशेष बात भी यही है कि उन्होंने कभी एक विषय को अपने साहित्य में नहीं रखा इसको विभिन्न आयामों के तहत् मोड़ने की कोशिश उन्होंने लगातार की है और यही कारण है कि इनकी विषयवस्तु भी शोध का विषय बनती जा रही है ।

सम्पूर्ण नारी दशाओं का चित्रण :-

मृदुला जी का कथा साहित्य समग्रता लिये हुये होने के कारण अन्य लेखकों से तुलनात्मक दृष्टि से विविधता पूर्ण है । कामकाजी महिला के साथ में उसके विचारों का चिंतन तो उन्होंने किया है साथ ही वर्तमान कार्यो में उसकी क्या दशा है ? समाज का स्त्री पर क्या प्रभाव है तथा उसके विचार भी किसी समाज के प्रति क्या हैं ? यह जानने का प्रयास मृदुला जी ने किया है ।

ग्रामीण महिला के रूप में कई महिलाओं ने तो एक सशक्त क्रांति का भी उन्होंने आह्वान किया है ताकि समाज की कुरीतियों को दूर किया जा सके । समाज का जो भी सामाजिक या आर्थिक पहलू हो तो वह

सदैव उसकी पृष्ठभूमि पर ही आधारित होता है । नारी का पुरूष पर उसके विचारों का ही प्रभाव पड़ सकता है । वह भी सदैव क्षणिक हो सकता है लेकिन परोक्ष रूप में उसका अमिट प्रभाव समाज पर हमें दिखाई देता है।

मृदुला जी ने अपनी कहानियों में भी सामान्य बातों को लेकर ही विषय को मान्यता दिलाई है । जैसे किसी के परिवार में आपसी कलह अथवा परिवारों में अंदरूनी झगड़ों का बखूबी विवरण प्रस्तुत किया है । उद्भव से लेकर कहानी के परामव तक का सफर मृदुला जी के कथा साहित्य में देखने को मिलता है । कहानी का उद्गम भी मृदुला जी ने नारी की वर्तमान दशा से ही किया है - जिससे समाज को उसकी वास्तविकता का बोध हो सके ।

मृदुला जी का समग्र साहित्य यदि देखा जाये तो उसमें आत्मीयता का बोध तो होता ही है किन्तु कहीं न कहीं नवीन संरचना भी हमें देखने को मिलती हैं । मृदुला जी के साहित्य में विषयों को प्राथमिकता प्रदान की गयी है । विचार शक्ति ही लेखक की लेखनी का मूल तत्व होता है । लेखनी का चलायमान होना विचारों की ज्वाला से ही उद्वेलित होता है । हम यदि किसी भी तथ्य को लें तो हमें उसमें आपसी संलग्नता देखने को मिलती है ।

पुरूष प्रधान समाज में नारी को सदैव ही अपने से निम्न ही माना गया है परन्तु यदि औरत की शक्ति का उदय हो तो वह पुरूष भी उच्च परिधि पर नहीं रहता है । इसी प्रकार की परिभाषा हमें मृदुला जी के कथाओं में देखने को मिलती हैं।

सामाजिक विचारों का चिन्तन :-

नारी हमारे समाज की रूप रेखा है और उसके चारों और की घटनाओं में ही हमारे सामाजिक जीवन की वास्तविकता छुपी रहती है । यदि हम अपने से इसको पृथक करना चाहे भी तो नहीं कर सकते हैं । मृदुला गर्ग के उपन्यासों में मार्मिकता पर विशेष ध्यान देने के साथ-साथ उसकी दशाओं और प्रत्येक स्थिति से निपटने के विचारों पर भी ध्यान दिया गया है।

हमें सदैव ही परिस्थिति मूलक विचारों को ही केन्द्र बिन्दु बनाना चाहिये ताकि हमें वास्तविकता का बोध हो सके एवं समाज की पृष्ठभूमि को विविध पहलूओं से रंग दे सकें, उसे नवीन आयामों तक पहुँचा सकें । यह भले ही सत्य हो कि मृदुला जी का कथा साहित्य बहुतायत में विविधता लिये हुये है परन्तु यह किसी न किसी कोण से आपसी परामर्श पर ही निर्भर करता है । नारी को समाज का यथार्थ दर्पण माना गया है और साथ ही पुरूष की समक्षता उसे प्रदान की गयी है, इसी कारण से हम नारी को जगत जननी भी मानते हैं ।

विविध प्रकार के चिंतनों का इतिहास भले ही कितना पुराना हो परन्तु नारी का चिंतन उनमें से एक है । चाहे वह समाज के साथ में हो या आर्थिक क्षेत्र में हो । स्वयं अकेली या पृथक रहकर भी वह अपने विचारों को समाज को बांटती रहती है, चाहे उन्हें समाज अंगीकार करें या न करें।

''अकेली गान में कब, कहाँ तक तुम्हारी महत्वाकांक्षाओं को ढोती फिलंगी बच्चा ? मुझे खुद को बांटने दो, देने दो । मैं प्यार बांटना चाहती हूँ । सबक बीच, बहुत है मेरे पास ।''(1)

अपने प्यार अथवा स्नेह की बौछार करने की चाह भी स्त्री में रहती है परन्तु किन्ही अपनी अपरिहार्य कारणों से वह उसे नहीं दर्शा पाती है और समाज की नजरों में खुदगर्ज या अकेली रह जाती है ।

''मैंने क्या राजनीति की ? मजदूरों की झुग्गी-झोपड़ियों, बस्तियों में, गली-गली जाकर, नाटक ही तो किया करते थे, हम लोग । इसमें गलत क्या था ? हम तो खुद सीखना चाहते थे, जानना चाहते थे, गहराई से महसूस करना चाहते थे, वह सब जो किताबों में पढ़ा करते थे । शोषण, भ्रष्टाचार, प्रदूषण खोखले शब्द भर न रह जाते, अगर हम उन लोगों के बीच जाकर उन्हें महसूस न करते, जो इनके असली शिकार थे ।''(2)

---

(1) गर्ग मृदुला, 'शहर के नाम' से भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. : 113 वर्ष : 2000

(2) गर्ग मृदुला, 'शहर के नाम' से भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या : 125 वर्ष : 2000

नारी ने अपने को स्वयंसिद्धा बताकर समाज को यह सिद्ध कर दिया है कि उसके बिना कोई स्वरूप ही नहीं हो सकता क्योंकि वह परिवार का प्रमुख अंग है और वही नहीं वक्त पड़ने पर वह समाज के अनेक क्षेत्रों में जाकर अपने विभिन्न रूपों को कार्यान्वित कर सकती है ।

मृदुला जी ने अपनी पुस्तक ''शहर के नाम'' तथा ''उसके हिस्से की धूप'' में नारी के विचारों का मनो वैज्ञानिक विश्लेषण किया है तथा यह दर्शाया है कि जो विचार उसके मस्तिष्क में उतरते है वही समाज के वास्तविक पटल पर भी स्पष्ट झलकते हैं और यही कारण है कि कह उन्हें मूर्त रूप में प्रदर्शित भी कर सकती है । नारी ने समाज में अपना अलग सम्मान भी इसी कारण से बनाया है ।

नारी के विचारों की तुलना पुरातात्विक एवं भूतकाल के गर्त में दबे कई पहलूओं से भी कर सकते हैं । नारी के विचार प्राचीन इतिहासों व संस्कृति के पृष्ठों को भी उलटने की क्षमता रखते हैं ।

''केवल हृदय की गहराइयों से नहीं, दृढ़ संकल्प के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ने के निर्णय से मैं, और मैं भी उसकी बातों में काव्यात्मक रस ले रही थी । उसकी बातों में मुझे रामराज्य की उस निर्दोष परिकल्पना की तरह भाव लग रहा था, जिसमें समने धोबी के आरोप कर सीता को

देश-निकाला नहीं दिया था, उसकी अग्नि परीक्षा भी नहीं ली थी और यह कुछ गलत नहीं हुआ था और हो सकता था ।''(1)

इस प्रकार से नारी के विचारों को सिमटने के विचार से भी कुछ प्रयत्न करें तो वह हमें स्पष्ट भूमिका के रूप में नहीं प्राप्त हो सकते । नारी का रूप हम सीता, अहिल्या और वर्तमान की नारियों में भी देख चुके हैं । विचार कुछ उथले भी हो सकते हैं कुछ गहराई लिये हुये भी हो सकते हैं । ''मानवीयता के साथ-साथ मनौवैज्ञानिक धरातल पर मनुष्य के विचार और विशेषकर नारियों के विषय किंकर्त्तव्य की सतह पर ही विशेषत: दिखाई देते हैं । हम यहां यह कहना नहीं चाहते हैं कि इसमें यथार्थता नहीं है । देता भी नहीं है, यह सोच काफी गहराई ली हुयी होती है और यही कारण है नारियों के चिंतन के इतिहास में उसके विचारों की शक्ति में, उसके अपनेपन में ।''(2)

मृदुलाजी का कथा साहित्य नारी प्रधान तो है परंतु उसके एकवेदना और संघर्ष की गंध भी आती है । उन्होंने अपने साहित्य को नारी की महत्ता की कसौटी पर खरा उतारा है । नारी के चित्रण में ही उनकी पहिचान है । परिवार में रहते हुये भी नारी स्वतंत्र न होकर उससे

(1) गर्ग मृदुला 'शहर के नाम', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष : 2000 पृ. सं. 111
(2) डॉ. गुप्ता, रामकृष्ण, " नारी दशा का सामाजिक चिंतन", शोध आलेख वर्ष : 2001

बंधी रहती है । वह परिवार के लिये सदैव संघर्षरत् रहती है । नारी का रहन-सहन उसके परिवार के स्थिति को दर्शाता है, कि वह कैसी रहती है, उसके परिवार का समाज में कैसा स्थान है, बगैरे-बगैरे ।

नारी को कभी-कभी माननीय संवेदना भी झेलनी होती है । चाहे वह परिवार से हो अथवा अपने पति से । परिवार के प्रति वह जितनी जिज्ञासु रहती है, उतनी ही वह उस जिज्ञासा को शांत करने के लिये प्रयत्नशील रहती है ।

"बस, जब तक मेरी कहानी खत्म न हो जाये, मेरे साथ चलते रहना । सफर खत्म होने से पहले कहानी खत्म करने की कोशिश करूंगी । तुम्हारे सफर की बात कह रही हूँ ।"[1]

कथा साहित्य में नारी की पहिचान :-

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी को हमने विघ्नहर्ता के रूप में भी देखा है । संयम के साथ-साथ वह समाज में आने वाली प्रत्येक कठिनाई को दूर करने की कोशिश भी करती हैं । चाहे वह स्वयं के परिवार की ही कठिनाई ही क्यों न हो, अथवा अन्य कोई सामाजिक, नारी की पहिचान

---

(1) गर्ग मृदुला 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 12 वर्ष : 1998

उसके आचरण, व्यवहार, चरित्र तथा स्वयं सिद्धता से ही बनती है । समाज उसे एक बार जिस रूप में देख ले उसके दृष्टिपटल पर वही चित्र अंकित हो जाता है और सामाजिक रूप से वह उसके जीवन का सत्य है।

मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में मार्मिकता के साथ नारियों का चित्रण किया है । उनकी एक नयी पहचान की है । नारी स्वयं भी अपनी पहिचान बनाने के काबिल है लेकिन कभी-कभी समाज का भी हाथ इसमें रहता है ।

कठिनाई के इस दौर में स्वयं को साबित करना एक विशेष परिस्थिति वाली वस्तु है । यदि कोई व्यक्ति कभी समाज की नजरों में गिर गया तो उसे अपनी खोयी हुई स्थिति लाने में काफी कठिनाई होती है । मृदुला जी ने अपने पात्रों को अपने विचारों को इस तरह से ढाला है कि वह जीवंत और शाश्वत प्रतीत होते हैं ।

कथा साहित्य में नारी की वेदना स्वाभाविक है, लेकिन मार्मिकता और मनौवैज्ञानिक पहलूओं को संवारना तथा उपन्यासों में उन्हें उतारना एक विशेष लक्ष्य है । कथाओं में मृदुला जी ने स्त्री को समाज व परिवार का एक साथी तो माना है परंतु कहीं-कहीं पृथकता का बोध भी कराया है जिसमें स्त्री के पति को अथवा परिवार के अन्य सदस्यों को इसकी जानकारी हो सकें ।

"मेरा सफर तो कहानी के साथ है । जब कहानी खत्म होगी, सफर भी खत्म हो जायेगा। पर मैं कुछ वक्त बचा कर रखूंगी । कहानी खत्म करके तुमसे अलग हो सड़क के दूसरे छोर पर चली जाऊंगी । तुम्हारे सफर को नजर नहीं लगेगी । मैं कुछ दूर चलकर तुम्हारी आँखों से ओझल हो जाऊंगी ।"[1]

मृदुला जी ने स्त्री की वास्तविक दशा को अपने साहित्य में उतारा है, समाज को एक नया नजरिया दिया है । दार्शनिकता का प्रभाव हमें उनके साहित्य में देखने को मिलता है । कहानी में मृदुला जी ने नारी की स्थिति में रहकर बताया है कि पति के सफर के साथ मेरा भी सफर रहेगा परंतु मैं कुछ दूरी बनाये रखकर तुम्हारे साथ रहूंगी जिससे तुम्हारे कार्य को कोई बुरी नजर न लगे ।

उपरोक्त कथन से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि समाज में नारी को अभी भी कई साधनों से वंचित रखा जाता है । पति से दूर रहकर कार्य करना या उसके कदम से कदम मिलाकर चलने की अपेक्षा कुछ दूरी बनाकर ओझल हो जाना, यही वास्तविकता भी है । क्योंकि मनुष्य नहीं चाहता कि किसी स्त्री की दृष्टि उस पर अथवा उसके सधे हुये कार्यो पर पड़े ।

---

(1) गर्ग मृदुला, 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 15 वर्ष : 1998

"आजकल, मगर एक दूसरा ही डर सताने लगा है । मंच से अलग होकर अभिनय कर ही नहीं पाती । पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ । अब तो बात मुंह से यूँ निकल जाती है जैसे दिमाग में कभी आयी ही न हो ।"(1)

इस वाक्य से ऐसा प्रतीत होता है कि कहानी का पात्र तो मंच पर है परंतु उसका लेखक या निदेशक पर उस पात्र का इतना गहरा प्रभाव है कि वह जाने अनजाने में कुछ न कुछ बोलने लगता ही है मानों वही सब घटनायें इसके साथ ही घटी हैं ।

मृदुला जी का कथा साहित्य विविधता से भरा हुआ है । स्वयं को मृदुला जी ने ऐसा वर्णित किया है मानो पात्र बिना संवाद के ही बोलते प्रतीत होते हैं । कथा साहित्य की जरिये मृदुला जी की यात्रा अनन्त काल की यात्रा है और सबसे पृथक है।

"उसने उत्तर की अपेक्षा किये बगैर कहा और..................जिस व्यस्तता से सुबह वह ईर्ष्या कर रही थी, उसी पर अब उसे दया हो आयी । आखिर क्यों इस तरह लगा, जितने ? जीवन उपहार स्वरूप मिले,

---

(1) गर्ग मृदुला, 'चित्तकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 38 वर्ष : 1998

समय के हर क्षण का जैसे पसीने की बूंद से अधिक महत्व न हो । इतना सब करके क्या पाता है वह ? शान्ति ? सुख? प्यार? साहचर्य ? हंसी? इनका क्या कोई महत्व नहीं है ।''(1)

मृदुला जी ने जीवन के सफर में उसे प्राप्त होने वाले उपहारों को बड़ी खूबी से इंगित किया है । मृदुला जी का कथन जीवन पर असर डालने वाला है कि जीवन को जीवन्तता के साथ जिया जाये और उसके हर पहलू का आनन्द महसूस किया जाये । जीवन के हर क्षण का महत्व इतना अधिक है कि वह एक पसीने की बूंद से न तौला जा सके ।

जीवन में मेहनत करके मनुष्य क्या पाता है - जीवन का प्रमेय रस, शान्ति, सुख, आपसी प्रेमभाव, आपसी भाईचारा आदि इसी से ही तो जीवन का अर्थ है और यह अर्थ ही जीवन को प्यार से जीने का मूल मंच भी है । अपने भूत के आधार पर वह वर्तमान को सींचता है और भविष्य की आस पर जीता है । नारी में सहनशीलता मनुष्य से भी अधिक होती है और यही कारण है कि वह अपने साथ-साथ अपने परिवार के लिये भी कार्य करती है और उनके भले-बुरे के बारे में सोचती है । नारी जीवन

---

(1) गर्ग मृदुला, 'उसके हिस्से की धूप', राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 70 वर्ष : 1996

संगिनी भी है । मृदुला जी ने अपने उपन्यासों में नारी को ग्रामीण व शहरी जीवन में जीवन यापन करने वाली महिला के रूप में भी प्रदर्शित किया है। नारी का स्वयं और दूसरे नारी से भी एक गहरा रिश्ता रहता है । सदैव से ही नारी-नारी की ही दुश्मन बनी रहती है ।

"तुमने यह कैसा रास्ता चुन लिया, संगीता कि मेरे तमाम रास्ते बंद हो गये । तुम्हारा अभिशप्त भविष्य आत्मग्लानि के घूंट को किस कदर जहरीला बना रहा है, जानती हो ? मेरा गला सूख रहा है......"(1)

विचारों में चिंतन की भूमिका :-

सदैव नवीन विचार ही और नये विचारों के जन्मदाता होते हैं । नित् नवीन विचारों से ही हमारी पृष्ठभूमि मजबूत होती है । चिंतन की यदि आधारशिला मिल जाये तो विचार सहमत हो जाते हैं । आज के समाज में नारी के चिंतन को प्राथमिकता के साथ ही प्रस्तुत किया जा रहा है । चिंतन जितना गहरा और सटिक होगा उतनी ही विचार में विविधता हो सकेगीं ।

---

(1) गर्ग मृदुला, 'अनित्य', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 162 वर्ष : 1998

ज्ञान ही विचारों का ज्योतिपुंज है :-

आज हम नारी के जीवन के सम्बन्ध में जो भी विचार रखते है वह बिना ज्ञान के नहीं उत्पन्न हो सकते हैं । मनुष्य स्वयं मजबूत धरातल पर ही जीता है लेकिन वह विचारों एवं ख्यालो की ज्योति को जलाता रहता है।

नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण करने और उसे समझने के लिये हमें बौद्धिक ज्ञान की आवश्यकता होती है । बिना ज्ञान के आप कोई विचार व्यक्त नहीं कर सकते हैं ।

अभिव्यक्ति का संसाधन :-

नारी के रूपों को अभिव्यक्त करने का कार्य हम साधनविहिनता से नहीं कर सकते । यदि हम विचारों को अभिव्यक्त करना चाहते हैं तो हमें अपने विचारो की संकीर्णता को समाप्त करना होगा । मनुष्य जीवन की ऊहंफिह में, स्वयं अपने कर्तव्यों को भी भूल जाता है । ''कभी-कभी तो वह नारी के लिए भी अपने कर्त्तव्य भूल जाता है । यही कारण है कि आज नारी की उपेक्षा भी इन्हीं आधारों पर हो जाती है ।''[1]

---

(1) डॉ. गुप्ता, रामकृष्ण : ''सामाजिक नारी चिंतन'', शोध आलेख, वर्ष : 1999

मनुष्य स्वार्थी भी है । वह अपने समक्ष किसे को भी नहीं मानता। नारी स्वयंसिद्धा होने के बावजूद भी उसके समीप ही बनी रहती है और उसका कहना मानती है । समाज में नारी की स्थिति चिन्तनशील है । उसे उठाने के लिए वह स्वयं ही संघर्षरत् है और शायद वह प्रत्येक जीवन के पड़ाव को विजित भी है ।

----::+::----

अध्याय सप्तम्

मृदुला गर्ग के साहित्य की उपादेयता

अध्याय सप्तम्

मृदुला गर्ग के साहित्य की उपादेयता :-

वर्तमान सन्दर्भो में यदि देखा जाये तो हमारा भूत ही हमारे आज के चरण का प्रारंभ होता है जो गलती हम भूतकाल में करते हैं वह हमें आज के रूप में स्वीकार करनी पड़ती हैं और उसका सामना भी हम करते हैं । मृदुला जी ने जितना भी साहित्य लिखा है वह सामाजिक जीवन व मानवीय जीवन की आधारशिला है जो आज हमारे लिये नीव का पत्थर होती है । वेदना होने के बावजूद भी स्त्री अपने परिवार से बंधी रहती है और उसके दु:ख में सहभागी होती है । परिवार के किसी भी सदस्य पर आपत्ति आने पर अथवा कठिन वक्त आने पर उसके लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर भी कर सकती है ।

मृदुला जी ने नारी को कहीं संघर्षशील बताते हुये भी अनुशासन में रहने वाली नारी भी निरूपित किया है । वह स्वयं भी जानती है कि नारी परिवार से पृथक रहकर समाज का एक अंग नहीं रह सकती है । इसीलिये परिवार का हिस्सा बनकर समाज का हिस्सा बनना वह पसंद करती है । समाज या संघ हमारा एक सबल तो है परंतु वह उसके बनाये नियमों या कानूनों के परे जाने की इज़ाजत नहीं देता, किन्हीं भी परिस्थितियों में नारी

को इसे मानना ही पड़ता है । जो कुछ भी हम सीखते हैं वह समाज में रहकर ही सीखते हैं और उसके बताये अनुसार ही कार्य करते हैं । लेकिन कभी-कभी सामयिक दृष्टिकोणों के चलते अनजाने में नियमों को तोड़ना भी पड़ता है परंतु यह समाज लकीर का फकीर होकर हमारे निर्णयों को मानने पर पाबंदी लगा देता है ।

मृदुला जी के कथा-साहित्य से हमें समस्याओं से लड़ने की प्रेरणा भी मिलती है और नयी भावनाओं और जिम्मेदारियों को बखूबी निभाने का संबल भी प्राप्त होता है । उनका कथा साहित्य आज की नारी का प्रेरणास्त्रोत भी है और वर्तमान संदर्भों में समाज का जीवन दर्शन भी है ।

नारी चिन्तन विषय को यदि हम निर्णायात्मक रूप से देखें तो हम पाते हैं कि ऐसा चिन्तन शायद ही परिपूर्णता से ओतप्रोत हो क्योंकि हमें ऐसा कोई भी कोण नहीं दिखलाई देता जो संसार या जीवन की अन्तरंग भावनाओं से जुड़ा न हो । समस्त कोणों और जीवन की भावनाओं को स्वीकार करते हुये हम इसके चिंतन को भावनात्मक ढंग से भी लेते हैं ।

मृदुला जी ने अपने विषय से संबंधित पहलुओं को बड़े विस्तार से उद्धृत किया है । उन्होंने अपने कथा साहित्य को समस्त पहलुओं से संपादित किया है । यदि वह नारी के आत्मसम्मान की बात हो, नारी के

जीवनयापन की अथवा उसके पारिवारिक त्रासदी या वेदना की, बड़े सहजता से उन्होंने उसका चिन्तन किया है और अपनी लेखनी के जरिये हमें प्रस्तावित किया है । मृदुला जी का कथा साहित्य इस कारण से भी विस्तृत है कि उन्होंने आत्मीयता के माध्यम से हमारे जीवन के अनछूएं पहलूओं को भी उकेरा है जिससे हमें समस्त जीवन की पहेली का ज्ञान हो जाता है । हमारे जीवन में कई ऐसे ज्ञात-अज्ञात वस्तुयें और विचार आते हैं जो हमसे सम्बन्धित तो रहते हैं परन्तु हमारे पारिवारिक जीवन पर भी वह उतना ही प्रभाव डालते हैं जितना की प्रत्यक्ष विचार।

हम चाहकर भी उन्हें रोक नहीं पाते क्योंकि वह हमारे सार्वभौमिक सिद्धान्तों की मूलभूत जड़ होते हैं । यह समाज का अहम विभाग होते हैं और सामाजिक सिद्धान्तों की आधारशिला है, इसी कारण से हम इससे अभिप्रेरित होते हुए भी कभी-कभी इसे नजर-अंदाज भी करते जाते हैं लेकिन इसमें घातक परिणाम भी हमें भुगतनें होते हैं ।

मृदुला जी का कथा साहित्य में मुख्य स्थान है, मन्नू भंडारां, मालती गोशी, डॉ. अग्निहोत्री, उषा प्रियंवदा आदि कथा-लेखिकाओं के शीर्षस्थ को पाकर उनका साहित्य और उत्प्रेरक प्रसंगों के समान उच्च से उच्चतम् सोपानों को अर्जित करता जा रहा है । उन्होंने अपने साहित्य में

सामयिक परिवर्तनों को अधिक सजगता से उजागर किया है । सामयिक दृष्टि से उनका साहित्य काफी सृजनशील है और नवीन परिवर्तनों को अंगीकार करते हुये पारंपरिक प्रसंसाधनों को भी स्वीकृति प्रदान करता है।

आधुनिकता के दौर में भारतीय समाज इसके पक्ष में है लेकिन बहुधा वह अपने स्तरहीन घिसे पिटे विचारों के माध्यम से नारी जाति पर अपने विचारों और सिद्धांतों को थोपने पर हावी रहता है । वह स्त्री-पुरूष संबंधों के आधारों को तलाशता हुआ हमारे व्यवहारिकता पर भी चोट करने की कोशिश करता है । नारी जाति इस घातक प्रयासों के चलते परेशानी का सामना करती है ।

तत्वबोध को आधार मानकर भी हमें अपने जीवन को संयत बनाये रखना होता है । तत्वबोध का आशय मात्र तत्व ज्ञान से नहीं है बल्कि उस ज्ञान से है जो मौलिकता के साथ में हमारे बीच उपस्थित रहता है। मृदुला जी के उपन्यासों में हम पाते हैं कि नारी मौलिकता के साथ अपनी बात बेबाक तरीके से पुष्टित करती है । वह अपनी बात को बड़े ही सामाजिक तरीके से हमारे सम्मुख रखती है । यह आपसी परामर्श के द्वारा भी सहायक होता है क्योंकि आपसी परामर्श आज काफी आवश्यक भी है। इसी आधार को मानकर भी हम प्रेरित रहते हैं ।

तात्विक शब्द का प्रयोग मृदुला जी ने गहनता के रूप में किया है और यदि श्रेष्ठता के अनुसार हम अपनी आपस की बात उद्धृत कर दें तो हम पाते हैं कि बोध के अनुसार हमारा आपसी विचार विमर्श ही तात्विक है और उसे समस्त जगत में फैलाने को हम सशर्त भी मान सकते हैं ।

''इन पंद्रह वर्षों के मारीमन के चार उपन्यास छप चुके हैं और वह औसत अंदाज में मशहूर हो चली थी यानि, हाशिये से इतनी ऊपर उठ चुकी थी कि वह आलोचकों को बेबाक और चिंतनशील शैली की झलक नजर आने लगी थी ।''[1]

आलोचनाओं और प्रत्याशाओं के बीच छुपी हुई संवेदनशील परिस्थितियों के जरिये हम अपनी विचारधाराओं को गतिशीलता प्रदान कर सकते हैं । परन्तु कभी-कभी आकांक्षाओं के अनुरूप परिणाम आ भी सकते हैं और नहीं भी । यही कारण है कि मारियान का मानना था कि समय जरूर आयेगा । उम्मीद पर तो आप .... दुनिया कायम है, फिर हाशिये से जरा ऊपर उठी लेखिका की क्या बिसात्?[2]

हम चाहकर भी उस श्रेणी की संज्ञा को अंगीकार नहीं कर सकते जिसे हम जो हमारे सामने उपस्थित रहती है फिर भी यह प्रयास स्त्रियों का

---

(1) गर्ग, मृदुला, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. : 111
(2) गर्ग, मृदुला, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. : 112

रहता ही है कि उसे सामंजस्य तरीके से ईधर-उधर हटा दें और मौका पाते ही गायब करने की कोशिश करें । मृदुला जी का कथा साहित्य रहस्यवाद और मानवतावाद की आकांक्षा को लिये हुये है इसीलिए उनके उपन्यासों में हमें कभी-कभी चमक-दमक के साथ-साथ रहस्यवाद की भी झलक मिलती है ।

मृदुला जी के उपन्यासों में हमें बचपन के उन दिनों की छाप देखने को मिलती है जो कि उनकी माताजी द्वारा उन्हें सीख के रूप में विरासत में दी थी । माताजी के अस्वस्थ्य रहने के बावजूद वह अधिक सजग थी कि इस दुनिया में जिस-जिस तरीके के व्यक्ति मिले वैसी ही सीख (विविधानुसार) उन्होंने अपनी बेटियों को भी दी ।

''अच्छा, तुम तो धनी पढ़ी-लिखी हो, एक बात बताओ, अगर कोई आदमी, खाट से उठके बाहर जाना चाहे, लाठी के सहारे, लडखड़ करता सही, अपना काम, धाम देखना चाहे और उसे हरदम कहा जाये, ना-ना तुम घर बैठो, तुम्हारे बस का ना है । तो उसका हौसला टूट ना जावेगा, किसकी बात सत्य है ।''[1]

---

(1) गर्ग, मृदुला, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. : 118

किसी को हतोत्साहित करने या उसे नीचा दिखाने की मंशा हमारी पूर्ण होना, हमारी सफलता नहीं है बल्कि यह हमारी दुर्बलताओं का परिचय है क्योंकि हम इसे दूसरों के सहारे पूरा तो करते हैं परन्तु मानवीयता को नहीं बदलते यही कारण है कि हमारी छोटी-छोटी गलतियां बड़ी गलतीयों के रूप में हमारे सामने आ जाती हैं और वे जीवनभर हमारे पीछे-पीछे चलती रहती है । "हम नर्मदा को सब कुछ घर पर सिखला सकते हैं, हाथ में हुनर होगा तो यह कमायी कर सकेगी और भाई की देखभाल करने लायक भी हो जायेगी ।"[1] दूसरों की देखभाल या भलाई का काम करने में कोई कमी नहीं हो जाती है बल्कि हम सहज रूप से उसे अपनी तरफ कर लेते हैं । यही कारण है कि मृदुला जी के साहित्य में पक्षों को मजबूती के साथ बांधने की प्रवृत्ति दिखलाई देती है । उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में समझौतावादी नीति को भी स्वीकार किया है ।

इसके माध्यम से हम बड़े से बड़े कार्य आसानी से कर सकते हैं और उन्हें भी इस प्रकार से कर सकते हैं मानो यह एक छोटा और कम मूल्यांकन वाला ही कार्य है । मृदुला जी का व्यक्तित्व बहुमुखी और विविधाओं से भरा हुआ होने के कारण उनकी झलक स्पष्ट रूप से हमें साहित्य में दिखलाई देती है ।

---

(1) गर्ग, मृदुला, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. : 134

"पर हमने कोई फिल्मी किस्म का अभाव नहीं झेला । न मॉ ने हमें ताजी, खुद बासी खा कर पाला, न हमें सूखे में सुलाकर खुद गीले में सोई और न बड़ी होने पर मुझे किसी साहूकार-लेनदार की बुरी नजर का शिकार होना पड़ा । अब किस्मत भी क्या करे जिद्दी लोगों के सामने कभी-कभी भगवान की भी नहीं चलती ।"[1] मृदुला जी ने अपनी माँ की सीख को कुछ परोक्ष रूप में उपन्यास 'कठगुलाब' से प्रदर्शित किया है । वह यह चाहती है कि हम आपस के प्रेमभाव में रहें और खुद कष्ट सहन करते हुये अपनी संतानों को और परिवार के अपने सदस्यों को असहनीय पीड़ा न उठाने दे । यह उनकी मीमांसा शायद बौद्ध धर्म के प्रचारक के रूप में हमारे सामने आती है । माँ दो टूक कहती है, मैं अपनी सीमा नहीं लाघूंगी, न घर को बाजार बनाउंगी, न बाजार को ख्वाबगाह ।"[2]

आकांक्षाओं के अनुरूप ही हमारी सोच भी बदलनी चाहिये अन्यथा कष्टदायी यह साबित हो सकती है ।

"दया, माया, ममता लो आज,
मधुरिमा लो, अगाध विश्वास,
हमारा हृदय रत्न विधि स्वच्छ,
तुम्हारे लिए खुला है पास ।"

-कामायनी की उदात्त संवेदनशील वृत्तियाँ

---

(1) गर्ग, मृदुला, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. : 157
(2) गर्ग, मृदुला, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. : 156

नारी की कोई ऐसी स्थिति नहीं है जो हमारे सम्मुख स्पष्ट नहीं है वह दया, माया ममता लिए होकर भी अगाध विश्वास को लिए हुये होती है । वे अपने में कई दुनिया के आश्चर्यो और रत्नविधि को लिए हुये होती है । ऐसी विविधा को हम पूजनीय मान सकते हैं ।

मृदुला जी के कथा साहित्य में नारी की पहिचान एक सम्मानीय और गृहिणी नारी के रूप में हुयी है और वह उसे समृद्धशाली देखना चाहती है । नारी स्वरूपा होने के साथ-साथ आत्मीय जिन्दगी से भी प्रेरणास्त्रोत रहती है । वह सदैव विभिन्न आयामों पर चलकर आगे ही आगे बढ़ती जाती है ।

नारी को हम एक सुख-दुख का साथी मानते हैं । यह जीवन के आंख-मिचौली जैसे ही है । टूटे हुये हृदय और बहते हुए आंसुओं के प्रति साहित्यकार का विशेष आकर्षण रहता है और वह इस हेतु अपने जीवन की शाश्वत एवं सम्पूर्ण रागिनीयों को भी इसमें उतार देता है ।

''अपने मूल रूप में सुख और दुख की अनुभूतियां कुछ सीमित शारीरिक क्रियाओं को प्रेरणा देने में प्रवृत्त होती हैं । वाणी के निस्सीम साम्राज्य में .... की व्यंजना की कोई सीमा नहीं है । प्रेम हो या भक्ति, ईर्ष्या हो या घृणा, उत्साह हो या नुगुप्सा., साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति क्या सीमाबद्ध की जा सकती है ।''(1)

---

(1) डॉ. यादव उषा, ''हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना'', राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999, पृ. सं. : 172

अनुभूतियों और संवेदनाओं के बीच पारस्परिक सम्बन्ध होता है और वह या सम्बन्ध ही हमारे जीवन में कहीं न कहीं अवश्य उपस्थित रहता है । उपन्यासकार यथार्थ बोध की अनुभूति के प्रति आग्रहशील रहता है और उसे उपन्यास के वर्णन और पात्रों के विचारों के लिए अवश्य स्पष्ट करता जाता है ।

सामाजिक बोध के ज्ञाता के रूप में हम अपने विचारों को अवश्य बताते हैं लेकिन उसे नियमित करने या कहीं स्पष्ट करने की प्रयोगशीलता सफल नहीं हो पाती जिससे रूष्ट होकर भी हम समाज के लोगों को भला-बुरा कह सकते हैं । इस प्रकार के भाव की अभिव्यक्ति के न जाने कितने कौशल उपन्यासकार अपनी साधना के दौरान करता है, ऐसा कुछ मृदुला जी के उपन्यासों और कहानियों में दिखाई देता है । बुद्धिवादिता के सपनों और भावनाओं पर समाज अधिक समय तक जीवित नहीं रहता है लेकिन उसे जीवनपरक दृष्टि मिलते ही पुर्नजीवित हो उठता है । इस सम्बन्ध में यह ज्ञात होना चाहिये कि सपने और भावनायें जीवन नहीं बन सकते हैं ।[1]

---

(1) डॉ. धर्मवीर भारती, : ''मानवीय जीवन मूल्य और संवेदना'', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001, पृ. सं. : 160

है । समग्र साहित्य में अर्जित नारी चिन्तन को शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत उद्धरण इस प्रकार से है -

(अ) नारी का महत्व समाज की दृष्टि से :-

नारी समाज का अभिन्न अंग है और वह किसी न किसी रूप में हमारे कार्य में सहयोगी रहती है । वह समाज के वही कार्य नहीं करती जो मनुष्य करते हैं बल्कि असंभव कार्यो को भी वह बड़ी ही सरलता के साथ कर जाती है । आज के समय में नारी कार्यालयों में कार्य करने वाली होकर गृहिणी के रूप में भी सफल है । वह परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभा रही है । वह एक माता, बहिन, पत्नी और प्रेमिका के रूप में भी अपनी जिम्मेदारी को वहन कर रही है ।

(ब) नारी परिवार की दृष्टि से :-

नारी परिवार का भी अटूट हिस्सा है । उसका पक्ष सबसे महत्वपूर्ण पत्नी के रूप में रहता है । वह अपने पति और बच्चों की अपार स्नेही रहती है । नारी का रूप संघर्ष में और समस्त परिस्थितियों में भी भिन्न-भिन्न होता है । वह यदि ससुराल के लोगों के प्रति अपना व्यवहार जानती है तो वह अपने सगे-

संबंधियों से भी उतनी ही समानता के साथ व्यवहार दर्शाती है । पत्नी और पति की मित्र के समान वह व्यवहार करना जानती है।

नारी यदि रूष्ट हो जाती है तो वह सदैव दोषी नहीं रहती वह दूसरों की गलती के प्रति सज़ग रहती है । और उसे सजा भी दे सकती है । उसके लिए वह मद्दगार भी रहती है जो उसका मित्र रहता है चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरूष हो । बच्चों की अपार स्नेही भी है, वह समाज से उसके विचारों के अनुरूप कार्य न कर वह उनकी विरोध का कोपभाजन नहीं बनना चाहती । वह उसके स्वरों का विरोध करती है ।

(स) <u>नारी एक जीवन कविता है :-</u>

नारी को जीवन की कविता के रूप में भी देरवा जाता है। नारी जीवन विभिन्न अनुभवों को ग्रहण करके अपने परिवार के प्रति सजग रहती है और वह अपने अनुभवों को बांटने का प्रयास करती है । यह अनुभव कड़वे और मीठे दोनों ही प्रकार के हो सकते हैं । औरत को एक महज उपयोग की वस्तु न समझ कर परामर्श की प्रतिमूर्ति समझना चाहिये और आपसी समझबूझ कर ही पारिवारिक समझौते करना चाहिये । मनुष्य अपने स्वभाव के

अनुसार नारी को द्वितीयक समझ कर उसको कोई महत्व नहीं देता है, वह अपनी स्वार्थपरकता के अनुसार ही उसके साथ व्यवहार करता है ।

हमारे धर्मशास्त्रों में भी औरत को देवी-स्वरूपा माना गया है और इसी रूप में हम उसको दर्शन की मूर्ति मानते हैं लेकिन परिस्थितियों वश वह जीवन की डोर में व्यवधान उत्पन्न करने से अस्मित हो जाती है । जीवन की कविता की आधार स्तम्भ नारी अपनी अस्तित्व धारिता को खोती जाती है यदि यह अनुभवों को उजागर नहीं करें और उसे किसी व्यक्तित्व के प्रति स्थापित न करें तो उसे काफी संघर्ष के बाद ही सफलता प्राप्त हो जाती है।

जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों को ही कविता का प्रारूप माना गया है । कविता का प्रवाह अनुभवों का आधार है और उसके अलंकार विरोध की शब्द रचना है ।

(द) नारी समाज का दर्पण है :-

औरत के व्यवहार से हमें समाज के व्यवहार का पता चलता है । व्यवहार सभी प्रकार के होते हैं और उसी भांति हमें

सभी के साथ व्यवहार करना चाहिये । समाज के प्रत्येक पहलू का हिसाब-किताब हमें नारी के आचार-विचार से ज्ञात हो जाता है ।

(इ) नारी शीलता की परिचायक है :-

समाज के कई सवालों के जबाव देते हुये भी नारी शीलता का परिचय देती है, वह संघर्षरत् रहने के बावजूद भी अपना वर्चस्व बनाये रखती है और परिवार के साथ-साथ रहती है । शीलता से तात्पर्य अपने कार्य के प्रति सजग रहते हुये और स्पष्ट रूप से वार्ता करना होता है साथ ही अपनी मर्यादा का भी ध्यान रखना ही शीलता है परंतु समाज के मानव स्त्री को शील भंग करने को प्रेरित करते हैं और अपने मनमाने तरीके से उसे कार्य करने को कहते हैं ऐसा नहीं करने पर वह विरोध का भंजक बन सकती है ।

नारी शीलता का दर्पण होती है और वह अपने बच्चों का लालन-पालन करते हुये समाज के सामने भी अपने को प्रस्तुत करती है अर्थात् वह समाज के समक्ष अपना पक्ष रखती है । समाज एक आधार स्तंभ रहने के बाद भी अपनी उपस्थिति का अहसास हर दिशा में करता है । चाहे वह कोई भी क्षेत्र क्यों न हो?

नारी का प्रत्येक पहलू समाज के सामने हमें दिखायी देता है और वह किसी न किसी रूप में हमारे समक्ष उपस्थित रहती है चाहे विचारों की श्रेणी के रूप में अथवा स्पष्ट 'श्रंखला' के रूप में।

(फ) <u>नारी दुखहर्ता के रूप में :-</u>

समाज में नारी का स्थान आज भी उस शून्य रूप में करते हैं जो कि जननी होती है । नारी हमारे परिवार के दुखहर्ता के रूप में हमारे सामने आती है क्योंकि परिवार में या रिश्ते सम्बन्धियों के यहां यदि कोई पीड़ित होता है तो वह बिना किसी झिझक अथवा संकोच के उनकी सहायता करने को तत्पर रहती है ।

नारी हमारे परिवार की आधारशिला होती है । परिवार के विकास और सहयोग की वह धूरी है । नारी की पीड़ा और वेदना हमारे सामने दर्शित नहीं होती है क्योंकि वह हमारे सम्मुख यह प्रदर्शित ही नहीं होने देती । हम उसे सहज और सुखी देखकर प्रसन्न रहते हैं परंतु ऐसा नहीं होता वह अपने अंतर में पीड़ा को संजोये रखकर हमारे दुःखों को स्वयं हर लेती है । अतः वह दुःखहर्ता के रूप में हमारे सामने रहती है इसी कारण से वह पूजनीय मानी जाती है ।

कभी-कभी तो नारी की स्थिति जन्म से ही भयावह हो उठती है, क्योंकि जन्म लेते ही माँ का देहान्त हो जाता है अथवा बाप का पता नहीं होता, फिर समाज के बढ़ते थपेड़े उसे संभलने का मौका ही नहीं देते । उठने की दर-बदर ठोकर खाकर वह जरा संभलती भी है तो पैर काम नहीं करते वह संघर्ष करते-करते इतनी थक चुकी होती है कि कहीं शरण ढूंढकर वह विश्रांति का भरोसा ढूंढती है, जो उसे कदापि नहीं मिलने वाला होता है । समाज किसी भी नारी को सहायता पहुंचाने की बजाय उसका मजाक उड़ाकर उसे ठोकरे खाने को मजबूर कर देता है ।

मृदुला जी ने तो समाज के विविध लोगों का बड़ी सजगता से चित्रण किया है । लोगों की चाह और नाराजगी को उजागर किया है । भारत में यही स्थिति इसीलिये है क्योंकि हम रूढ़िवादी विचारों को त्यागना नहीं चाहते और त्यागने की कोशिश भी नहीं करते हैं तो परिवार या समाज के अधिकतर लोग यह कहते रहते हैं कि वह औरत का गुलाम और अधीनस्थ होकर रह गया है । भले ही उसके पीछे इसका कोई दूसरा ही उद्देश्य रहा हो । पति या किसी भी सहायक व्यक्ति की शिल्पज्ञता स्त्री को उच्चतम मार्गो पर बढ़ने को प्रेरित कर सकती है इससे यह अपने नवीन सोपान पार कर सकती है लेकिन समाज के टूटे रास्तो से उसे गुजरना ही होता है ।

"डार से बिछुड़ी" का सहज सीधा-सादा पाठ बिना किसी शिल्प के सहारे स्वयं ही अपने समाज के सूत्र गूंथता गया और मेरे बाहर के काव्य को कहानी की आन्तरिकता की ओर मोड़ ले गया । मुझे इस दबाव का अहसास तक न हुआ इतना ही लगा कि मैं मात्र इसे प्रस्तुत करने के निमित्र हूँ"[1] कृष्णा जी ने अध्याय के प्रारंभ में ही बहुत सटीक बात कही है -

"नानी ठीक ही कहती थी ....

संभलकर री

एक बार का थिरका पाँव

जिन्दगानी

धूल में मिला देगा ....।

नानी जी का यह कहना अधिक सहज तो लगता है लेकिन गहराइयों से जीवन के आंचल को छूता है ।

मृदुला जी की कहानियों में भी हमें नारी का चित्रण कहीं-कहीं डॉ. कृष्णा सोबती जैसा ही मिलता है । उन्होंने भी ग्रामीण अंचल की नारियों की स्थिति और उनके रहन-सहन पर चर्चा की है । वहां के सहज भाव और भोला-भालापन हमें अपनी ओर बरबस ही खींच लेता है और उपन्यासों को पड़ने को मजबूर करता है ।

"इस मुंह उसका नाम न लूँ बिटिया, उसी की करनी तुझे भरनी थी । तेरे दोनों मामू उसे कितना मानते थे, यह लोक-जहान जानता है पर वह नामहोनी तो घर भर का मुंह काला कर गई ।"[2]

---

(1) सोबती कृष्णा, "डार से बिछुड़ी", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001, पृ. सं. 02

(2) सोबती कृष्णा, "डार से बिछुड़ी", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001, पृ. सं. 19

कहीं-कहीं हमें समाज के विचारों की अनुभूति भी उनके उपन्यासों से होती है क्योंकि समाज का स्वरूप चित्रण हमें लेखकों के विचारों से ही प्राप्त होता है, वह सही ही होता है क्योंकि लेखक कभी-कभी स्वयं के जीवन पर घटित घटनाओं को भी उपन्यासों में ही भर देता है । अत: उपन्यास की स्थिति का चित्रण सही हो जाता है ।

''कुछ देर ढ़िढाई से नानी की ओर ताकती रही, फिर उसकी झोली में मुंह दिखाकर बिमुर-बिमुर रोने लगी ।''[1]

जीवन के सभी पहलू हमारे प्रत्येक की जिन्दगी में कहीं न कहीं अवश्य पुन: उपस्थित होते ही है । चाहे वह अच्छे विचारों वाले हो अथवा हमारे लिये हानिकारक हो । मृदुला जी नारी की सांगतिक और तक़दीरों वाली पीड़ा समझती है इसी प्रकार सोबती जी भी उसे अच्छी तरह जानती है इसीलिये उपन्यासों की गहराई भी इसीलिये बढ़ गई है क्योंकि वह हमारे विचारों को सहायता प्रदान करती है -

''उस रात न दीप बत्ती की न कुछ खाया-पिया, अंधेरे पागर में आमने-सामने बैठे । अपनी तकदीरों के वारे-न्यारे करती रही ।''[2]

---

(1) सोबती कृष्णा, ''डार से बिछुड़ी'', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001, पृ. सं. 19
(2) सोबती कृष्णा, ''डार से बिछुड़ी'', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001, पृ. सं. 69

लेखक ने सामाजिक जीवन को हमारे सहज जीवन की दहलीज पर खड़ा किया है और नारी ने अपनी तकदीर के ताने-बाने को इस प्रकार प्रदर्शित किया है जिससे समाज का असली चेहरा हमारे सामने आ गया है। वह जानते हुये भी उसकी बात न कहकर भी कहने को मजबूर है । नारी का जीवन हमारी संस्कृति है और इस संस्कृति को यदि हम बचाकर नहीं रखेगे तो यह ठीक नहीं होगा । वह हमारी मुख्य हार होगी इसके लिए हमें चाहे बड़ी कीमत ही क्यों न चुकानी पड़े । अधिकतर ऐसा देखने में आता है कि नारी को समाज के हिसाब से चलने की आदत भी होती है क्यों न हो क्योंकि आखिरकार उसे समाज को ही जबाव भी देना होता है । समाज से सामंजस्य रखने के लिये यह भी आवश्यक है कि वह उनके द्वारा बनाये नियमों को देखे लेकिन यदि वह समाज जिसने किसी अबला को कहीं न कहीं किसी न किसी बिन्दु पर तरसाया हो वह ऐसा कदापि नहीं सोचती । लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि कुछ समाज का दर्पण धुंधलका से घिरा हुआ भी होता है । जैसे नारी को समाज की स्थिति में यदि कुछ करने का प्रयत्न करना होता है तो वह जो भी कार्य करती है वह खराब हो जाता है या कोई अपशकुन होता है, ऐसी दशा में नारी को ही दोषी माना जाता है । भले इसके पीछे कोई सामाजिक कारण या आर्थिक कारण ही क्यों न हो ।

"ये सब मेरी लिखियों के ही लेख हैं । जहाँ पॉव रखती हूँ वहीं बुरा बरत आता है । क्या पता या जिस पर शरण आऊंगी उसी पर की दुर्दशा भी देख लूंगी ।"(1)

कृष्णा जी ने जिस प्रकार अपनी भाषा से पाठको को अपना बना लिया है उसी भांति मृदुला जी भी पाठकों को अपनी लेखनी के जादू से अपनी ओर कर चुकी है । ग्रामीण अंचल की भाषा जिस प्रकार हमारे दिलों को छू जाती है वैसी ही हम भाषा शैली से भी प्रकाशित होते हैं । मृदुला जी ने अपने उपन्यास "समागम" में भी इसी प्रकार के पारिवारिक सामंजस्य के नमूने प्रस्तुत किये हैं । कहीं-कहीं हमें उपन्यासों या कहानियों में अबला का करूण क्रन्दन भी सुनाई देता है ।

"रब के वास्ते मुझ अभागी को छोड़ दो .... ।" मेरे ऊपर कोई तरस नहीं आता क्या ?"(2) इस प्रकार के वैचारिक उदाहरण हमें उपन्यास को और पढ़ने को लालायित करते हैं । परिवार को आगे बढ़ाने और समाज में स्थान होने के लिए आपसी विचारों का मेलजोल अधिक आवश्यक है ।

---

(1) सोबती कृष्णा, "डार से बिछुड़ी", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001, पृ. सं. 115
(2) गर्ग, मृदुला, "समागम", सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998, पृ. सं. 65

वर्तमान में लेखिकाओं द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत की स्थिति को भी स्पष्ट किया जा रहा है । उस दौरान हिन्दुस्तानी महिलाओं की स्थिति, दशा और समाज के वातावरण का जीवंत चित्रण भी लेखिका मृदुला जी ने किया है । कई ऐसे उपन्यास भी जिसके माध्यम से हमें उस समय की हूकुमत, जमींदारी प्रथा आदि के बारे में संपूर्ण विवरण प्रस्तुत करती है ।

वास्तविक रूप से आज नारी जिस धरातल पर बैठी है, वह उसके आधार को जानकर उसे अपने अनुसार बनाने के लिए प्रयत्नशील है । वह चाहती है कि इस समाज का मूल क्या है ? इसके पीछे क्या वस्तु है जो हमारे लिये सारगर्भित हो सकती है, अपने प्रयत्नों के माध्यम से वह जानकर समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति समस्त नारी जाति को सुदृढ़ बनाने की कोशिश में लगी है ।

हमारे जीवन में आने वाले कई तरह के सवालों का जबाव हमें नहीं मिल पाता है, वह अनबूझे, अनकहें ही रह जाते हैं जबकि उससे जुड़ी प्रश्न–पहेलियां अनवरत् चलती रहती है । इसका कारण यह है कि विचारों का तालमेल परिवारियों से जुड़ जाता है, कार्य चलते ही रहते हैं ।

''नारी की आजादी और उसके विचारों की आजादी के मध्य कुछ समानतायें और असमानतायें तो है पर वे अस्थाई रूप से रहती है । नारी

की स्वतंत्रता की बात में मौलिकता भले ही नहीं, पर मनुष्य के बीच एक दूरी अवश्य बन रही है जो हमें खालीपन का अहसास करा रही है । भारतीय धर्म में यह खालीपन ठीक नहीं है ।''[1]

''नारी का आत्मसात कैसा होगा, क्या यह सूनापन है, सुख-साधनों के मध्य कर्म की प्रधानता भारतीयता का बोध अवश्य रहा है । लेखिकाओं के पात्र बोलते तो रहते हैं परंतु उनके विचार स्तब्ध है, मौन से लगते हैं । वे हमारे लिये अखरते हैं । चेहरे बुझे और अपनी पीड़ादायी जिन्दगी को दर्शाते हैं ।[2]

आज समाज के परिप्रेक्ष्य में नारी को सुख-सुविधायें तो भरपूर प्राप्त हुयी हैं परंतु उससे उत्पन्न मुसीबते वह सदैव झेलती ही रहती है । नारी मनुष्य की अर्द्धान्गनी होकर भी बेबस और लाचार ही प्रतीत होती है। ''जिन्दगी का जीना साथ चलने को लेकर थोड़े ही कहते है जिन्दगी जीना एक शाश्वत वरदान होता है जो हम भोगते है, यह साथ पूरे जीवन की रेखा को ही बदल सकता है, हम जो चाहते है हमेशा वैसा ही नहीं होता वरन् प्रयत्न करे तो हम उस विपरीत परिस्थिति में भी निरन्तर सुखी रह सकते हैं ।''[3]

---

(1) डॉ. गुप्ता, रामकृष्ण, ''वर्तमान कहानी के बदलते रंग'', शोध आलेख, वर्ष : 2003

(2) डॉ. गुप्ता, रामकृष्ण, ''नारी पात्रों का नियोजन'', शोध आलेख, वर्ष : 2000

(3) गर्ग, मृदुला, ''समागम'', सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. 112

जीवन शैली और रहन-सहन का भी हमारे जीवन रूपी जहाज पर काफी प्रभाव पड़ता है । इसके लिये हम चाहें तो परिवर्तन ला सकते हैं। परन्तु इसके लिये हमें पारस्परिक तालमेल रखना अनिवार्य होता है । हमें कई तरह के समझौते और समझबूझ रखनी होती है ।

मृदुला जी ने कथा साहित्य के माध्यम से नारी चिन्तन को अधिक दृष्टता प्रदान की है । हमें आज भी उनके उपन्यास समक्ष प्रस्तुत नाटक की भांति लगती है वे सामान्य जीवन की धरोहर और एक शैली है। उनके उपन्यास समागम में छोटे-छोटे उदाहरणों के द्वारा हमारी सोच को परिवर्तित करने का प्रयत्न किया गया है ।

''वह नदियों जैसी प्रवाहमयी व शांत गंभीर औरते जो अब भी गांव-वन सुरक्षित रखे थी । वह मेह जैसा बरसता सस्वर, स्नेह जो अकेलापन बचाये रखता था । यूं गूंगा नहीं होता था इंसानों का आपसी रिश्ता, उसके देश में बर्फ की तरह । नारी का स्नेह उदासीनता में बदल भी जाता तो अकेलेपन की सफेद चादर नहीं बिछानी पड़ती कितने रिश्ते थे, जो कायम रहते थे । कोई होता तो शून्य को पाट देता था ।''[1]

---

(1) गर्ग, मृदुला, ''समागम'' बर्फ बनी बारिश'', सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000, पृ. सं. 32

मृदुला जी ने नारी को अपने शब्दों की आवाज प्रदान की है । उन्होंने नारी को नदियों जैसी शांत स्नेहमयी बताया है और उसके संबंधों को जल व उसके आवाज की संज्ञा प्रदान की है । उन्होंने बताया है कि वह शांत है परन्तु संपूर्ण ब्रम्हाण्ड को अपने में संजोने की शक्ति रखती है। परन्तु उसका यह भाव स्नेहमयी चादर से ढका होता है ।

"समाज की मानवीय संरचना अधिक जटिल होती है । इसमें रहकर हम समाज की विविध रंग शैली को समझ सकते हैं परन्तु इसके लिये हमें वक्त लगता है । मनुष्य अपनी उलझनों में इतना व्यस्त रहता है कि उसे अपनी जिन्दगी के विभिन्न रंगों से खेलने का समय ही नहीं मिल पाता है ।"[1] समाज नारी पात्रों से कभी पृथक नहीं रह सकता है क्योंकि इसके बिना वह अधूरा ही माना जायेगा । नारी समाज के शील का दर्पण होती है, उसके प्रतिबिम्ब हमें विभिन्न कोणों से दिखलाई पड़ते हैं । नारी पात्रों के चयन में भारतीय नारी उपन्यासकारों का चिन्तन अधिक श्रेष्ठ प्रतीत होता है क्योंकि उसमें से कुछ लेखिकाओं की वह अपनी जिन्दगी का प्रतिबिम्ब है । इसी कारण से उनकी कहानियां एवं एकांकी समाज का खुला मंच सा दिखलाई देता है । नारी पात्रों के अतिरिक्त पुरूष

---

(1) डॉ. गुप्ता, रामकृष्ण, "भारतीय उपन्यासों में नारी पात्रों का चिन्तन", शोध आलेख, वर्ष : 1999

पात्र भी इसमें उतने ही हिस्सेदार होते हैं जितने की रंगमंच की प्रस्तुतियाँ। वह उसी अनुरूप अपने को ढालने की कोशिश करते हैं जिस अनुरूप समाज रूपी प्रवाह उनको ले जाने की कोशिश करता है ।

वर्तमान में समाज की स्थिति ही हमारी पीढ़ी का परिचायक होती है, इस आधार पर हम वर्तमान की कल्पना भी कर सकते हैं । परिवार और समाज के मध्य और स्त्री पुरूष के मध्य जो भी सांमजस्य रहता है वह अधिकतर समाज की दशा पर ही निर्भर करता है । हमारे प्रतिदिन के निर्णय ही हमारी वर्तमान से भविष्य की स्थिति को प्रदर्शित करते हैं । साहित्यकार साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न स्वरूपों को प्रदर्शित करने की कोशिश करता है ।

समाज में आने वाले नवीन विचारों के लिये आज की नारी का सहयोग ही प्रमुख है लेकिन क्या हम इसे अपने संपूर्ण समाज में एकीकृत करते हैं नहीं ! क्योंकि एक नारी के बढ़ते प्रभावों को देखकर समाज और उसके ठेकेदारों में जलन की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है ।''[1] इसी कारण से भी नारी को उत्पीड़ित किया जाता है । हमारी भविष्य की कल्पनाएं भी इसीलिये जीवित रहती हैं कि हम शायद अपने विचारों से फलीभूत होकर आगे बढ़ सकेंगे ।

---

(1) डॉ. गुप्ता, रामकृष्ण, ''समाज के विकास में नारी की भागीदारी'', शोध आलेख, वर्ष : 1997-98

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गर्ग, मृदुला : शहर के नाम, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष :2000
2. गर्ग, मृदुला : अनित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998.
3. गर्ग, मृदुला : चित्ताकोबरा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998.
4. गर्ग, मृदुला : उसके हिस्से की धूप, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1996
5. गर्ग, मृदुला : वंशज, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1999.
6. गर्ग, मृदुला : एक और अजनबी, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1987.
7. गर्ग, मृदुला : कठगुलाब, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000
8. गर्ग, मृदुला : मैं और मैं, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001.

9. गर्ग, मृदुला : टुकड़ा-टुकड़ा आदमी, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, वर्ष : 1995.

10. गर्ग, मृदुला : मेरे देश की मिट्टी, अहा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001.

11. डॉ. भारती, धर्मवीर : मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1990.

12. गर्ग, मृदुला : समागम, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998.

13. लक्ष्मीसागर वाष्णैय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्र. वर्ष:1973, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली.

14. सुरेश सिन्हा : हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, अशोक प्रकाशन दिल्ली 19765.

15. सुरेश सिन्हा : हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना, अशोक प्रकाशन, दिल्ली 1964.

16. शिवानी : करिए छिमा, वर्ष : 1973, शब्दकार दिल्ली.

17. शिवरानी देवी प्रेमचन्द्र : प्रेमचन्द्र, घर में, 1983, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली.

18. रमेश कुन्तल मेच : क्योंकि समय एक शब्द है, प्र.स. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

19. महादेवी : श्रृंखला की कड़ियाँ, आठवाँ वर्ष : 1977 भारतीय भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद.

20. नीरा देसाई : भारतीय समाज में नारी, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली:1982

21. डॉ. नगेन्द्र (स.) : हिन्दी साहित्य का इतिहास 1978, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.

22. गोपाल शास्त्री नेन (स.) : मनु स्मृति त.स. 1982 चौखम्भा, संस्कृत संस्थान वाराणसी.

23. अर्जुन शतपथी व मधुसूदन : जयशंकर प्रसाद, परिप्रेक्ष्य एवं परिदृश्य साहा (सं.) प्रेस 1989 पराग प्रकाशन, दिल्ली.

24. अमृत प्रीतम : रसीदी टिकट, चतुर्थ वर्ष : 1986, पराग प्रकाशन, दिल्ली.

25. नीलम गोयल : स्वातंत्रोत्तर हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अलगाव, प्र. वर्ष : 1987, गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर.

26. इन्द्रनाथ मदान : 'आधुनिकता' - पराग प्रकाशन, दिल्ली.

27. अवधेश : स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी नाटक, विचार तत्व, नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली.

28. अनिल गोयल : हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली :1985.

29. शशिभूषण सिंहल : हिन्दी उपन्यास : यात्रा गाथा, 1964, ऋषभचरण जैन एवं संतति, दिल्ली.

30. शशिभूषण सिंहल : हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, 1988 विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

31. शशिभूषण सिंहल : उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा 1909, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली.

32. बीनू भगत, छाया मेखल : (अज्ञेय के दो असमाप्त उपन्यास) प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष : 2000

33. मृणाल पाण्डे : रास्तो पर भटकते हुए राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली, वर्ष : 2000

34. कृष्णा सोबती : डार से बिछुड़ी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2001

35. चित्रा मुदगल : केंचुल, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष : 2001

36. महाश्वेता देवी : क्षुधा, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष : 2001

37. उषा प्रियंवदा : एक कोई दूसरा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, वर्ष : 2000

38. मालती जोशी : औरत एक रात है, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष : 2001

39. मालती जोशी : बोल री कठपुतली, किताबघर, नयी दिल्ली, वर्ष : 1998

40. पत्र-पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र

: राजस्थान पत्रिका

: दैनिक भास्कर

: केसरी

: लोकमत

: दैनिक स्वदेश

: मानसमंथन

: कादम्बिनी

: साक्षात्कार